सप्त-रश्मि

लेखक की अन्य कृतियाँ

कर्तव्य
हर्ष
प्रकाश
सिद्धान्त स्वातंत्र्य
स्पर्द्धा
नाट्य कला मीमांसा

सप्त-रश्मि

[सात एकांकी नाटकों का एक संग्रह]

लेखक

गोविन्ददास

किताबिस्तान

इलाहाबाद

प्रथम प्रकाशन १९४१

मुद्रक—जे० के० शर्मा
इलाहाबाद लॉ जर्नल प्रेस, इलाहाबाद
प्रकाशक—किताबिस्तान, इलाहाबाद

सूची

The best of all is मैत्री.
Read it by to
comment upon the
advice given in this
short drama.
[illegible signature]

धोखेबाज़

पात्र, स्थान

मुख्य पात्र—

(१) दानमल—एक व्यापारी

(२) रूपचन्द—दानमल का मुनीम

(३) कैलाशचन्द्र—एक खान वाला

(४) नीलरतन—एक राइस मिल वाला

(५) मुमताजुद्दीन—एक मकान वाला

(६) लखमीदास } दानमल के मित्र
(७) कालीचरण }

स्थान—कलकत्ता

धोखेबाज़

पहला दृश्य

स्थान—दानमल का आफ़िस

समय—प्रातःकाल

[तीनों तरफ़ लकड़ी के पार्टीशन की दीवालें हैं जिनमें ऊपर की तरफ़ कांच लगे हैं। पीछे की दीवाल में कोई दरवाज़ा नहीं है। आसपास की दीवालों के सिरों पर एक एक छोटा सा एक पल्ले का दरवाज़ा है जो बन्द है। इन दरवाज़ों में भी ऊपर की तरफ़ कांच लगे हैं। कमरे के बीच में एक उसी तरह की पार्टीशन की दीवाल और है जिससे एक कमरे के यथार्थ में दो कमरे हो गये हैं। दोनों कमरों के बीच की पार्टीशन की दीवाल के बीच में भी एक दरवाज़ा है। यह भी बन्द है। दोनों कमरों के बीचों बीच एक एक बड़ी आफ़िस टेबिल रखी है। इन आफ़िस टेबिलों के ऊपरी भाग कांच के तख्ते से पटे हैं। उन पर लिखने पढ़ने का बेशक़ीमती सामान और स्टेशनरी सजे हैं। एक एक टाइमपीस घड़ी और एक एक घंटी भी रखी है। दाहिनी तरफ़ के कमरे की

आफ़िस टेबिल पर छः टेलीफ़ोन एक लाइन में रखे हैं और बाईं ओर के कमरे की आफ़िस टेबिल पर सिर्फ़ एक टेलीफ़ोन है। हरेक आफ़िस टेबिल के पीछे की तरफ़ गद्दीदार आफ़िस चेअर है,—जिसका मुंह सामने की तरफ़ है। हरेक आफ़िस टेबिल के सामने की ओर चार चार गद्दीदार साधारण कुर्सियां रखी हैं, इनके मुंह आफ़िस चेअर की तरफ़ हैं। बाईं ओर का कमरा खाली है दाहिने तरफ़ के कमरे में आफ़िस चेअर पर रूपचंद बैठा हुआ है। रूपचंद की उम्र करीब ४० साल की है। वह सांवले रंग और साधारण शरीर का व्यक्ति है। बाल कुछ कुछ सफ़ेद हो चले हैं। सिर पर मारवाड़ी पगड़ी बांधे और शरीर पर सफ़ेद कुरता और धोती पहने है। रूपचन्द चश्मा लगाये हुए कुछ लिख रहा है। पीछे की पार्टीशन की दीवाल के पीछे से टाइप राइटरों की खटखटाहट की धीमी आवाज़ आ रही है। दाहनी तरफ़ के दरवाज़े को खोल चपरासी का प्रवेश। चपरासी के आते ही दरवाजा आप से आप बन्द हो जाता है। चपरासी सफ़ेद रंग की वरदी पहने है। कमर में कमरपेटी है जिसपर अंग्रेज़ी में लिखा है—दानमल कंपनी। चपरासी हाथ में चांदी की तश्तरी लिये हुए है जिसमें एक विज़िटिंग कार्ड रखा है।]

रूपचन्द—(तश्तरी का कार्ड उठाकर उसे देख) भेज दो।

[चपरासी का उसी दरवाज़े से प्रस्थान। उसी दरवाज़े को खोल कैलाशचन्द्र का प्रवेश। कैलाशचन्द्र गोरे रंग का ऊंचा पूरा, मोटा ताजा आदमी है। उम्र है क़रीब पचास वर्ष। बाल आधे सफ़ेद हो गये हैं। काले रंग की शेरवानी और चूड़ीदार पाजामा पहने हैं। सिर पर फ़ैल्ट कैप लगाये है। कैलाशचन्द्र को देखकर रूपचन्द खड़े हो उससे हाथ मिलाता है। रूपचन्द अपनी कुर्सी पर और कैलाशचन्द्र सामने की एक कुरसी पर बैठता है।]

रूपचन्द—(टाइमपीस घड़ी देखते हुए मुस्करा कर) आप ठीक टाइम पर आये।

कैलाशचन्द्र—कलकत्ते में टाइम कितनी बहुमूल्य वस्तु है इसे मैं जानता हूँ, मुनीम जी।

रूपचन्द—मैंने सेठ साहब से बातें कर ली हैं।

कैलाशचन्द्र—बहुत अच्छा।

रूपचन्द—उन्होंने आपकी माइन्स लेना स्वीकार कर लिया है।

कैलाशचन्द्र—(अत्यन्त प्रसन्नता से) यह आपकी कृपा के कारण।

रूपचन्द—नहीं, कैलाशचन्द्र जी, एक तो वे यों ही उदार हृदय के मनुष्य हैं, दूसरे लड़ाई की इस तेजी में उन्होंने इतना रुपया कमाया है कि उनकी समझ में नहीं आता कि उसे कहाँ लगावें।

कैलाशचन्द्र—मैंने आपसे एक प्रार्थना और की थी कि मुझे इस समय रुपये की अत्यधिक आवश्यकता है।

रूपचन्द—हाँ, उसके संबन्ध में भी मैंने उनसे निवेदन कर दिया है। आप माइन्स उनके नाम ट्रान्सफ़र करने की उचित कारर‌वाई कीजिए आपको पन्द्रह दिनों का एक लाख रुपये का पोस्टडेटेड चैक आज दे दिया जायगा।

कैलाशचन्द्र—**(अत्यन्त प्रसन्न होकर)** मैं किन शब्दों में आपको धन्यवाद दूं, यह मेरी समझ में नहीं आता, मुनीम जी। **(जेब से हजार रुपये के पाँच नोट निकाल कर टेबिल पर रखता है।)**

रूपचन्द—इसकी इस समय आवश्यकता नहीं है।

कैलाशचन्द्र—आप मुझे एक लाख रुपये का पोस्ट-डेटेड चैक दिलावें और मैं यह छोटी सी सेवा भी न करूँ। दस हजार चैक सिकरने पर भेंट करूँगा।

रूपचन्द—**(नोट उठाकर जेब में रखते हुए)** इच्छा आपकी। **(कुछ रुककर)** क्यों, कैलाशचन्द्र जी, माइन्स के ओर में जितना परसैन्ट तांबा, चाँदी और सोना रिपोर्ट्स में लिखा है, वह तो बराबर है न ?

कैलाशचन्द्र—एक्सपर्ट्स की सारी रिपोर्ट्स आप देख चुके हैं। हिन्दुस्थान के ही नहीं विलायत तक के एक्सपर्ट्स की रिपोर्टें हैं।

रूपचन्द—**(मुस्कराकर)** एक्सपर्ट्स की रिपोर्ट !

कैलाशचन्द्र जी, ये रिपोर्टें कैसे मिल जाती हैं, यह तो आप और मैं दोनों अच्छी तरह जानते हैं।

[रूपचन्द जोर से हँसता है। कैलाशचन्द्र भी हँसने में साथ देता है। चपरासी का तश्तरी में दूसरा विज़िटिंग कार्ड लिये हुए प्रवेश।]

रूपचन्द—(कार्ड को देखकर) विज़िटर्स रूम में बैठाओ। मैं अभी मिलूँगा।

[चपरासी का प्रस्थान।]

रूपचन्द—अच्छा, आप विज़िटर्स रूम में ठहरिये। सेठ साहब मार्केट खुलने के कुछ पहले अवश्य आ जाते हैं। उनके आते ही मैं आपका चैक दिला दूँगा।

कैलाशचन्द्र—(खड़े होते हुए) बहुत अच्छा। अनेक धन्यवाद। **(प्रस्थान।)**

[रूपचन्द घंटी बजाता है। चपरासी का प्रवेश।]

रूपचन्द—नीलरतन बाबू को भेज दो।

[चपरासी का प्रस्थान। नीलरतन का प्रवेश। नीलरतन करीब ६० वर्ष का काले रंग का बहुत ठिगना पर अत्यन्त मोटा और कुरूप बंगाली है। सिर और मूँछों के बाल सफ़ेद हो गये हैं। वह कुरता और धोती पहने है तथा कुरते पर एक शाल ओढ़े है। रूपचन्द खड़े होकर नीलरतन से हाथ मिलाता है। रूपचन्द अपनी कुर्सी पर और नीलरतन उसके सामने की कुरसी पर बैठता है।]

रूपचन्द—बाबू, हॅमने ऑपका मॉमला में सेठ से बॉत किया। ऊनको ऑपका रॉइस मिल लेना मंजूर है।

नीलरतन—(**अत्यन्त प्रसन्नता से**) धॅन्यवॉद, मुनीम, बॅहोत बॅहोत धॅन्यवॉद। मूल्य ठो ठीक कॅर लिया ?

रूपचन्द—हाँ, सॉठ सॅहस्र टॉका, बाबू।

नीलरतन—(**और भी प्रसन्नता से**) बॅहोत ठीक, बॅहोत ठीक।

रूपचन्द—ऑप सेलडीड का प्रॉबन्ध कॅरिये। पन्द्रा दीन में सॅब हो जाय। ऑज ऑपका पॅन्द्रा दीन का पोस्टडेटेड चैक मील जॉयगा।

नीलरतन—पोस्टडेटेड चैक ! बॅहोत, बॅहोत धॅन्यवॉद, मुनीम, बॅहोत बॅहोत धॅन्यवॉद।

रूपचन्द—(**धीरे से**) ऑब हॅमारा हॅक्क ?

नीलरतन—(**दो हजार के नोट टेबिल पर रखते हुए**) हॅम घॅर से लेकर चॅला था। पाँच शॅहस्र चैक का रुपिया मिलने पॅर देगा।

रूपचन्द—(**नोट उठाकर जेब में रखते हुए**) धॅन्यवॉद बाबू। (**कुछ रुककर**) ऑपका कारखाना चॉलीस बॅरस से जॉदा पूराना तो नई न ?

नीलरतन—चॉलीस बॅरष से एक ठो मॅहीना वी जॉदा हो तो टॉका वापीश।

रूपचन्द—और मॅशीन सॅब वर्किंग आर्डर में है न ?

नीलरतन—वीलकुल ठो वंकिंग ऑर्डर में।

[चपरासी का फिर तश्तरी में एक विज़िटिंग कार्ड लेकर प्रवेश। रूपचन्द कार्ड देखता है।]

रूपचन्द—विज़िटर्स रूम में बैठाओ। मैं अभी मिलूँगा।

[चपरासी का प्रस्थान।]

रूपचन्द—ऑछा, ऑप ऑबी विज़िटर्स रूम में बैठिये। सेठ मॉर्केट खूलने का पेले ऑ जाता है। ऊसका ऑता ही ऑपको चैक मील जॉयगा।

नीलरतन—बॅहोत ऑच्छा, मुनीम, बॅहोत ऑच्छा।

(प्रस्थान)

[रूपचन्द घंटी बजाता है। चपरासी का प्रवेश।]

रूपचन्द—मुमताजुद्दीन साहब को भेज दो।

[चपरासी का प्रस्थान। मुमताजुद्दीन का प्रवेश। मुमताजुद्दीन करीब ३५ वर्ष का गेहुएँ रंग का मनुष्य है। वह बहुत ऊँचा है, पर बहुत दुबला है। सिर और दाढ़ी-मूछों के बाल काले हैं। वह शेरवानी और ढीला पाजामा पहने है। सिर पर लाल तुर्की टोपी लगाये है। रूपचन्द खड़े होकर उससे हाथ मिलाता है। रूपचन्द अपनी कुरसी पर और मुमताजुद्दीन उसके सामने की कुरसी पर बैठता है।]

रूपचन्द—आपके मकान का सौदा पट जायगा, जनाब।

मुमताजुद्दीन—नवाज़िश है, हुज़ूर की। सेठ साहब से गुफ़्तगू हो गई?

रूपचन्द—जी हाँ, सारा मामला तय हो गया। क़ीमत अस्सी हज़ार आपको मंज़ूर है न?

मुमताजुद्दीन—हालाँ कि जायदाद इससे कहीं ज़्यादा की है, लेकिन......

रूपचन्द—**(बीच ही में त्योरी बदल कर)** क्या कहा, जायदाद ज़्यादा......

मुमताजुद्दीन—**(एकदम नरमी से)** गुस्ताख़ी मुआफ़ फ़रमाइए। मुझे अस्सी हज़ार मंज़ूर है।

रूपचन्द—मकान तो वही चीतपुर रोड के कोने वाला ही है न?

मुमताजुद्दीन—जी हाँ, आपने तो शायद देखा भी है?

रूपचन्द—हाँ, देखा है, शायद, ईस्ट इंडिया कंपनी के वक़्त का बना हुआ है।

मुमताजुद्दीन—क्या फ़र्मा रहे हैं, सरकार, अभी पचास साल पुराना भी न होगा।

रूपचन्द—ख़ैर। बयाने का दस हज़ार का चैक आपको आज दे दिया जायगा।

मुमताजुद्दीन—**(प्रसन्नता से)** मैं अज़हद शुक्रगुज़ार हूँ।

रूपचन्द—**(कुछ विचारते हुए)** पन्द्रह रोज़ में तो मकान का नक़्शा वग़ैरह बनकर बयनामा लिखा जा सकता है न?

मुमताजुद्दीन—बड़ी ख़ुशी से।

रूपचन्द—तो देखिये, बाक़ी रुपये का पन्द्रह दिन का पोस्टडेटेड चैक भी आपको आज ही दिया जा सकता है, बशर्ते ......(चुप हो जाता है।)

मुमताजुद्दीन—बशर्ते हुज़ूर ?

रूपचन्द—(त्योरी बदल कर) आप तो अजीबो ग़रीब आदमी मालूम होते हैं। बिज़नेस किस चिड़िया का नाम है यह भी शायद नहीं जानते।

मुमताजुद्दीन—(सिटपिटाकर) हुज़ूर....हुज़ूर...

रूपचन्द—अजी हुज़ूर, हुज़ूर क्या ? दो सौ साल पुराना मकान, बीस हज़ार का भी न होगा, बिक रहा है, अस्सी हज़ार में। दस हज़ार बयाने में मिल रहे हैं और बाक़ी रक़म का पोस्टडेटेड चैक। और फिर भी आप कुछ नहीं समझते।

मुमताजुद्दीन—ओ ! मैं सरकार की हर तरह से खिदमत करने को......

रूपचन्द—ज़रा धीरे बोलिये, जनाब।

मुमताजुद्दीन—(डरते डरते) खता मुआफ़।

रूपचन्द—(धीरे धीरे) देखिये, ये दस हज़ार रुपये जो बयाने में मिल रहे हैं कुल के कुल आपको मुझे देने होंगे।

मुमताजुद्दीन—(घबड़ाकर) हुज़ूर......

रूपचन्द—आप तो ऐसे घबड़ा गये, जैसे मैं ज़बर्दस्ती आपको लूट रहा होऊँ। आपको मंज़ूर न हो तो यह मामला तय नहीं पा सकता।

मुमताजुद्दीन—(**और भी घबड़ाकर**) नहीं, नहीं, सरकार, जो भी हुज़ूर हुक्म देंगे, बन्दा सर आँखों से उसकी तामील करेगा।

रूपचन्द—अच्छी बात है। दस हज़ार का चैक आपको आज की तारीख़ का मिलेगा और सत्तर हज़ार का पन्द्रह दिनों का पोस्टडेटेड। आज चैक का रुपया मिलते ही रात को मेरे घर पर यह रुपया पहुँच जाय। आज यह रुपया न पहुँचा तो पन्द्रह दिनों के बाद के चैक का पेमेन्ट न होगा। और चैक का पेमेन्ट होने के बाद बीस हज़ार रुपया उसमें से आपको देना होगा।

मुमताजुद्दीन—जो हुक्म। (**कुछ रुक कर डरते डरते**) एक अर्ज़ करूँ?

रूपचन्द—(**एकदम रुखाई से**) फ़र्माइए।

मुमताजुद्दीन—(**डरते हुए धीरे धीरे**) आज के रुपये में से अगर आधा......

रूपचन्द—(**क्रोध से खड़े होते हुए**) आपका सौदा नहीं हो सकता। आदाब अर्ज़।

मुमताजुद्दीन—(**मिन्नत से**) मुआफ़ कीजिए, मुआफ़ कीजिए।

रूपचन्द—जनाब, आप तो कुँजड़ों की भटा भाजी का सा सौदा कर रहे हैं।

मुमताजुद्दीन—मुग्राफ़ी, हुजूर, मुग्राफ़ी दीजिए। मुझे सब मंजूर है।

रूपचन्द—(बैठते हुए) अच्छी बात है। आप विजिटर्स रूम में तशरीफ़ रखिये। सेठ साहब के आने पर आपको चैक मिल जायँगे।

मुमताजुद्दीन—(खड़े होते हुए) बहुत खूब।

[चपरासी का तश्तरी में एक काग़ज़ लिये हुए प्रवेश। रूपचन्द काग़ज़ देखता है।]

रूपचन्द—(मुँह बिगाड़कर) इन चन्दे माँगने वालों के मारे तो नाकों दम है। (चपरासी से) अच्छा, भेज दो, उन लोगों को।

[मुमताजुद्दीन और चपरासी का प्रस्थान। रूपचन्द टेबिल की दराज़ से चैक बुक निकालकर चैक लिखना शुरू करता है। तीन गुजरातियों का प्रवेश। एक वृद्ध है, एक अधेड़ और एक युवक। वृद्ध गुजराती ढंग की पगड़ी लगाये है और सफ़ेद कोट तथा धोती पहने है। अधेड़ काली टोपी लगाये है और कोट तथा धोती पहने है। युवक अंग्रेज़ी ढंग के कपड़ों में है। तीनों गेहुँए रंग के हैं। वृद्ध कुछ मोटा तथा ठिंगना है, शेष साधारण क़द और शरीर के हैं। तीनों व्यक्ति रूपचन्द का अभिवादन करते हैं, पर रूपचन्द अभिवादन का उत्तर भी नहीं देता, चैक लिखता रहता है। तीनों आदमी सामने की कुर्सियों पर बैठ जाते हैं और

रूपचन्द की तरफ़ देखते रहते हैं। कुछ देर निस्तब्धता रहती है।]

वृद्ध गुजराती—हम कल साँझ कूँ भी आया होता, पर आपका मुलाकात नहीं हुआ।

[रूपचन्द कोई उत्तर न देकर लिखने में संलग्न रहता है। कुछ देर निस्तब्धता रहती है।]

वृद्ध गुजराती—आज रात कूँ मेल से हम मंबई कूँ जाना चाता।

रूपचन्द—(बिना सिर उठाये हुए लिखते लिखते बड़े रूखे स्वर में) आप रात कूँ मेल से मंबई कूँ जा सकता हे।

वृद्ध—पण, मुनीम जी, हमारा जाना तो आपका शेठ पर निर्भर न? उनकूँ मिलने का वास्ते हम मंबई से आया।

रूपचन्द—(उसी प्रकार) आपसे मिलने का वास्ते हम शेठ कूँ पूछा, पण उनकूँ इस वखत बीलकुल टाइम नई।

अधेड़—मुनीम जी, मुनीम जी!

रूपचन्द—(लिखना रोककर सिर उठा) देखो, शेठ, आप सरखा चन्दा माँगने वाला का रोज बरात आता हे, बरात! समजा? इस तरा सब कूँ चन्दा दिया जाय तो भुगतान में देने कूँ रुप्या नई बचे। समजा?

युवक—क्या केते हो, मुनीम जी। इस लड़ाई में कलकत्ता ने रुप्या कमाया हे, कलकत्ता ने। मंबई से

मिलियन्स कलकत्ता आया हे। आपका शेठ ने कीतना कमाया हे ? उनके लिये फाइव टैन थाउजन्ड क्या है ?

रूपचन्द—(फिर से उसी तरह लिखते हुए) कलकत्ता ने रुप्या कमाया हे इसलिये मंबई वाला कलकत्ता वाला पर वलता हे, क्यूं ?

वृद्ध—नई, नई।

रूपचन्द—(लिखना रोककर सिर उठा ज़ोर से) कलकत्ता वाला में अक्कल होती, समजा, अक्कल होती, ईसलिए कमाया। कलकत्ता वाला में वल होता, समजा, वल होता, ईसलिए मंवई से कलकत्ता कूं रुप्या आया हे। मंवई वाला ने कलकत्ता वाला पर कोई भला कीधा हे।

वृद्ध—नई, नई।

[बाई तरफ़ के कमरे में, बाईं तरफ़ की दीवाल का दरवाजा खोलकर दानमल का प्रवेश। दानमल की अवस्था करीब ३० वर्ष की है। वह गौर वर्ण का सुन्दर युवक है। मुख पर अत्यधिक प्रसन्नता और प्राफुल्य दृष्टिगोचर होता है। क़द में वह लंबा है। शरीर न बहुत दुवला है, न बहुत मोटा। छोटी छोटी मूंछें हैं। खादी का कुरता और धोती पहने है। सिर पर गान्धी टोपी है।]

रूपचन्द—(फिर से लिखते हुए) सुनो, शेठ, आप फोकट अपना टाइम गमाते हो, और मेरा बी। आ वखत आपकूं चन्दा नई मिल सकता।

दानमल—(**बाईं ओर के कमरे से जरा जोर से**) **कौन** है, रूपचन्द ?

रूपचन्द— (**अपने कमरे में से ही कुछ जोर से**) **यों ही** कुछ फालतू लोग बंबई से चन्दा माँगने आ गये हैं।

[**दानमल दोनों कमरों के बीच का दरवाजा खोल रूपचन्द के कमरे में आता है। उसे देखकर रूपचन्द खड़ा हो अपनी कुरसी से हटता है। तीनों गुजराती भी खड़े हो जाते हैं। दानमल रूपचन्द की कुरसी पर बैठता है। तीनों गुज-राती दानमल का अभिवादन कर अपनी अपनी कुर्सियों पर बैठते हैं। दानमल नम्रता-पूर्वक अभिवादन का उत्तर देता है। रूपचन्द सामने की चौथी कुरसी पर बैठ जाता है।**]

दानमल—(**गुजरातियों से**) आप लोग बंबई से आये हैं ?

वृद्ध—जी, शेठ, मंबई की ह्यूमैनटेरियन लीग ने हमारा डेपुटेशन आपका पास भेजा है।

दानमल—इतनी दूर से पधारने का आपने कष्ट उठाया ?

वृद्ध—कष्ट की तो कोई वात ई नई, शेठ !

दानमल—कब आप लोगों का आना हुआ ?

वृद्ध—चार दिवस हो गया, शेठ !

दानमल—चार दिन !

वृद्ध—जी, शेठ !

दानमल—यहाँ और किसी ने कुछ दिया ?

वृद्ध—एक आदमी से हजार रुप्या मिला, शेठ, बाकी

सब केता हे आप कूँ मिले। आपके देने पीछे बाकी लोग देगा।

दानमल—अच्छा, मेरे लिये आपका काम रुका है?

वृद्ध—जी, शेठ!

दानमल—मुझसे आप कितना चाहते हैं?

वृद्ध—**(नम्रता से मुस्कराकर)** हम लोग तो बोत उम्मेद से आया हे, शेठ, आपका जितना रजा हो।

दानमल—फिर भी, अपनी इच्छा तो बताइए।

[वृद्ध अपने साथियों की ओर देखता है।]

अधेड़—कमसे कम दस हजार तो दो, शेठ!

दानमल—(मुस्कराकर) कमसे कम दस हजार!

युवक—**(मुस्कराकर)** जी, शेठ।

दानमल—**(रूपचन्द से)** मुनीम जी, इनको ग्यारह हजार एक सौ ग्यारह का चैक लिख दीजिये।

वृद्ध—**(प्रसन्न होकर)** धन्यवाद शेठ, धन्यवाद।

अधेड़—**(प्रसन्नता से)** बोत बोत, धन्यवाद।

युवक—**(प्रसन्नता से)** मैनी मैनी थेंक्स।

दानमल—(खड़े होते हुए) और कोई आज्ञा?

[सब लोग खड़े हो जाते हैं।]

वृद्ध—आपने सब कुछ कर दिया, शेठ।

[दानमल अपने कमरे में जाकर अपनी आफ़िस चेअर पर बैठता है। रूपचन्द अपने कमरे में अपनी कुरसी पर

बैठता है। तीनों गुजराती अपनी अपनी कुरसियों पर बैठ जाते हैं।]

रूपचन्द—(रुखाई से) आप लोग विजिटर्स रूम में ठेरिए। थोड़ा देर में चेक आप कूं पोंच जायगा।

वृद्ध—बोत अच्छा।

[तीनों खड़े होते हैं और अभिवादन कर दाहिनी तरफ़ के दरवाजे से बाहर जाते हैं। इस बार रूपचन्द इनके अभिवादन का उत्तर देता है। रूपचन्द चैक बुक में एक चैक और लिखकर दानमल के कमरे में जाता है और दानमल के सामने की एक कुरसी पर बैठता है।]

दानमल—क्या भाव बन्द हुआ, पाट?

रूपचन्द—साढ़े बानवे।

दानमल—और हैसियन?

रूपचन्द—पौने अठारह।

दानमल—सबेरे कुछ सौदा किया?

रूपचन्द—हाँ, दस हजार गाँठ पाट की ली और पाँच लाख हैसियन।

दानमल—क्यों, कोई खबर मिली क्या?

रूपचन्द—पक्की खबर।

दानमल—क्या खबर मिली?

रूपचन्द—नीचे के भाव इस सप्ताह में अवश्य बंध जायँगे।

दानमल—यह खबर तो बहुत दिन से उड़ रही है।

रूपचन्द—आज तो मैं खुद उनसे मिलकर आया हूँ।

दानमल—खुद से ?

रूपचन्द—हाँ, हाँ, खुद से।

दानमल—क्या भाव बँधेंगे ?

रूपचन्द—पाट का पच्चानवे और हेसियन का अठारह।

दानमल—पक्का ?

रूपचन्द—बिलकुल। आज उस पार्टी ने बहुत गाँठें पोते की हैं, हेसियन भी बहुत लिया है।

दानमल—अब अपने यहाँ कितनी गाँठें पाट और कितना हेसियन पोते हैं ?

रूपचन्द—(विचारते हुए) कोई पचास हजार गाँठ पाट और तीन करोड़ हेसियन होगा। लड़ाई में तो तेजी को ही रुजगार कहना चाहिये। लड़ाई—मतलब तेजी। पिछली लड़ाई में एकदम से इतनी तेजी नहीं आई थी जितनी इस लड़ाई में आई। आज जिससे मैं मिलने गया था, वह कहता था कि पाट का भाव डेढ़ सौ हो जायगा और हेसियन का चालीस।

दानमल—हाँ, सवा सौ पाट और पच्चीस हेसियन तो हो ही गया था। बात यह है कि जूट की हिन्दुस्थान को मनापली है। हवाई लड़ाई में बार बेग के बिना काम नहीं चल सकता। जब तक लड़ाई चलेगी तब तक सरकार को बार

वेग लेना ही पड़ेगा। बीच बीच में रीएक्शन बहुत से आयेंगे, पर अन्त में तेजी ही रहेगी।

[कुछ देर निस्तब्धता रहती है।]

दानमल—चन्दा का चैक लिख लिया ?

रूपचन्द—हाँ, पर आपने चन्दा बहुत दिया। जो भी माँगने आता है हरेक को आप यों ही देते हैं।

दानमल—भगवान ने धन और किस लिये दिया है, रूपचन्द ?

रूपचन्द—यह तो ठीक है, पर देखकर चलना चाहिये।

दानमल—जो देखकर चलता है उसके पास यह धन क्या सदा रहता है ? रूपचन्द, मैं तो लड़ाई के कारण इस धन्धे में पड़ा। दो महीने में ही इतना कमाया कि समझ में नहीं आता कि कहाँ लगाऊँ और इतनी कमाई क्यों हो रही है जानते हो ?

रूपचन्द—क्यों ?

दानमल—मैं स्वयं के लिये नहीं कमाना चाहता। मैं चाहता हूँ कि इस कमाई से देश की सेवा करूँ। आपस वालों की, गरीबों की भलाई करूँ। इसलिये जो संस्था भी माँगती है, जी खोल कर उसीको देता हूँ। आपस वालों की भलाई करने की भी सोच रहा हूँ। रोज़ गरीबों को भी जो हो सकता है, बाँटता हूँ। **(कुछ रुककर)** रूपचन्द, मैं साध्य को प्रधान चीज़ मानता हूँ, साधन को

गौण वस्तु। मेरा साध्य देश सेवा और गरीबों का उपकार है। लड़ाई के कारण मैंने फाटके को साधन बनाया है। और फिर, रूपचन्द, आज कलकत्ता और बंबई में जो बड़े बड़े दानी हैं, दानवीर कहे जाते हैं, सब फाटके ही से तो बने हैं।

रूपचन्द—सब फाटके से; और गई लड़ाई में ही अधिकांश बने।

दानमल—रूपचन्द, आज तो तुम्हें तीन चैक और लिखना पड़ेंगे।

रूपचन्द—किसके लिये ?

दानमल—लखमीदास, कमलाचरण और तुम्हारे लिये।

रूपचन्द—मेरे लिये भी ?

दानमल—हाँ तुम्हारे लिये भी। तुम्हारे लिये चार हज़ार का। एक नई मोटर खरीदो। लखमीदास और कमला-चरण मेरे स्कूल और कॉलेज के सहपाठी हैं। मैं दो महीने में इतना बड़ा आदमी हो गया पर वे बिचारे जैसे थे वैसे ही हैं। मैंने लखमीदास को एक बाड़ी देने कहा था और कमला-चरण को एक बगीचा।

रूपचन्द—सेठ जी !

दानमल—बोलो मत। मित्रों के ग़रीब रहते मुझे धन से आनन्द ही नहीं आता। लखमीदास ने पचपन हज़ार में बाड़ी का सौदा किया है और कमलाचरण ने पैंतालीस हज़ार में बगीचे का।

रूपचन्द—पर इतने रुपये अभी बैंक में नहीं हैं।

दानमल—दोनों प्रापर्टी के सौदे में पांच पांच हज़ार एडवान्स मनी के देना है। एडवान्स मनी के चेक आज के दे दो और बाकी के रुपये के पोस्टडेटेड।

रूपचन्द—पर आज और भी कुछ चैक देने हैं।

दानमल—किनको ?

रूपचन्द—ताँबे की माइन्स का सौदा हो गया। राइस मिल का सौदा भी पट गया। और चीतपुर रोड का मकान भी ले लिया।

दानमल—किसी तरह से प्रबन्ध करो। (मुस्कराकर) मैं जानता हूँ, तुम सब कर लोगे।

रूपचन्द—(विचार करते हुए) करना ही पड़ेगा।

दानमल—(प्रसन्नता से) हिअर स्पीक्स रूपचन्द एजेन्ट आफ़ दानमल कंपनी !

[रूपचन्द खड़े होकर टेबिल पर चैक बुक रख चार चैक और लिखता है। और फिर चैक बुक दानमल के सामने दस्तख़त के लिये रखता है।]

दानमल—(एक चैक पर दस्तख़त कर) यह तांबे की माइन्स का ?

रूपचन्द—जी। पन्द्रह दिनों का पोस्टडेटेड। इतने दिनों में कैलाशचन्द्र माइन ट्रान्सफ़र करने की सारी व्यवस्था कर लेगा।

दानमल—(**दूसरे चैंक पर दस्तख़त कर**) यह राइस मिल का ?

रूपचन्द—यह भी पन्द्रह दिनों का पोस्टडेटेड है। इतने दिनों में लिखापढ़ी इत्यादि सब हो जायगी।

दानमल—(**तीसरे चैंक पर दस्तख़त कर**) यह चीतपुर रोड के मकान का ?

रूपचन्द—जी, मकान के एडवान्स मनी का, दूसरा सत्तर हज़ार का चैक और है।

दानमल—(**चौथे चैंक पर दस्तखत कर**) यह ?

रूपचन्द—जी, यह भी पन्द्रह दिनों का पोस्टडेटेड है। इस म्याद के भीतर नक़्शा वग़ैरह बनकर सेल डीड लिख जायगा। (**कुछ रुककर**) पोस्टडेटेड चैक इसलिये दिये जाते हैं कि बेचने वाले मानते नहीं और चीज़ें सब आधे दामों से भी कम मूल्य में मिली हैं। ईश्वर की दया से पन्द्रह दिनों में अपने यहाँ बहुत रुपया आ जायगा।

दानमल—ठीक, (**पाँचवें चैंक पर दस्तख़त करते हुए**) यह चन्दे का ?

रूपचन्द—जी।

दानमल—(**चार चैंकों पर और दस्तखत करके**) ये लखमीदास और कमलाचरण के !

रूपचन्द—जी।

दानमल—और तुम्हारा ?

रूपचन्द—उसकी अभी आवश्यकता नहीं। (**चैक बुक उठाता है।**)

दानमल—लाओ, चैक बुक मुझे दो।

[**रूपचन्द चैक बुक नहीं देता। दानमल मुस्कराते हुए खड़ा होता है और चैक बुक रूपचन्द के हाथ से छीन फिर अपनी कुरसी पर बैठ चार हज़ार का चैक रूपचन्द के नाम लिखता है। रूपचंद के कमरे में टेलीफ़ोन की घंटी बजती है।**]

रूपचन्द—(**दानमल की टेबिल की घड़ी देखते हुए**) ग्यारह बजे। बाज़ार खुल गया। (**जल्दी से अपने कमरा में जाता है।**)

रूपचन्द—(**अपनी कुरसी पर बैठ कर टेलीफ़ोन का रिसीवर दाहने हाथ में उठा दाहने कान में लगा कर**) पाट खुल गयो?.....के भाव खुल्यो?.....के..... इक्कानवे। (**दूसरे फ़ोन की घंटी बजती है। उसका रिसीवर बायें हाथ से उठाकर बायें कान में लगाकर**) हैसियन खुल गयो? .....के भाव.....सत्तरा चौदा आना।....(**तीसरे फ़ोन की घंटी बजती है। बायें कान में लगे हुए रिसीवर को गर्दन टेढ़ी कर चेहरे और कन्धे के बीच में इस तरह रख लेता है जिससे रिसीवर गिरता नहीं तथा रिसीवर में सुनने की जगह कान के नज़दीक और बोलने की जगह मुंह के नज़दीक आ**

जाती है पर हाथ खाली हो जाता है। उस हाथ में तीसरा रिसीवर उठाकर बायें कान में लगा) कौन ? ....कौन ? ....रुक्मणी रमण जी, हजार गाँठ बेच दूँ।...... अच्छा। भाव इक्यानवे है। ... इक्यानवे में ही बेच दूँ ....बजार भाव बेच दूँ।...(दाहने कान में लगे हुए रिसीवर में) बेच......रुक्मणी रमण जी री हजार गाँठाँ बेच....कसने बेच। (बाँयें कान में लगे हुए रिसीवर में) कह दिया बेचने को। (दाहने कान में लगे हुए रिसीवर में) बेची ?....साढ़े नव्वे में ? इतरी नीची ! (बायें कान में लगे हुए रिसीवर में) साढ़े नव्वे में हजार गाँठ बेची। (उस रिसीवर को रख देता है। गर्दन में दबे हुए रिसीवर को बाँयें हाथ से बाँयें कान में लगाकर) के भाव...के भाव...साढ़े सत्तरा। कुण बेचू चले हैं ? ...खुदरा...खुदरा...। (उस रिसीवर को रख देता है। दाहने कान में लगे हुए रिसीवर में) के भाव...नव्वे। के बात है ? कुण बेचे हैं ? पंजाब पंचानन ? संगमरमर सदन ? संगमूसा महल ?...के भाव ?...के भाव ? ...साढ़े नुवासी। (रिसीवर रख देता है।)

[कुछ देर निस्तब्धता रहती है। फिर घंटी बजती है।]

रूपचन्द—(दाहने हाथ से रिसीवर उठाकर दाहने कान में लगाकर) के भाव...के भाव....(आश्चर्य से)

अठासी...के हुयो ? वार बैंग कैंसिल हो गयो। **(दूसरे फ़ोन की घन्टी बजती है। उसका रिसीवर बाँयें हाथ से उठाकर बाँयें कान में लगाते हुए)** के भाव...के भाव... **(आश्चर्य से)** साढ़ी सोला !

[दानमल घबड़ाकर अपने कमरे से रूपचन्द के कमरे में आता है।]

रूपचन्द—के हुयो ? वार बैंग कैंसिल हो गयो ? .... कैसे हो सके है ? ....हुयो है ? ....कुण वेचू....कुण वेचू ? ....सगला वेचू ? **(दाहने कान के रिसीवर में)** के भाव ? ...छियासी ! ....कोई लेऊई नई चाले ? ... भूकंप हो गयो।......हुयो के ? .....वार बैंग कैंसिल हो गयो ?

दानमल—**(एकदम घबड़ाकर)** क्या हुआ, रूपचन्द ?

रूपचन्द—वार बैंग कैंसिल हो गया ! सब बाजार वेचू ! कोई लेऊ नहीं।

दानमल—**(बहुत ज्यादा घबराहट से)** मैं पाट के वाड़े में जाता हूँ। **(शीघ्रता से दाहनी ओर के दरवाजे से प्रस्थान।)**

[तीसरे फ़ोन की घन्टी बजती है। रूपचन्द फिर तीनों रिसीवर उसी तरह ले लेता है जैसे पहले लिये थे।]

रूपचन्द—कौन....कौन....माधोप्रसादजी.... पाँच हजार गाँठ वेचूं ? .... **(दाहने कान वाले रिसीवर में)**

बेच, पाँच हजार गाँठाँ माधोपरसाद री.....कस ने बेच। ....(**चौथे फ़ोन की घन्टी बजती है। तीसरे फ़ोन का रिसीवर रखकर चौथे फ़ोन का रिसीवर उठा**) कौन.... कौन....अंबाप्रसाद जी, बीस लाख हैसियन बेचूँ ?.... (**बाँयें तरफ़ के रिसीवर में**) बेच अंबापरसाद री बीस लाख हैसियन...(**पाँचवें फ़ोन की घन्टी बजती है। चौथे फ़ोन का रिसीवर रखकर पाँचवें फ़ोन का रिसीवर उठाकर**) कौन....कौन....मोतीलाल जी....दो हजार गाँठ बेचूँ ?....(**दाहनी तरफ़ के रिसीवर में**) बेच, मोतीलाल री दो हजार गाँठाँ ?....(**दाहने रिसीवर में**) ....के ?....के ?....कोई लेऊ नईं....(**बाँयें रिसीवर में**) के ....कोई लेऊ नईं ?....भाव.... के भाव....साढ़े पन्द्रा....(**दाहने रिसीवर में**) के भाव ?...पोनी चोरासी .....

यवनिका-पतन

दूसरा दृश्य

स्थान—पाट का वाड़ा

समय—दोपहर

[**सारा स्थान गन्दा है। बड़ा सा हॉल है। पीछे और दाहनी तरफ़ क़तार में छोटी छोटी कोठरियाँ दिखती हैं**

जिनमें से कुछ में छोटे छोटे तख़्त बिछे हैं और कुछ में भद्दी सी कुर्सियाँ और टेबिलें रखी हैं। तख़्तों पर मैली सी बिछावन है। कई कोठरियों में तख़्तों और टेबिलों पर टेलीफ़ोन भी रखे हैं। कई कमरों के तख़्तों और कुर्सियों पर कुछ आदमी बैठे हैं। कोई कोई फ़ोन का रिसीवर उठाकर कान में लगाये हैं। कोई सुन रहा है। कोई बोल रहा है। इन दोनों क़तारों के सामने चौड़ा सा रास्ता छोड़कर लकड़ी का कटहरा लगा है। कटहरे के भीतर हॉल में काफ़ी जगह है। कटहरे के भीतर बाईं तरफ़ कई बेंचें हैं। इन बेंचों पर बहुत से आदमी खड़े हुए हैं और बेंचों के नीचे कटहरे के भीतर की ख़ाली ज़मीन पर भी बहुत भीड़ है। कोठरियों में बैठे हुए और हॉल में खड़े हुए आदमियों में ९९ फ़ी सदी मारवाड़ी हैं। कोई मारवाड़ी पगड़ी लगाये है, कोई टोपी और कोई नंगे सिर भी है। शरीर पर अधिकांश व्यक्ति कुरता और धोती पहने हैं। कोई कोई कोट भी पहने हैं और कोई कोई सिर्फ़ बनयान ही। किसी व्यक्ति की पगड़ी के पेच खुल गये हैं। किसी की टोपी अस्त व्यस्त है। जो नंगे सिर हैं उनमें से कई के बाल फैले हुए हैं। कोठरियों में बैठने वाले व्यक्तियों में कई हॉल में आते हैं और हॉल में खड़े हुए लोगों में से कई कोठरियों में जाते हैं। यह आवागमन बराबर जारी है। बाड़े के भीतर का एक भी मनुष्य पूरे होश में नहीं जान पड़ता। सभी नशेलचियों के सदृश दीख पड़ते हैं। किसी भी व्यक्ति

में धैर्य का लवलेश नहीं है। सबके हर व्यवहार में, चाहे वह बोलना हो, चिल्लाना हो, या आना जाना हो, अत्यधिक शीघ्रता और महान उद्विग्नता दृष्टिगोचर होती है। सारे बाड़े में ज़ोर का हो हल्ला मचा हुआ है। बोलते और चिल्लाते सब हैं, पर सुनने वाले बहुत कम दिखते हैं। बेंचों पर खड़े हुए व्यक्ति, जो पाट के बाड़े में 'रंगबाज़' के विशेष नाम से पुकारे जाते हैं, विचित्र जीव दीख पड़ते हैं। उनकी बोली, उनकी चिल्लाहट, उनकी हलचल, उनके सारे व्यवहार से वे मनुष्य तो नहीं कहे जा सकते। उनमें जो पगड़ी बाँधे हैं, उनमें से अधिकांश की पगड़ियाँ अत्यधिक मैली हैं तथा खुल-सी गई हैं और उनके पेंच उनके कन्धों पर इधर उधर फैले हुए हैं। उनमें जो टोपी लगाये हैं, उनमें से अधिकांश की टोपियाँ दाँयें, बाँयें, आगे, पीछे इस तरह सरक गई हैं कि उनके गिरने में थोड़ी ही कसर है। जो नंगे सिर हैं उनमें से अधिकांश के बाल बेतरह फैले हैं। कई के बालों ने तो फैलकर उनकी आँखें ही ढक ली हैं। चिल्लाने के सिवा देखने की शायद इन्हें ज़रूरत ही नहीं है। शरीर पर के कपड़े सभी के मैले हैं और पूरे बटन तो किसी के कोट या कुरते में नहीं हैं। किसी किसी के कोट में तो एक ही बटन बचा है, जिससे किसी तरह कोट शरीर पर अटका सा है। कुरतों में तो किसी किसी के एक भी बटन नहीं रहा है। रंगबाज़ बेंचों पर लंगूरों के सदृश उछल उछल कर उन्हीं के सदृश किटकिटा कर

चिल्ला रहे हैं। उनके दाहने हाथ हर उछाल में सबसे अधिक उछलते हैं और अँगूठे को छोड़ चारों उँगलियों में से कभी चार, कभी तीन, कभी दो और कभी एक के द्वारा पाट के भाव का विचित्र संकेत होता है। रंगबाज़ पसीने से लतपत हैं और दाहने हाथ के फँसे रहने के कारण बाँयें हाथ से बिना रूमाल के ही बीच बीच में अपना पसीना इस बुरी तरह से पोंछते हैं कि आसपास खड़े हुए व्यक्तियों के मुख और आँखों पर उसके छींटे पड़े बिना नहीं रहते।]

एक रंगबाज़—(दाहने हाथ की चारों उँगलियों को सामने की तरफ़ हिलाते हुए चिल्ला कर) तिरासी, तिरासी, तिरासी, तिरासी, तिरासी !

दूसरा रंगबाज़—(दाहने हाथ की तीनों उँगलियों को स्वयं अपनी तरफ़ हिलाते हुए चिल्लाकर) पोनी तिरासी, पोनी तिरासी, पोनी तिरासी, पोनी तिरासी, पोनी तिरासी !

नीचे खड़ा हुए एक व्यक्ति—बेची। ढाई सै। बेची ढाई सै।

दूसरा व्यक्ति—पाँच सै बेची। पाँच सै बेची।

तीसरा व्यक्ति—ली ढाई सै, ली पाँच सै, पोनी तिरासी में।

तीसरा, चौथा, पाँचवाँ, छठवाँ—(एक साथ चिल्लाकर) हज़ार बेची। दो हज़ार बेची। साढ़ी ब्यासी में।

सातवाँ
आठवाँ } (**एक साथ**) ली तीन हज़ार साढ़ी व्यासी में।

एक रंगबाज़
दूसरा रंगबाज़
तीसरा रंगबाज़
चौथा रंगबाज़ } (**एक साथ दाहने हाथ की दो उँगलियों को सामने की तरफ़ हिलाते हुए चिल्लाकर**) साढ़ी व्यासी, साढ़ी व्यासी, साढ़ी, साढ़ी व्यासी, साढ़ी व्यासी, साढ़ी व्यासी।

पाँचवाँ रंगबाज़—(दाहने हाथ की एक उँगली को सामने की तरफ़ हिलाते हुए चिल्लाकर) सवा व्यासी, सवा व्यासी, सवा व्यासी, सवा व्यासी, सवा व्यासी।

नीचे खड़ा हुआ एक व्यक्ति—(चिल्लाकर) बेची व्यासी में, हज़ार गाँठाँ। (**और चिल्लाकर**) बेची इक्यासी में दो हज़ार गाँठाँ। (**और चिल्लाकर**) बेची अस्सी में चार हज़ार गाँठाँ।

दूसरा व्यक्ति—ली, ली, ली, बाज़ार भाव छै हज़ार गाँठाँ।

अगणित आदमी—(एक साथ चिल्लाकर) अस्सी का बेचू! अस्सी का बेचू! अस्सी का बेचू! अस्सी का बेचू! अस्सी का बेचू!

[दानमल का शीघ्रता से प्रवेश। वह दाहनी तरफ़ की कोठरियों की क़तार में से सबसे पहली कोठरी में जाता है। अन्य कोठरियों की अपेक्षा यह कोठरी अधिक साफ़ सुथरी है। इसकी टेबिल कुर्सियाँ आदि भी दूसरी कोठरियों से

अच्छी हैं। एक कुरसी पर एक अधेड़ अवस्था का काला सा व्यक्ति, जो टोपी लगाये और कुरता तथा धोती पहने है, बैठा हुआ फ़ोन में बात कर रहा है। दानमल को देखकर वह खड़ा हो जाता है और फोन में "अस्सी का बेचू, अस्सी का बेचू!" कहकर फ़ोन का रिसीवर रख देता है। दानमल और वह दोनों बैठ जाते हैं और दोनों में बात चीत होना शुरू होती है। बाड़े में वैसा ही हल्ला रहता है, परन्तु दानमल की कोठरी बहुत नज़दीक होने के कारण इस हल्ले में भी इन लोगों की बातचीत सुन पड़ती है।]

दानमल—(घबड़ाहट से) रामलाल, यह क्या हुआ?

रामलाल—वार बैंग जो अप्रेल, मई, जून में डिलेवरी होने वाला था, उसकी डिलेवरी सितंबर तक बढ़ गई, सरकार।

दानमल—इतनी सी बात पर यह भूकंप! वार बैंग कैंसिल तो नहीं हुआ?

रामलाल—कैंसिल तो नहीं हुआ, सरकार, पर लोग तो नये वार बैंग के आर्डर की उम्मीद में थे और इसीका डिलेवरी लेना बढ़ गया।

दानमल—फिर भी, रामलाल, इतनी सी बात पर ऐसा कुलैप्स तो नहीं होना चाहिए था?

रामलाल—यह तो फाटका है, सरकार। साइकलॉजी का बजार है।

दानमल—और घटेगा ?

रामलाल—फाटका बिगड़ने के बाद भाव का सवाल ही नहीं रहता। तेज़ी में कितना भी बढ़ सकता है, मद्दी में कितना भी घट।

दानमल—(**और भी घबड़ाकर**) फिर अपना माल ?

रामलाल—मेरी समझ में तो सब बेच देना चाहिए। नुक़सान में सौदा रखना ठीक नहीं, काट देना चाहिए।

ज़ोर की आवाज़ें—इठत्तर का बेचू ! इठत्तर का बेचू ! इठत्तर का बेचू ! इठत्तर का बेचू !

दानमल—(**एकदम घबड़ाकर**) रामलाल !

रामलाल—(**ज़ोर से**) बेचिए, सरकार ! बेचिए।

दानमल—इस भाव में ?

रामलाल—(**घबड़ाकर जल्दी से**) फाटका में भाव नहीं देखा जाता, सरकार।

ज़ोर की आवाज़ें—छियत्तर का बेचू। छियत्तर का बेचू। छियत्तर का बेचू। छियत्तर का बेचू।

दानमल—(**पागलों के सदृश**) रामलाल ! रामलाल !

रामलाल—बेचिए, सरकार, बेचिए।

दानमल—(**उसी प्रकार के स्वर में**) कर ! जो तुझे दिखे सो कर।

[रामलाल दौड़ते हुए कटहरे के भीतर पहुंचता है। दानमल कुरसी पर लेट सा जाता है।]

एक रंगबाज—(दाहने हाथ की चारों उँगली सामने की तरफ़ हिलाते हुए) छियत्तर, छियत्तर, छियत्तर, छियत्तर।

रामलाल—बेची छियत्तर में पाँच हज़ार।

एक व्यक्ति—ली पाँच हज़ार छियत्तर में।

दूसरा रंगबाज
तीसरा रंगबाज
चौथा रंगबाज
पाँचवाँ रंगबाज
—(दाहने हाथ की एक साथ चारों उँगली सामने की तरफ़ हिलाते हुए) पिचत्तर, पिचत्तर, पिचत्तर, पिचत्तर, पिचत्तर।

रामलाल—बेची दस हज़ार गाँठ पिचत्तर में।

एक व्यक्ति—ली दस हज़ार पिचत्तर में।

बहुत से रंगबाज—(एक साथ दाहने हाथ की चारों उँगली सामने की तरफ़ हिलाते हुए) चोत्तर, चोत्तर, चोत्तर, चोत्तर, चोत्तर!

रामलाल—बेची दस हज़ार चोत्तर में।

बहुत से रंगबाज—(एक साथ दाहने हाथ की चारों उँगली सामने की तरफ़ हिलाते हुए) तेत्तर, तेत्तर। बात्तर, बात्तर।

अगणित आदमी—(एक साथ जोर से) बात्तर का बेचू! बात्तर का बेचू!

कुछ आदमी—(एक साथ) दानमल बेचू! दानमल बेचू!

[बड़ा कोलाहल होता है। कुछ समझ में नहीं आता।]

यवनिका-पतन

उपसंहार

स्थान—कलकत्ते की फ़ौजदारी कोर्ट

समय—दोपहर

[कोर्ट के कमरे की तीन तरफ़ की दीवालें दिखती हैं, जिनमें कई दरवाज़े और खिड़कियाँ हैं। पीछे की दीवाल पर बादशाह की एक बड़ी सी तस्वीर लगी है। तस्वीर के नीचे एक घड़ी है। पीछे की दीवाल से लगा हुआ एक ऊँचा प्लेटफ़ार्म है। उस पर दरी और दरी पर क़ालीन। उस पर मजिस्ट्रेट की ऊँची कुरसी है। कुरसी के सामने राइटिंग टेबिल है, जिसपर लिखने पढ़ने का सामान, स्टेशनरी और कई फ़ाइल रखे हैं। ऊँचे प्लेटफ़ार्म के नीचे एक और प्लेटफ़ार्म है, उस पर मेज़ें लगी हैं। मेज़ों के एक तरफ़ सिरिश्तेदार और दूसरी ओर अदालत के और अहलकारों की कुर्सियाँ हैं। कुर्सियों के सामने टेबिलें हैं और इन टेबिलों पर भी लिखने पढ़ने का सामान, स्टेशनरी और कई फ़ाइलें रखी हैं। सिरिश्तेदार के प्लेटफ़ार्म के सामने लकड़ी का कटहरा है। इस कटहरे के बाँई तरफ़ मुलज़िम के खड़े होने की जगह है। यह चारों ओर से लकड़ी के कटहरे से घिरी हुई है। इस कटहरे के सामने कुर्सियों की क़तारें और कुर्सियों के पीछे फिर कटहरा है। कटहरे के पीछे बेंचों की कई क़तारें हैं। इन कुर्सियों और

बेंचों के मुंह मजिस्ट्रेट की बैठक की ओर हैं। परदा खुलते समय कुछ चपरासियों को छोड़कर कमरे में और कोई नहीं है। ये चपरासी फ़ाइल इत्यादि ठीक कर रहे हैं। रूपचन्द, कैलाशचन्द्र, नीलरतन, मुमताजुद्दीन, लखमीदास और कमलाचरण का प्रवेश। लखमीदास और कमलाचरण दोनों की उम्र क़रीब ३० साल की है। लखमीदास सांवले और कमलाचरण गेहुएँ रंग का है। दोनों साधारण ऊँचाई और शरीर के मनुष्य हैं। दोनों के छोटी छोटी मूँछें हैं। दोनों काली टोपी, कोट और धोती पहने हुए हैं। सब लोग आपस में बात करते हुए आ रहे हैं।]

रूपचन्द—बिलकुल नियत बिगाड़ ली, बिलकुल।

[सब लोग बेंचों पर बैठ जाते हैं।]

रूपचन्द—दानमल इस तरह नियत न बिगाड़ता तो मैं आप लोगों को फ़ौजदारी में नालिश करने की कभी सलाह न देता।

लखमीदास—दस बारह लाख के लिये दानमल अपनी सात पीढ़ियों का नाम इस प्रकार डुबो देगा, यह मैं सोच ही नहीं सकता था।

कमलाचरण—फिर जब रुपया आया था, उस समय कैसी जल्दी जल्दी बैंक में रख लिया, जब गया तो उसी तरह निकालना भी था।

कैलाशचन्द्र—और यहाँ नहीं बचा था, तो देश से मँगाता।

नीलरतन—हाँ, हॅमने शुना इन दो मॉस में ऊशने वोत ठो रुपिया देश भेजा।

मुमताजुद्दीन—मैं ग़रीब तो बेमौत मर गया। रूपचन्द साहब के कहने से मैंने अपना मकान सत्तर हज़ार में रहन कर पेमेन्ट के लिये उसे रुपया दिया। उसका पोस्टडेटेड चैक! कभी कोई ख़्वाब में भी सोच सकता था कि दानमल कंपनी का चैक डिसआनर होगा।

लखमीदास—अरे, भाई, आपही का क्या, सबका यही हाल है। मैंने कानपुर में अपना मकान रहन कर उसे पेंतालीस हज़ार रुप्या भुगतान के लिये दिया था। मैंने भी यही सोचा था कि उसका पोस्टडेटेड चैक न सिकरे यह असंभव बात है।

कमलाचरण—इसी पोस्टडेटेड चैक के भरोसे पर तो मैंने भी अपना बनारस का बग़ीचा रहन कर उसे चालीस हज़ार दिया था।

कैलाशचन्द्र—और, भाई, मैंने तो इस पोस्टडेटेड चैक के इत्मीनान पर एक लाख रुपये में अपनी पत्नी के ज़ेवर रहन रखे थे।

नीलरतन—(रूमाल से अपनी आँखों के आँसू पोंछते हुए) और हॅम! हॅम तो मॅर गया हूँ, बीलकूल मॅर गॅया हूँ। मील, घॉन, चॉवल शब पर शॉठ शहस्र टॉका ऋन लेकर दॉनमॅल शेट को पोस्टडेटेड चैक पर दीया है।

रूपचन्द—ठीक, भाई, आप क्या सब मेरे भरोसे पर मरे हैं। सबने दानमल की इज़्ज़त बचाने के लिये, ठीक टाइम पर उसका भुगतान हो जाय, इस उद्देश से, उसे एक सच्चा, ईमानदार, आदमी समझकर रुपया दिया। उसे तो मैं दो ही महीने से जानता हूँ, पर उसका कुटुम्ब प्रसिद्ध कुटुम्ब था। वह भी अच्छा आदमी दिखता था। क्यों लखमीदास जी, कमलाचरण जी, आप लोग तो उसे बहुत दिनों से जानते हैं?

लखमीदास—(**बेपरवाही से**) बहुत थोड़ा। जोधपुर के स्कूल में कुछ दिन साथ रहा था।

कमलाचरण—और मेरा जयपुर के कॉलेज में।

रूपचन्द—यहाँ भी उसने आरंभ में अच्छा काम किया।

कैलाशचन्द्र—कमाया था, इसलिए।

लखमीदास—और क्या?

कमलाचरण—इसमें क्या सन्देह है?

रूपचन्द—भुगतान न करता तो न करता, दिवालिया हो जाता, पर जिन ग़रीबों से उनकी जायदादें रहन कराकर क़र्ज़ लिया उन्हें तो पटा देता।

[नीलरतन फूट फूट कर रोने लगता है। मुमताजुद्दीन रूमाल से आँखें पोंछता है।]

रूपचन्द—ओ! यह आप लोग क्या करते हैं! मुझे देखिये, मेरी तरफ़ देखिये। मुझे देखकर तो हिम्मत रखिये।

आप लोगों का तो रुपया ही गया है। मेरी तो इज़्ज़त चली गई। मैं बाज़ार में किसी को मुँह दिखाने योग्य भी नहीं रहा। ज़िन्दगी में मैंने बड़ी बड़ी जगह काम किया है, बड़े बड़े कन्सर्न्स को कन्ट्रोल किया है, पर मेरी साख कभी नहीं गई। 'जाय लाख रहे साख', पर इस दानमल ने तो मेरी साख भी खाक में मिला दी। क्या करूँ? दो ही रास्ते थे—या तो आत्महत्या कर लेता, या आप लोगों की सहायता कर इस परोपकारी काम से कुछ शान्ति लाभ करता। आत्महत्या करना तो बुज़दिली होती, इसलिये इस परोपकार पर कमर कसी। **(कुछ ठहरकर)** और देखिये, मुझे विश्वास है कि वह फ़ौजदारी में कभी जेल जाना स्वीकार न करेगा। इन सब पोस्टडेटेड चैक्स के पेमेन्ट के लिये वह देश से रुपया मँगायेगा, अवश्य......

[एक नवयुवक बैरिस्टर का प्रवेश। उसकी उम्र क़रीब ३० वर्ष की है। वह साँवले रंग का ऊँचा पूरा इकहरे शरीर का बंगाली है। अंग्रेजी लिबास में है।]

रूपचन्द—(उसे देखकर) ओ! अपने बैरिस्टर साहब आ गये।

[सब लोग उठकर उसके नजदीक जाते हैं और फिर सब आकर उसी बेंच पर बैठते हैं।]

बैरिस्टर—यू आर श्योर टु विन। यू आर श्योर टु विन।

[सिरिश्तेदार और अहलकारों का प्रवेश। सिरिश्तेदार

की उम्र क़रीब ५० वर्ष की है। वह सांवले वर्ण का ठिगना और दुबला बंगाली मुसलमान है। खिचड़ी बाल और मूछें दाढ़ी हैं। काले रंग की शेरवानी और ढीला पाजामा पहने है। सिर पर तुर्की टोपी लगाये है।]

सिरिश्तेदार—(रूपचन्दकी तरफ़ आते हुए) ओ! आप लोग आ गये?

[बैरिस्टर, रूपचन्द और उसके सब साथी खड़े हो जाते और सिरिश्तेदार को झुक झुक कर सलामें करते हैं। सिरिश्तेदार सलामों का उत्तर देता है।]

रूपचन्द—आज पहले नम्बर पर किसका मुक़दमा है, सिरिश्तेदार साहब?

[धीरे धीरे कोर्ट रूम में आदमी आने लगते हैं। और एक पुलिस सार्जेन्ट भी तमंचा लगाये कभी कमरे के अन्दर आता है और कभी बाहर जाता है।]

सिरिश्तेदार—आप ही लोगों का।

मुमताजुद्दीन—आज क्या क्या होगा, सिरिश्तेदार साहब?

सिरिश्तेदार—अब तो बहुत थोड़ा काम बाक़ी है। प्रासीक्यूशन की तरफ़ का स्टेटमेन्ट हो ही गया। (**रूपचन्द की ओर इशारा कर**) इनकी गवाही भी हो गई। आज पहले एक्यूज्ड का स्टेटमेन्ट होगा और उसने अगर अपने डिफ़ेन्स में कुछ कहा तो फिर बहस के लिये पेशी मुक़र्रर होगी; क्यों बैरिस्टर साहब?

बैरिस्टर—ऑफ़ कोर्स।

सिरिश्तेदार—लेकिन वह तो कुछ कह ही नहीं रहा है। उसने कोई कौन्सिल भी एन्गेज नहीं किया।

रूपचन्द—कहेगा वह क्या? चैक्स पर उसके दस्तखत हैं, इससे क्या वह इंकार कर सकता है? फिर (**सबकी तरफ़ इशारा कर**) इन सब ने मेरे सामने उसे कैश रुपया दिया है।

सिरिश्तेदार—हाँ, यह तो आपने अपनी गवाही में कहा ही है।

रूपचन्द—मुझे तो यक़ीन है, सिरिश्तेदार साहब, कि वह फ़ौजदारी में कभी जेल जाना मंजूर न करेगा और इन सब चैक्स का पेमेन्ट अपने मुल्क से रुपया मँगाकर करेगा।

सिरिश्तेदार—पर पेमेन्ट करने से क्या होता है, जनाब, चैक्स के पेमेन्ट करने पर भी उसे जेल तो जाना ही पड़ेगा।

लखमीदास—यह क्यों?

सिरिश्तेदार—जनाब, मुक़दमा है चीटिंग का। ताजीरात हिन्द की दफ़ा ४२० के मुताबिक़। उसने आप सबसे रुपया लेकर यह जानते हुए भी कि उसके चैक्स का पेमेन्ट न होगा, आप लोगों को धोखा देकर आपको झूठे पोस्टडेटेड चैक दिये हैं। क्यों बैरिस्टर साहब?

बैरिस्टर—ऑफ़ कोर्स। ऑफ़ कोर्स।

[नेपथ्य में 'शान्ति शान्ति' आवाज आती है। सिरिश्तेदार और अहलकार जल्दी से अपनी अपनी कुरसी के निकट जाकर खड़े हो जाते हैं। बैरिस्टर, रूपचन्द और उसके साथी अपनी बेंच के सामने अदब से खड़े हो जाते हैं। कोर्ट में अब बहुत से आदमी आ चुके हैं, इनमें कई बैरिस्टर और वकील भी हैं। सर्वसाधारण अन्य बेंचों के सामने तथा बैरिस्टर वकील लोग कुर्सियों के सामने खड़े हो जाते हैं। पुलिस सार्जेन्ट कमरे के अन्दर आकर रोब से खड़ा हो जाता है। मजिस्ट्रेट का प्रवेश। मजिस्ट्रेट की अवस्था क़रीब ४० वर्ष की है। वह गोरे रंग का ठिगना और मोटा बंगाली है। मूंछें नहीं हैं। सिर के बाल कुछ कुछ सफ़ेद हो गये हैं। वह काले रंग का बाला बरदार अँगरखा, उस पर काला ही चोगा और पतलून पहने हुए है। सिर पर गोल बंगाली पगड़ी है। मजिस्ट्रेट अपनी कुरसी पर बैठता है, सिरिश्तेदार और अहलकार भी अपनी अपनी कुर्सियों पर। रूपचन्द और उसके साथी बेंचों पर बैठते हैं। रूपचन्द का बैरिस्टर आगे बढ़कर अन्य बैरिस्टरों और वकीलों के साथ की कुर्सियों पर बैठता है। बाक़ी के लोगों में कुछ तो बेंचों पर बैठते हैं और कुछ खड़े रहते हैं। कोर्ट में निस्तब्धता छा जाती है। सिरिश्तेदार एक फ़ाइल लेकर मजिस्ट्रेट के सामने रखता है।]

मजिस्ट्रेट—(फ़ाइल देखते हुए) दानमल मुलज़िम को हाज़िर करो !

[चपरासी बाहर जाता है।]

नेपथ्य में—(ज़ोर से) दानमल मुलज़िम हाज़िर है ?

[मजिस्ट्रेट फ़ाइल देखता रहता है। कुछ ही देर में दो पुलिस कान्सटेबलों के साथ दानमल का प्रवेश। कान्स-टेबलों की वर्दी बंगाल पुलिस के समान है। दानमल का सारा रूप एकदम बदल गया है। उसका सौन्दर्य, प्रसन्नता और प्रफुल्लता न जाने कहाँ चली गई है। वह नंगे सिर है और रूखे बाल फैले हुए हैं। चेहरे पर हजामत बढ़ गई है। खादी का कुरता और धोती काफ़ी मैले हो गये हैं। पैरों के जूतों में बहुत कीचड़ लगा हुआ है। उसके एक हाथ में हथकड़ी है, जिसकी चेन एक कान्सटेबल के हाथ में है। दानमल आकर मुलज़िम के कटहरे में खड़ा हो अपने अत्यधिक उदास और उतरे हुए मुख को नीचे की तरफ़ झुका लेता है। दोनों कान्सटेबल उसके इधर उधर कटहरे के बाहर खड़े हो जाते हैं। जनसमुदाय एक टक उसकी ओर देखने लगता है।]

मजिस्ट्रेट—(दानमल की ओर देखकर) तुम जो कुछ केना चाता उसे इस आनरेब्रिल कोर्ट का सामने के सकता।

[दानमल कुछ देर उसी तरह सिर झुकाये खड़ा रहता है, कुछ नहीं कहता, फिर धीरे धीरे बोलना शुरू करता है।]

दानमल—(**उसी प्रकार सिर झुकाये हुए मानो अपने आपसे कह रहा है**) मुझ पर मुक़दमा चला है दफ़ा ४२० के अनुसार। (**कुछ रुककर**) अर्थात् मैंने चीटिंग किया है, धोखा दिया है, मैं चीट हूँ, मैं धोखेबाज़ हूँ। (**फिर कुछ ठहरकर एकाएक सिर उठाकर बड़े ऊँचे स्वर में**) मैंने धोखा दिया है! मैं धोखेबाज़ हूँ! किसे धोखा दिया? (**सिर घुमाकर कैलाशचन्द्र इत्यादि की तरफ़ देखते हुए और ज़ोर से**) कैलाशचन्द्र को? नीलरतन को? लखमीदास को? कमलाचरण को? (**एकदम आवाज़ गिर जाती है जैसे थक गया हो**) इनके गवाह हैं रूपचन्द जी! (**रुककर लंबी साँस लेता है। लंबी साँस लेते लेते ही उसका सिर फिर झुक जाता है। धीरे धीरे**) मैंने धोखा देने का यह रास्ता क्यों पकड़ा? लड़ाई के कारण? हाँ, लड़ाई के कारण। पिछली लड़ाई में लोगों ने बहुत धन कमाया था। (**फिर एकाएक सिर उठाकर ज़ोर से**) इसी कलकत्ते में न जाने कितने बने थे। (**फिर कुछ रुककर एकाएक सिर झुकाकर**) सट्टा? फाटका? हाँ, सट्टा फाटका। कितने बने इस सट्टे फाटके में? इस समय के सभी दानवीर तो। (**कुछ रुककर**) सट्टा, फाटका? सट्टा, फाटका, याने जुआ। और ये सब जुआड़ी। पर...पर...(**एकाएक सिर उठाकर ज़ोर से**) सफल जुआड़ी। (**ज़ोर से हँसकर**) धनी जुआड़ी! (**कुछ रुककर**) कौन इन जुआड़ियों का मान नहीं करता? कौन

इन धनवानों की इज़्ज़त नहीं करता ? बड़े बड़े धर्माचार्य, बड़े बड़े समाज-सेवक, बड़े बड़े राजनैतिक नेता.... अरे....सभी तो, सभी तो, इनके चारों ओर घूमते हैं। इनकी पद-वन्दना करते हैं। **(फिर एकाएक सिर झुक जाता है। कुछ रुककर धीरे धीरे)** कोई धनवान बनना चाहता है स्वयं सुख भोगने, कोई धन कमाने की इच्छा करता है नाम बढ़ाने और कोई धन के संग्रह में प्रयत्नशील होता है दूसरों की सेवा करने। **(फिर कुछ रुककर)** पहला निकृष्ट, दूसरा मध्यम और तीसरा उत्तम उद्देश्य है। **(फिर कुछ रुककर)** मेरा उद्देश्य तीसरा था। शायद दूसरा भी अन्तःकरण में छिपा हो, पर पहला कदापि नहीं। साधन था जुआ। सफल होता तो....तो....पहले सफलता मिली भी...तब...तब मेरी पद वन्दना करने वाले भी काफ़ी...काफ़ी से ज़्यादा लोग हो गये थे। मेरा मस्तिष्क भी सफलता के नशे से भर गया था। पर नहीं....अन्त में असफल हुआ। **(एकदम रुककर चेहरा एकदम नीचे झुका लेता है। कुछ देर बाद एकाएक सिर उठाकर ज़ोर से)** इन जुआड़ी—धनवानों ने, इन जुआड़ी श्रीमानों के पूजक धर्माचारियों, समाज-सेवकों, राजनैतिक नेताओं ने मेरे मन में भी, **(रुककर एकदम धीरे से)** इस छोटे से हृदय में भी महत्त्वाकांक्षा को, महत्त्वाकांक्षा को उत्पन्न किया। 'महाजनो येनगतः स पन्था' के अनुसार मैं भी उसी पथ का

पथिक होने चला, जिस पर इतने बड़े बड़े जन चले थे। **(कुछ रुककर)** पर....पर शायद साध्य से साधन को कम महत्त्व नहीं है। और सफलता?....सफलता को तो सबसे अधिक। मैं बुरे साधन द्वारा भी यदि सफल हो जाता?....पर....पर....मैं असफल....असफल हुआ....वह बुरे साधन का उपयोग कर।....**(एकदम ज़ोर से मजिस्ट्रेट की ओर देखकर)** मजिस्ट्रेट साहब, मजिस्ट्रेट साहब, आई प्लीड गिल्टी। मैं दोष स्वीकार करता हूँ। मैं गुनाह मंजूर करता हूँ। मैंने चीटिंग किया है! मैंने धोखा दिया है! मैं चीट हूँ! मैं धोखेबाज़ हूँ। **(कैलाशचन्द्र वग़ैरह की ओर देखकर)** मैंने कैलाशचन्द्र से एक लाख रुपया लिया है। मैंने नीलरतन से साठ सहस्र टाका पाया है! मुमताजुद्दीन ने मुझे सत्तर हज़ार रुपया दिया है। लखमीदास का, मेरे स्कूल के सहपाठी लखमीदास का मुझ पर पैंतालीस हज़ार रुपया पावना है। कमलाचरण, मेरे कालेज के साथी कमलाचरण ने भी मुझे चालीस हज़ार रुपये देने की कृपा की है। और **(मजिस्ट्रेट की तरफ़ देख)** और...मजिस्ट्रेट साहब, यह सब रुपया, जैसा मेरे मुनीम रूपचन्द ने अपनी गवाही में कहा, उनके सामने ....**(थकावट के कारण एकदम धीरे धीरे)** उनके सामने, मुझे कैश मिला है, भुगतान में देने के लिये। **(और धीरे)** इन सब को धोखा देने के लिये मैंने इन्हें, यह जानते हुए भी

कि ये चैक न सिकरेंगे, झूठे पोस्टडेटेड चैक दिये हैं। **(एकदम ज़ोर से मजिस्ट्रेट की तरफ़ देखकर)** दीजिए, मजिस्ट्रेट साहब, दीजिए, मुझे ऐसी सख्त...ऐसी सख्त... सज़ा दीजिए कि चाहे सारा समाज, धर्माचार्य, समाज-सेवक, और दरिद्रनारायन के झूठे, पर लक्ष्मी नारायण के सच्चे पूजक ये राजनैतिक नेता, रुपये का पूजन करें, श्रीमानों का चरण चुंबन करें, पर मेरे मन में, मेरे छोटे से हृदय में, इसकी प्राप्ति की अभिलाषा के अवशेष का अवशेष भी शेष न रहे। मजिस्ट्रेट साहब...मजिस्ट्रेट साह....

[दानमल एकाएक कटहरे में गिर पड़ता है। कान्सटेबल दौड़कर दानमल को कटहरे से उठाते हैं। कोर्ट में कुछ हल्ला मचता है।]

चपरासी—शान्ति ! शान्ति !

मजिस्ट्रेट—(ज़ोर से) कोई डाक्टर ?

[जनसमुदाय में से एक बंगाली युवक डाक्टर, जो अंग्रेज़ी वस्त्रों में है, दानमल की तरफ़ बढ़ता है। दानमल का शरीर दोनों कान्सटेबलों के हाथों में है। डाक्टर पहले उसकी नब्ज़ देखता है। फिर तेठासकोप से उसका हार्ट।]

डाक्टर—(ज़ोर से) ओ ! मूर्छा नेई ! हार्ट फ़ेल हो गिया।

[रूपचन्द और उसके साथी एक दूसरे की तरफ़

देखते हैं। कोर्ट में एकदम हल्ला मचता है।]

जनसमुदाय में का एक वृद्ध—रुपये की चोट थी।

दूसरा वृद्ध—रुपये की चोट ऐसी ही होती है।

एक युवक—(दोनों वृद्धों की तरफ़ घृणा से देखते हुए) बेवक़ूफ़!

[वह युवक शीघ्रता से दानमल की लाश के पास पहुंचता है। मजिस्ट्रेट का प्रस्थान। कान्सटेबल दानमल की लाश को धीरे धीरे कोर्ट के बाहर ले जाने लगते हैं। भीड़ उसके पीछे पीछे जाने लगती है।]

यवनिका-पतन

समाप्त

———

कंगाल नहीं

पात्र, स्थान

पात्र

राजमाता—सिलापरी गाँव की मालगुज़ारिन, राजगोंड वंश की राजमाता

बड़े राजा
मँझले राजा } राजमाता के तीन पुत्र
छोटे राजा

बड़ी रानी—बड़े राजा की पत्नी

मँझली रानी—मँझले राजा की पत्नी

राजकुमारी—राजमाता की पुत्री

स्थान—सिलापरी गाँव (ज़िला सागर, मध्यप्रान्त)

नोट—इस नाटक की कथा को मध्य प्रान्त के प्रसिद्ध पुरातत्ववेत्ता रायबहादुर हीरालाल ने लेखक को बताई थी। कथा एक सत्य घटना है।

कंगाल नहीं

स्थान—सिलापरी गाँव में राजमाता का घर

समय—सन्ध्या

[एक तरफ़ को राजमाता के घर की खपरैल परछी दिखाई देती है, जिसके कई खपरे टूट गये हैं। परछी में एक ओर घर के भीतर जाने का दरवाज़ा दिखता है, जिसके किवाड़ों की लकड़ी भी टूट गई है। यह दरवाज़ा खुला हुआ है और इसके अन्दर घर के छोटे से मैले कुचैले कोठे का एक हिस्सा दिखाई देता है। परछी के सामने मैदान है। मैदान के एक तरफ़ दूर पर गाँव के कुछ झोपड़े दिखते हैं और दूसरी तरफ़ खेत का एक हिस्सा, जिसमें छोटी छोटी बिरल सूखी सी फ़सल खड़ी है। परछी में एक फटे से बोरे पर राजमाता बैठी हैं। उनकी उम्र क़रीब ५० साल की है। रंग साँवला है। मुख और शरीर पर कुछ झुरियाँ पड़ गई हैं। बाल आधे से अधिक सफ़ेद हो गये हैं। शरीर बहुत दुबला पतला है। शरीर पर वे एक मैली सी लाल बुंदेलखंडी सूती साड़ी पहने हैं, जो कई जगह से फटी हुई है और जिसमें कई जगह थिगड़े लगे हैं। राजमाता के पास बड़ी रानी और मँझली रानी ज़मीन पर ही बैठी हुई हैं। दोनों साँवले रंग

की हैं। बड़ी रानी की उम्र क़रीब पच्चीस वर्ष और मँझली रानी की क़रीब बीस वर्ष की है। दोनों युवतियाँ होते हुए भी कृश हैं और उनकी आँखों के चारों तरफ़ के गढ़ों और सूखे ओंठों से जान पड़ता है कि उन्हें पेट भर खाने को नहीं मिलता। दोनों राजमाता के समान ही लाल रंग की साड़ियाँ पहने हैं, जो कई जगह से फटी हुई और थिगड़ैल भी हैं। दोनों के हाथों में मोटी मोटी लाख की एक एक चूड़ी है। तीनों में बातचीत हो रही है। राजमाता की आँखों में आँसू भरे हैं।]

बड़ी रानी—कहाँ तक रंज करोगी, माँ, और रंज करने से फायदा ही क्या होगा ?

राजमाता—जानती हूँ, बेटी, पर जानने से क्या होता है, जो बात रंज की है, उसपर रंज आये विना नहीं रहता।

मँझली रानी—पर, माँ, जो बात बस की नहीं, उसपर रंज करना फज़ूल है।

राजमाता—विना बस की बात ही तो जादा रंज पहुँचाती है।

[घर के भीतर से छोटे राजा और राजकुमारी हाथ में एक एक तस्वीर लिये हुए आते हैं। छोटे राजा की उम्र क़रीब बारह वर्ष की है। वह साँवले रंग और ठिगने क़द का दुबला पतला लड़का है। एक मैली और फटी सी धोती

पहने है, जो घुटने के ऊपर तक चढ़ी है। ऊपर का बदन नंगा है। राजकुमारी क़रीब ८ साल की साँवले रंग की दुबली पतली लड़की है। एक मैली सी लाल रंग की फटी हुई साड़ी पहने है। साड़ी इतनी फट गई है कि उसके शरीर का अधिकांश हिस्सा साड़ी में से दिखता है।]

छोटे राजा—माँ, (राजकुमारी की ओर इशारा कर) यह कहती है दुर्गावती ने बावन गढ़ जीते थे, मैं कहता हूँ संग्रामशाह ने। फैसला तुम करो, मैं सच्चा हूँ या ये?

राजकुमारी—हाँ, तुम फैसला कर दो, माँ।

राजमाता—बेटी, संग्रामशाह ने बावन गढ़ जीते थे, दुर्गावती ने नहीं।

छोटे राजा—देखा, मैंने पहले ही कहा था, यह वीरता आदमी कर सकता है, औरत नहीं।

[राजकुमारी उदास हो जाती है।]

राजमाता—(**राजकुमारी को उदास देखकर**) उदास हो गई, बेटी, पर हमारे कुल में तो औरतें आदमियों से कम वीर नहीं हुईं। संग्रामशाह ने बावन गढ़ जीते तो क्या हुआ, दुर्गावती उनसे कम वीर नहीं थीं।

बड़ी रानी—हाँ, संग्रामशाह ने बावनगढ़ जीतकर वीरता दिखाई तो दुर्गावती ने अपने प्रान देकर।

मँझली रानी—हाँ, जीत में वीरता दिखाना उतना कठन नहीं, जितना हार में।

[राजमाता रो पड़ती हैं ।]

बड़ी रानी—माँ, फिर वही, फिर वही ।

छोटे राजा—**(राजमाता के पास जाकर उनके निकट बैठ कर)** माँ, तुम रोती क्यों हो ? मैं संग्रामशाह से भी बड़ा बीर बनूंगा । उनने बावन गढ़ जीते थे, मैं बावन शहर जीतूंगा ।

राजकुमारी—**(राजमाता के पास जाकर)** और, माँ, मैं दुर्गावती से भी बड़ी बीर बनूंगी ।

छोटे राजा—**(संग्रामशाह की तस्वीर दिखाते हुए)** देखो, माँ, संग्रामशाह से मैं कितना मिलता जुलता हूँ । अगर तुम मेरी इस फटी धोती की जगह जैसे कपड़े ये पहने हैं, वैसे पहना दो, मुझे तलवार मँगवा दो, और ऐसा ही घोड़ा खरीद दो, तो मैं अकेला बावन शहर जीत लाऊँ ।

राजकुमारी—और, माँ, देखो, मैं दुर्गावती से कितनी मिलती हूँ । अगर तुम मुझे भी दुर्गावती जैसे कपड़े पहना दो, हथियार मँगवा दो, और जैसे हाथी पर ये बैठी हैं, वैसा हाथी मँगवा दो, तो मैं भी दुर्गावती से बड़ी बीर बन जाऊँ ।

[राजमाता के और अधिक आँसू गिरने लगते हैं ।]

बड़ी रानी—**(छोटे राजा और राजकुमारी को हाथ पकड़ कर उठाते हुए)** अच्छा, राजा जी, और, बाई जी, मेरे साथ चलो, मैं तुम दोनों की सब चीज़ें मँगा दूंगी ।

[दोनों को लेकर बड़ी रानी घर के भीतर जाती है। मँझली रानी राजमाता के निकट सरककर अपनी फटी साड़ी से राजमाता के आँसू पोंछती है। कुछ देर निस्तब्धता रहती है।]

मँझली रानी—माँ, थोड़ा तो धीरज रखो।

राजमाता—बहुत जतन करती हूँ, बेटी, धीरज रखने के बहुत जतन करती हूँ; पर जब इन बच्चों की ऐसी बातें सुनती हूँ, तब तो हिरदे में ऐसा सूल उठता है जैसा भूखे पेट और नंगे तन रहने पर भी नहीं। (कुछ ठहर कर) और, बेटी, एक बात जानती है?

मँझली रानी—क्या, माँ?

राजमाता—ये बच्चे ही इन तस्वीरों को लिये घूमते हैं और ऐसा सोचते और कहते हैं, यह नहीं, तेरे मालक और बड़ी बहू के मालक भी जब छोटे थे तब वे भी इसी तरह इन तस्वीरों को लिये घूमते और यही सब कहते फिरते थे। और वे ही नहीं, मेरे मालक, उनके बाप, और उनके बाप, और उनके बाप, सब यही सोचते और कहते थे।

मँझली रानी—आह!

[राजमाता लंबी साँस लेती हैं। कुछ देर निस्तब्धता रहती है।]

राजमाता—बेटी, संग्रामशाह और दुर्गावती को पीढ़ियाँ बीत गईं। गिरती में सब ने बढ़ती की सोची। बीती को

सोचा, भवस के लम्बे लम्बे विचार किये, पर बरतमान किसी ने न देखा और आज.... (कुछ रुककर) आज, बेटी, बावनगढ़ के विजेता संग्रामशाह के कुल को बावन छदाम भी नसीब नहीं।

[मँझले राजा का खेत की तरफ़ से प्रवेश। मँझले राजा की उम्र २२, २३ वर्ष की है। रंग साँवला और शरीर दुबला पतला तथा ठिगना है। एक मैली और फटी सी धोती को छोड़कर और कोई वस्त्र शरीर पर नहीं है। हाथ में थोड़े से गेहूँ के दाने हैं, जो बहुत पतले पड़ गये हैं। उन्हें देखकर मँझली रानी घर के भीतर चली जाती है।]

मँझले राजा—(गेहूँ के दानों को राजमाता के सामने पटक कर भर्राये हुए स्वर में) माँ, सब हार में झिरी पड़ गई। बीज निकलना भी कठन है।

राजमाता—(लम्बी साँस लेकर) तब....तब.... तो वसूली भी न होगी।

मँझले राजा—वसूली.....वसूली....माँ, लगान तो इस साल सरकार ने मुल्तवी कर दिया।

राजमाता—(एकदम घबड़ाकर खड़े होते हुए) मुल्तवी हो गई?

मँझले राजा—हाँ, माँ, आज ही हुकम आया है।

राजमाता—तो सिलापरी गाँव से जो एक सौ बीस रुपया बचते थे, वे भी न आयेंगे?

मंझले राजा—इस बरस तो नहीं, माँ।

राजमाता—फिर हम लोग क्या खायँगे, पियेंगे?

मंझले राजा—पिनसन के सरकार एक सौ बीस रुपया साल देती है न?

राजमाता—सात जीव एक सौ बीस रुपया साल में गुजर करेंगे? महीने में दस रुपये, एक जीव के लिये तीन पैसे रोज?

मंझले राजा—बड़े भाई ने एक उपाय और किया है, माँ!

राजमाता—(उत्सुकता से) क्या, बेटा?

मंझले राजा—तुम धीरज रखकर बैठो तो बताऊँ।

राजमाता—(**बैठते हुए**) जल्दी बता, बेटा, मेरा कलेजा मुंह को आ रहा है।

मंझले राजा—माँ, अकाल के कारन सरकार ने काम खोला है न?

राजमाता—हाँ, जहाँ कंगाल काम करते हैं।

मंझले राजा—पर जानती हो, माँ, उन्हें क्या मिलता है?

राजमाता—क्या?

मंझले राजा—हमसे बहुत जादा। चार रुपया महीना, एक एक को दो आने रोज।

राजमाता—अच्छा!

मंझले राजा—हम सात हैं। बड़े भाई ने अरजी दी है

कि हम सब को अकाल के काम में जगह दी जाय। माँ, वह अरजी मंजूर हो गई तो हम में से एक एक को दो दो आने रोज, सुना, दो दो आने रोज, सब को मिलाकर अट्ठाईस रुपया महीना, तीन सौ छत्तीस रुपया साल, सुना, तीन सौ छत्तीस रुपया साल मिलेगा।

[बड़े राजा का खेत की ओर से प्रवेश। वे अपने भाई से मिलते जुलते हैं। क़रीब २८ वर्ष की उम्र है। वेष-भूषा उन्हीं के सदृश है। वे अत्यन्त उदास हैं। आकर राजमाता के पास बैठ जाते हैं।]

राजमाता—बेटा, मँझला कहता था कि तूने सरकार को एक अरजी दी है?

बड़े राजा—**(लंबी साँस लेकर)** हाँ दी थी, माँ।

राजमाता—**(उत्सुकता से)** फिर क्या हुआ, बेटा, मंजूर हो गई?

बड़े राजा—नहीं।

मँझले राजा—नहीं हुई, तो हम कंगालों से भी बदतर हैं?

बड़े राजा—इसीलिए तो नहीं हुई कि हम कंगालों से कहीं बढ़कर हैं।

राजमाता—बेटा, तेरी बात समझ में नहीं आती।

बड़े राजा—माँ, हमे पिनसन मिलती है, हम महाराजाधिराज राजराजेश्वर संग्रामशाह और महारानी दुर्गावती के

कुल के हैं, हमारी बड़ी इज्जत है, हमारा बड़ा मान है, हमारी आमदनी चाहे तीन पैसा रोज ही हो, पर हमें कंगालों की रोजनदारी, दो आना रोज, कैसे मिल सकती है? हमारी भरती कंगालों में कैसे की जा सकती है?

[बड़े राजा ठठाकर हँसते हैं और लगातार हँसते रहते हैं। राजमाता के आँसू बहते हैं और मँझले राजा उद्विग्नता से बड़े राजा की ओर देखते हैं।]

यवनिका-पतन

समाप्त



वह मरा क्यों ?

पात्र, स्थान

मुख्य पात्र—

हरदत्त—कन्टूनमेन्ट बोर्ड का वाइस प्रेसीडेन्ट

कर्नल सिमसन—मिलिटरी का बड़ा डाक्टर

कैप्टिन तारासिंह—मिलिटरी का छोटा डाक्टर

स्थान—एक कन्टूनमेन्ट

वह मरा क्यों ?

पहला दृश्य

स्थान—कन्टूनमेन्ट कचहरी का एक कमरा

समय—प्रातःकाल

[कमरा आधुनिक आफ़िस के ढंग पर सजा हुआ है। राइटिंग टेबिल की आफ़िस चेअर पर हरदत्त बैठा हुआ है, उसके सामने की दो कुर्सियों पर कर्नल सिमसन और केप्टिन तारासिंह। तीनों अंग्रेजी पोशाक पहने हैं। उम्र के सब अधेड़ हैं। हरदत्त हिन्दू, सिमसन अंग्रेज और तारासिंह सिख है।]

सिमसन—वो मरा क्यों ?

तारासिंह—हाँ, वह मरा क्यों ?

हरदत्त—सचमुच वह मरा क्यों ?

तारासिंह—ग़जब हो गया, सर !

हरदत्त—सितम हो गया, हुज़ूर !

सिमसन—थर्टी फ़ाइव ईयर्स का एज में गोरा सोलजर का मरना बेशक एक टाजुब का बाट !

तारासिंह—पोस्ट मारटम में भी कोई पता नहीं लगा, सर। बैरक्स में कोई एपेडेमिक नहीं और सेनीटेशन के

इन्तज़ाम की आपने जांच करा ली।

सिमसन—कल राट टक वो बेशक आाचा ठा।

तारासिह—हाँ, सर, शाम को वैजीटेबिल मारकेट गया, स्वीटमीट शाप्स पर बैठा; और सिनेमा देखा।

सिमसन—इन सब जगा का जाँच करना होगा।

हरदत्त—तब अभी चलिए, हजूर, जिससे दोपहर के पहले जाँच खत्म हो जाय।

सिमसन—बेशक और एकडम जाना चाये। जिस टरा कमसरियट का ठेकेदार को हम लोग ने एकडम हवालाट में बन्ड कर डिया उसी टरा इन सब जगा का जाँच बी एकडम होना चाये।

तारासिह—विना खबर दिये, सर, जिससे अगर कहीं कुछ गड़बड़ हो तो वहाँ के लोग उसको ठीक न कर सकें।

सिमसन—बेशक ठीक।

[तीनों खड़े होते हैं। दृश्य बदलता है।]



दूसरा दृश्य

स्थान—कन्टूनमेन्ट का वैजीटेबिल मारकेट

समय—प्रात:काल

[मारकेट का कुछ हिस्सा दिखाई देता है जहाँ फल, साग भाजी इत्यादि की दूकानें लगी हैं। कुछ कूँजड़े और

कूंजड़िन दूकानों पर बैठे हुए हैं। कुछ ख़रीददार इधर उधर आ जा रहे हैं और कुछ खड़े होकर साग भाजी, फल इत्यादि खरीदते हैं। दूर पर हरवत्त, सिमसन और तारासिंह प्रवेश करते हुए दिखाई पड़ते हैं। ये लोग एक एक दूकान को ग़ौर से देखते हुए धीरे धीरे नजदीक आ रहे हैं। इन्हें देखकर दूकानदार खड़े हो होकर झुक झुक कर सलाम करते हैं और कई खरीददार भी। कुछ खरीददार इनका रास्ता छोड़कर अलग खड़े हो जाते हैं। सिमसन निकट की कूंजड़े की एक छोटी सी दूकान पर रुक जाता है। यह कूंजड़ा छोटे छोटे हरे रंग के कुम्हड़े बेच रहा है, जो आधे आधे कटे हुए उल्टे रखे हैं।]

सिमसन—(तारासिंह को एक तरफ़ लेकर उन कुम्हड़ों को दिखाकर धीरे से) वो क्या है?

तारासिंह—(उसी तरफ़ ग़ौर से देखते हुए) वो, सर?

सिमसन—हाँ।

तारासिंह—(कुछ सोचते हुए) कुछ ठीक समझ में नहीं आता, सर।

सिमसन—टारटाइज़ हो सकटा।

तारासिंह—टारटाइज़?

सिमसन—ेशक कच्चा टारटाइज़।

[वह कूंजड़ा इन लोगों को इस तरह ग़ौर से अपनी

तरफ़ देखते और बातें करते हुए देखकर जल्दी जल्दी अपने कुम्हड़े बाँध कर वहाँ से उठता है।]

सिमसन—ओ ! वो भागटा !

तारासिंह—(जोर से उस कुंजड़े से) ठेरो, तुम्हारे सामान की जाँच करना है।

[कुंजड़ा भागता है। तारासिंह उसके पीछे दौड़ता है। मार्केट में खलबली मच जाती है।]

सिमसन—टारटाइज़, वह वेशक टारटाइज़ है।

हरदत्त—टारटाइज़ क्या होता है, हुजूर।

सिमसन—वो जो पानी में रेटा है।

हरदत्त—पानी में.... (रुक जाता है।)

सिमसन—आप समजा नेई। (हाथ की उँगुलियां फैला फिर उन्हें सिकोड़ और फिर फैला कर) जो इस टरा अपना नेक् और फ़ीट को वार निकालटा और अन्डर डालटा और फिर वार निकालटा।

हरदत्त—कोई जानवर ?

सिमसन—वेशक जानवर। आप अबी वी नेई समजा। टारटाइज़, मिस्टर हरडट्ट, टारटाइज़। और ये डोकानडार वेशक कच्चा टारटाइज़ बेचटा ठा।

हरदत्त—(आश्चर्य से) कच्चा टारटाइज, हुजूर ?

सिमसन—वेशक कच्चा टारटाइज़, इसीलिए टो वो भागा और इसी को खाकर वो गोरा मरा।

हरदत्त—इसी को खाकर वह गोरा मरा ?

सिमसन—बेशक इसी को खाकर।

[तारासिंह कुंजड़े को पकड़कर लाता है। कुम्हड़े कुंजड़े के कपड़े में बंधे हैं।]

सिमसन—टुम टारटाइज़ बेचटा ?

कुंजड़ा—(घबड़ाकर डरते हुए) टार...टार...टार!

सिमसन—(चिल्लाकर) टार टार क्या ? बेशक कच्चा टारटाइज़ बेचटा। टोमने गोरा सोल्जर का खून किया।

कुंजड़ा—(और भी घबड़ाकर) खून !

सिमसन—बेशक खून।

कुंजड़ा—(एकदम घबड़ाकर काँपते हुए) टार.... टार....खून।

तारासिंह—टारटाइज़ माने कछुआ, समझा, कच्चा कछुआ।

कुंजड़ा—(हिम्मत से) कछुआ नहीं, हुजूर, मैं तो कुम्हड़ा बेचता हूँ।

सिमसन—टारटाइज़ को हिन्डोस्टानी में कुम्हड़ा केटा ?

कुंजड़ा—(अपनी गठरी खोलकर कुम्हड़ों को दिखाते हुए) हुजूर ये कछुए नहीं, कुम्हड़े हैं।

[सिमसन एक कुम्हड़े को हाथ में लेकर आश्चर्य से उसे इधर उधर घुमाकर देखता है। कुंजड़ा आँख मिचकाते हुए अपने एक साथी की तरफ़, तारासिंह मुंह फाड़कर सिमसन

की ओर और हरवक्त मुस्कराते हुए मुंह फेर कर एक दूसरे दूकानदार की तरफ़ देखता है। बाज़ार के कई लोग मुंह फेर फेर कर हंसते हैं।]

सिमसन—(गंभीरता से सोचते हुए) तब वो मरा क्यों?

[दृश्य बदलता है।]

तीसरा दृश्य

स्थान—बाज़ार

समय—प्रात:काल

[सड़क के एक तरफ़ दूकानें दिखाई देती हैं। ज्यादा-तर दूकानें हलवाइयों की हैं। अपनी अपनी दूकानों पर दूकानदार बैठे हैं। अनेक मनुष्य आ जा रहे हैं। कुछ लोग दूकानों पर खड़े होकर सौदा ख़रीद रहे हैं। दूर पर हरवक्त सिमसन और तारासिंह आते हुए दिखाई देते हैं। ये लोग ग़ौर से हलवाइयों की दूकानें देखते देखते नज़दीक आ रहे हैं। इन्हें देखकर कई दूकानदार खड़े हो होकर इन्हें सलामें करते हैं। कई आने जाने वाले भी खड़े हो जाते हैं और इनमें से भी कई इन्हें सलाम करते हैं। कुछ निकट आकर तीनों खड़े हो जाते हैं।]

सिमसन—(ज़ोर से) कल शाम को हमारा रेजीमेन्ट

का एक गोरा सोल्जर ने किसका डोकान का मिटाई खाया ?

[दूकानदार चकपका कर एक दूसरे की तरफ़ देखते हैं। सिमसन को बात का कोई उत्तर नहीं देता।]

सिमसन—(ज़ोर से) टुम लोग अगर नेई बटलायगा टो टुम सबका डोकान बन्ड करा डिया जायगा।

[दूकानदार फिर सब एक दूसरे को तरफ़ देखते हैं। एक समझदार सा हलवाई अपनी दूकान छोड़कर इन तीनों के पास आता है और सलाम करता है।]

सिमसन—टोमारा डोकान का खाया ?

हलवाई—किस सोल्जर ने हुज़ूर ?

सिमसन—जो राट को मर गिया ?

हलवाई—यह मैं, या हम लोगों में से कोई भी, कैसे कह सकते हैं कि उन सोल्जर साहब ने मिठाई खाई या नहीं और खाई तो किसकी दूकान से ?

सिमसन—क्यूँ ?

हलवाई—हुज़ूर, हम लोग खरीददारों के नाम तो लिखते नहीं हैं ?

सिमसन—(आश्चर्य से) नाम नेई लिखटा, टो बिल कैसा बनाटा ?

हलवाई—बिल !

सिमसन—बेशक बिल। चूआ का बिल नेई, खाना का बिल।

तारासिंह—हाँ, भाई, रुक्के पर हिसाब लिख खरीददारों को उसे देकर ही तो रुपया वसूल करते होगे ?

हलवाई—हम लोग कोई बिल नहीं बनाते, हुजूर।

सिमसन—खाने का बिल नेई बनाटा ?

हलवाई—जी, नहीं।

सिमसन—टो रुप्या कैसा लेटा ?

हलवाई—सौदा देते हैं, हुजूर, और हाथ के हाथ रुपया ले लेते हैं।

सिमसन—ओ ! टुम बेशक जानटा कि उस सोल्जर ने किसका डोकान से मिटाई खाया।

हलवाई—हुजूर, मैं बिलकुल नहीं जानता।

सिमसन—टोमारा डोकान का कल किसी सोल्जर ने मिटाई खाया ?

हलवाई—कई ने हुजूर।

सिमसन—टो जो मर गिया उसने बी बेशक टोमारा डोकान का मिटाई खाया। टोमने उसका खून किया।

हलवाई—(**घबड़ाकर**) खून !

सिमसन—बेशक खून।

हलवाई—(**और भी घबड़ाकर**) हुजूर।

सिमसन—हम टोमारा डोकान का जाँच करेगा।

[**सिमसन आगे बढ़कर उस हलवाई की दूकान की**

मिठाइयाँ देखता है। तारासिंह भी उसकी मदद करता है। हरदत्त खड़ा रहता है। बहुत से आदमी इधर उधर खड़े हो जाते हैं। बहुत से घबड़ा कर इनकी तरफ़ देखते हैं।]

सिमसन—(पिश्ते की हरी बरफ़ियों को देखकर) ये सड़ा मिटाई बेचटा ?

हलवाई—सड़ी मिठाई !

सिमसन—बेशक सड़ा मिटाई। इसी को खाने के सबब वो गोरा मर गिया।

तारासिंह—(सिमसन को एक तरफ़ लेकर धीरे से) सर, वह सड़ी मिठाई नहीं है, वह तो बड़ी बढ़िया हिन्दुस्थानी मिठाई है।

सिमसन—बरिया हिन्डोस्टानी मिटाई ?

तारासिंह—हाँ, सर, पिश्ते की बरफी।

सिमसन—(गंभीरता से सोचते हुए) तब वो मरा क्यों ?

[हरदत्त इनके निकट आता है। अधिकांश मनुष्य इनकी तरफ़ देखते हैं। दृश्य बदलता है।]

चौथा दृश्य

स्थान—सिनेमा हाल

समय—प्रातःकाल

[सिनेमा हाल का कुछ हिस्सा दिखाई देता है। एक तरफ़ के दरवाज़े, उनपर 'वेन्टीलेटर', सीलिंग से लटकते हुए बिजली के कुछ पंखे श्रौर बैठने की बेंचों की कुछ क़तारें दिखती हैं। हरदत्त, सिमसन श्रौर तारासिंह एक दरवाज़े से प्रवेश करते हैं। उनके साथ सिनेमा का मैनेजर है। वह नौजवान श्रादमी है श्रौर श्रंग्रेज़ी ढंग की पोशाक पहने है।]

सिमसन—(श्रागे श्राकर सिनेमा के मैनेजर से) टो श्राप नेई के सकटा कि वो सोल्जर किस जगा बेटा ठा ? श्रौर उसका चारों टरफ़ कोन लोग बेटा ठा ?

मैनेजर—मैं तो यह भी नहीं कह सकता कि वह सिनेमा देखने श्राया था या नहीं !

सिमसन—वो बेशक श्राया ठा, ये हम के सकटा, इसमें श्रापका नो नेई चल सकटा, नो केने से श्रापका बचट बी नेई हो सकता।

मैनेजर—बचत का सवाल नहीं है, कर्नल साहब, सवाल तो यह है कि............

सिमसन—(बीच ही में ज़ोर से) हम इस मामला पर बेहस नेई करना चाटा, हम ये जानना चाटा कि वो कहाँ बेटा ठा ? श्रौर उसका चारों टरफ़ कोन लोग ठा ?

मैनेजर—मैं इसके सिवाय श्रौर कुछ नहीं कह सकता कि सोल्जर ज्यादातर श्राठ श्राने की सीटों पर बैठते हैं। वह

आया होगा तो इसी क्लास में बैठा होगा।

सिमसन—सोल्जर्स के सिवा डूसरा लोग वी इस क्लास़ में बेटा ठा ?

मैनेजर—बहुत लोग।

सिमसन—ओ ! टो उसको किसीका कोई इन्फ़ैक्शन लगा।

मैनेजर—इन्फ़ैक्शन, कर्नल साहब ?

सिमसन—बेशक इन्फ़ैक्शन। इन्फ़ैक्शन साँस से लग सकटा। हवा एक का बॉडी को छूकर डोसरा का बॉडी छुए, उससे लग सकटा।

[कुछ देर सब चुप रहते हैं।]

सिमसन—**(कुछ सोचते हुए)** कल बोट भीर ठा ? आप झूठ नेई बोलेगा, क्यूँकि किटना आडमी ठा, इसका पटा टिकिट का बिकरी से लग जाइगा।

मैनेजर—मैं झूठ हरगिज़ नहीं बोलूँगा, कर्नल साहब, कल काफ़ी भीड़ थी।

सिमसन—टो वो भीर में सफ़ोकेट हो गिया।

मैनेजर—पर पंखे चल रहे थे, कर्नल साहब।

सिमसन—**(पंखों की तरफ़ देखकर)** सब पंखा चलटा ठा ?

मैनेजर—जी हाँ।

सिमसन—ज़ोर से ?

मैनेजर—जी हाँ, पूरी स्पीड से।

सिमसन—ओ! टो वो सरडी खा गिया।

मैनेजर—इस गरमी की मौसम में बिजली के पंखों से इतनी सरदी तो किसी को नहीं लग सकती, कर्नल साहब, कि वह सिनेमा से लौटते ही मर जाय।

सिमसन—ये आप ले मैन क्या समजटा। इन बाटों को हम डाक्टर लोग जानटा, आप नेई जानटा कि बिजली का पंखा कबी कबी केटना नोकसान पोंचाटा।

[कुछ देर सब लोग चुप रहते हैं।]

सिमसन—(कुछ सोचते हुए) कल का पिक्चर केसा ठा?

मैनेजर—अच्छा था।

सिमसन—सेनसेशनल?

मैनेजर—हाँ, काफ़ी सेनसेशनल था।

सिमसन—टो हार्ट पर उसका वेशक असर हो सकटा, उससे मर सकटा।

मैनेजर—इतना सेनसेशनल नहीं था, कर्नल साहब, कि एक सोल्जर के हार्ट पर इतना असर हो कि वह सिनेमा से लौटते ही मर जाय।

सिमसन—(कुछ सोचते हुए) अगर पिक्चर डिप्रेसिंग ठा टो उससे बी हार्ट बेशक सिक हो सकटा।

मैनेजर—(चिढ़कर) मैं क्या कहूँ।

सिमसन—(**कुछ सोचते हुए**) देखिये, मिस्टर मैनेजर, आप फ़ौरन पिक्चर का ट्रायल दीजिए।

तारासिंह—यह बिलकुल ठीक है, सर।

हरदत्त—हाँ, देखें उससे हम लोगों के दिल पर भी कैसा असर पड़ता है।

मैनेजर—बहुत अच्छा, मैं अभी ट्रायल देता हूँ।

सिमसन—बेशक, आखिर वो मरा क्यों?

[**दृश्य बदलता है।**]

पांचवाँ दृश्य

स्थान—कन्टूनमेन्ट कचहरी का एक कमरा

समय—प्रातःकाल

[कमरा पहले दृश्य वाला कमरा ही है। राइटिंग टेबिल की ऑफ़िस चेअर पर हरदत्त बैठा हुआ है। उसके सामने दस्तखत के लिये कई काग़ज़ रखे हैं। उसकी बग़ल में ऑफ़िस का हेड क्लार्क खड़ा है। क्लार्क की अवस्था क़रीब ५० वर्ष की है। पोशाक अंग्रेज़ी ढंग की है।]

हरदत्त—(**टेबिल पर रखे हुए एक काग़ज़ को देखते हुए**) तो इस आर्डर के मुताबिक़ मुझे भी चौबीस घन्टे के भीतर अपना मकान खाली करना पड़ेगा?

हेड क्लार्क—जी हाँ, सारा कन्टूनमेन्ट खाली होगा, तो आप ही अपने मकान में कैसे रहेंगे ?

हरदत्त—चौबीस घन्टे के अन्दर लोगों को म्य बीबी बच्चों के कहीं रहने का इन्तज़ाम करना है। **(बादल की गरज सुनाई पड़ती है)** यह लीजिये, बिना मौसम पानी बरसने वाला है। शायद ओले भी गिरें।

हेड क्लार्क—इससे क्या, सरकार ?

हरदत्त—और सारे कन्टूनमेन्ट को टैक्स पेयर्स के रुपये से डिसइन्फ़ैक्ट किया जायगा, बिना यह जाने कि किस बीमारी के लिये डिसइन्फ़ैक्ट किया जा रहा है। **(एक काग़ज़ पर दस्तख़त करता है, जिसे हेडक्लार्क उठाता है।)**

हेड क्लार्क—कमसरियट के ठेकेदार साहब की गिरफ़्तारी क्या यह जानकर की गई है कि उन्होंने फ़लाँ चीज़ बुरी सप्लाई की ?

हरदत्त—**(दूसरे काग़ज़ पर दस्तख़त करते हुए, जिसे हेड क्लार्क उठाता है)** और यह दूसरा आर्डर है मेहतरों को कि पैख़ाना गाड़ा न जाय, कचरा जलाया न जाय, क्योंकि उस सब की भी जाँच होगी।

हेड क्लार्क—जी हाँ।

हरदत्त—**(तीसरे काग़ज़ पर दस्तख़त करते हुए, जिसे हेड क्लार्क उठाता है)** और यह तीसरा आर्डर है बाज़ार की सारी मिठाई, और सागभाजी की ज़ब्ती का, क्योंकि

उसकी भी जाँच होगी।

हेड क्लार्क—जी, सरकार।

हरदत्त—(**लंबी साँस लेकर**) तो यह कन्टूनमेंट है, हेड क्लार्क साहब !

हेड क्लार्क—जी हाँ, और यहाँ एक गोरे की जान की क़ीमत......

[तारासिंह का शीघ्रता से प्रवेश।]

तारासिंह—(**हरदत्त की टेबिल के निकट आते हुए**) वे तीनों आर्डर अभी इश्यू तो नहीं हुए, वाइस प्रेसीडेन्ट साहब ?

हरदत्त—जी नहीं, पर मैंने अभी दस्तखत कर दिये हैं, और वे इश्यू हो ही रहे हैं।

तारासिंह—(**कुरसी पर बैठते हुए**) पर अब उनकी ज़रूरत नहीं है।

हरदत्त—(**आश्चर्य से**) यह क्यों, क्या वह गोरा जी उठा ?

तारासिंह—जी नहीं, लेकिन मालूम हो गया कि वह मरा क्यों !

हरदत्त—(**आश्चर्य से**) अच्छा !

तारासिंह—(**जेब से एक चिट्ठी निकालकर हरदत्त को देते हुए**) कर्नल सिमसन ने आपके नाम यह चिट्ठी दी है। आपको उसे पढ़कर ताज्जुब होगा कि वह मरा क्यों !

हरदत्त—(चिट्ठी लेते हुए) मैं तो इतनी अंग्रेजी जानता नहीं, आप ही बताइए, वह मरा क्यों ?

तारासिंह—(कुरसी पर टिकते हुए अत्यन्त गंभीरता से) जनाब, वह मरा है अपनी मेम साहिबा की एक खास बीमारी के एक खास इन्फ़ैक्शन से ?

हरदत्त—(आश्चर्य से चिल्लाकर) अपनी मेम साहिबा की एक खास बीमारी के एक खास इन्फ़ैक्शन से ?

हेड क्लार्क—(आश्चर्य से चिल्लाकर) अपनी मेम साहिबा की एक खास बीमारी के एक खास इन्फ़ैक्शन से ?

तारासिंह—जी हाँ, मालूम हो गया कि वह मरा क्यों ?

यवनिका-पतन

समाप्त

अधिकार-लिप्सा

पात्र, स्थान

मुख्य पात्र

राजा अयोध्यासिंह—एक जमींदार

कुमार काशीसिंह—अयोध्यासिंह का लड़का

दीवान प्रयागसिंह—अयोध्यासिंह का दीवान

डाक्टर घोष—अयोध्यासिंह का फ़ेमिली डाक्टर

राजवैद्य गंगाधर राव आयुर्वेदाचार्य—अयोध्यासिंह का वैद्य

हकीम इब्राहीम हकीमुलमुल्क—अयोध्यासिंह का हकीम

पंडित करुणाशंकर ज्योतिषाचार्य—अयोध्यासिंह का ज्योतिषी

पंडित कामरूप भट्टाचार्य—अयोध्यासिंह का तांत्रिक

सर्दार निहालसिंह—म्युनिस्पैलटी का प्रेसीडेन्ट

सेठ गिरधारीलाल—नगर का व्यापारी

स्थान—एक नगर



अधिकार-लिप्सा

उपक्रम

स्थान—राजा अयोध्यासिंह के मकान का कमरा

समय—सन्ध्या

[कमरे के तीन तरफ़ की दीवालें नीलेथूथे के रंग से हल्की नीली रंगी हुई हैं। दीवालों में कई दरवाज़े और खिड़कियां हैं, जिनके चौखट और पल्ले पुराने ढंग के लकड़ी के बने हुए हैं। इनमें से कुछ बन्द हैं और कुछ खुले। खुले दरवाज़े और खिड़कियों से बाहर के फल के दरख़्तों के बग़ीचे का कुछ हिस्सा दिखाई देता है। कई दरख़्तों में आम फले हुए हैं। बग़ीचे को डूबते हुए सूर्य की किरणें रंग रही हैं। दीवालों पर शेर, चीते, बारहसिंहे, हिरण, रणभैंसे आदि जंगली जानवरों के चमड़े सजा कर लगाये गये हैं। कई चमड़ों में जानवरों के सिर भी हैं। इन चमड़ों के बीच बीच में बन्दूक़ें, तलवारें, भाले इत्यादि हथियार सजा कर टांगे गये हैं। कमरे की छत से पुराने ढंग के मोमबत्ती के झाड़ और हंडियां झूल रहे हैं। बीचोंबीच एक हाथ-पंखा टँगा हुआ है जो बाहर से धीरे धीरे खींचा जा रहा है। कमरे की ज़मीन

पर मिरज़ापुरी क़ालीन बिछा है। क़ालीन पर पुराने ढंग की कुर्सियाँ, टेबिल इत्यादि सजी हैं। एक कुर्सी पर राजा अयोध्यासिंह बैठा हुआ है। अयोध्यासिंह की उम्र क़रीब ६५ वर्ष की है। वह ऊँचा पूरा, मोटा, गेहुएँ रंग का आदमी है। चेहरे पर अभी भी सुर्ख़ी है। सिर और मूछों के छोटे छोटे बाल सफ़ेद हो गये हैं। वह एक सफ़ेद कुरता और धोती पहने हुए है। सिर नंगा है। उसके पास ही एक चाँदी का हुक़्क़ा रखा हुआ है, जिसकी सुनहरी लंबी सटक अयोध्या-सिंह के हाथ में है। अयोध्यासिंह हुक़्क़ा पी रहा है। उसकी कुरसी के पास ही एक दूसरी कुरसी पर दीवान प्रयागसिंह बैठा हुआ है। उसकी उम्र भी अयोध्यासिंह के बराबर ही जान पड़ती है। शरीर में वह ऊँचा है, पर दुबला। रंग में साँवला है। सिर, बड़ी बड़ी मूछें और खसखसी दाढ़ी के बाल सफ़ेद हो गये हैं। वह काला अँगरखा और सफ़ेद पैजामा पहने हुए है। सिर पर कोसे का साफ़ा बाँधे है।]

अयोध्यासिंह—(हुक़्क़े का धूआँ छोड़ते हुए) जीते हुए भी में मरे से बदतर हूँ।

प्रयागसिंह—यह आप क्या कह रहे हैं, सरकार!

अयोध्यासिंह—बिलकुल ठीक कह रहा हूँ, दीवान जी, में सब समझता हूँ। में बूढ़ा हो गया, मुझे आराम चाहिए, (हुक़्क़ा गुड़गुड़ा कर) ये सब बातें मुझे फुसलाने के लिये, कही जाती हैं। असल में इन बहानों को लेकर मुझे क़ैद में

रखा गया है, मेरे अख्त्यारात छीने गये हैं।

प्रयागसिंह—लेकिन, हुजूर, इस उम्र से आपको काम की झंझटों से अलग कर आराम देना यह कुमार साहब का फ़र्ज़ है।

अयोध्यासिंह—उम्र ! उम्र से आपका क्या मतलब है, दीवान जी ? डाक्टर घोष कहते थे कि अंग्रेजों में कहावत है कि आदमी उतनी ही उम्र का माना जाना चाहिये जितना वह अपने को समझता हो और औरत उतनी ही उम्र की समझी जानी चाहिये जितनी की वह दिखती हो। **(जोर से हुक़्क़ा गुड़गुड़ा कर)** मुझे इस पैंसठवें साल में भी वैसा ही लगता है जैसा जब मैं तीस पैंतीस साल का था उस वक़्त लगता था। अगस्त मुनि का सा मेरा हाज़मा है और कुंभकर्ण की सी नींद। आज भी मैं शेर का शिकार कर सकता हूँ। देहात के दौरों में बीस मील पैदल चल सकता हूँ। लेकिन घर से बाहर निकलने पाऊँ तब तो। **(हुक़्क़े का धूआँ छोड़ते हुए)** दीवानजी, सारा मामला अख्त्यारात का है, अख्त्यारात का। कुमार साहब खुद मुखत्यार होना चाहते थे। उन्होंने मेरी उम्र, और इस उम्र में मुझे आराम मिलना चाहिये, यह बहाना ढूंढ़ लिया। मैं क़ैद में रखा गया हूँ, क़ैद में। अब कौन मुझे पूछता है ? हफ़्तों कुमार साहब तक मेरे पास नहीं आते। कौन काम मुझसे पूछ कर होता है ? आप तक को पैन्शन दे दी गई।

प्रयागसिंह—सरकार, इन बातों की तरफ़ देखें ही नहीं। अपनी तबियत सँभालें। आराम से रहें। भजन करें।

अयोध्यासिंह—देखूं ही नहीं! आँखें रहते देखूं कैसे नहीं, दीवान साहब? देखना तो तब बन्द हो सकता है जब या तो आँखें फूट जायँ या जान निकल जाय। तबियत सँभालूं! तबियत को क्या हुआ है? आराम मुझे पड़े पड़े पत्ते गिनने में नहीं मिलता और भजन करते हैं निकम्मे लोग।

प्रयागसिंह—फिर क्या किया जाय, हुजूर?

अयोध्यासिंह—**(धूआं छोड़ते हुए, कुछ ठहर कर)** दीवान जी, डाक्टर घोष कहते थे कि मेरा दिमाग़, दिल, फेफड़े सब जवानों से अच्छे हैं। राजवैद्य गंगाधर राव कहते थे कि मेरी नब्ज़ ऐसी चलती है, जैसी घोड़े की। हकीम इब्राहीम कहते थे कि अस्सी साल की उम्र तक मुझे किसी कुश्ते की ज़रूरत नहीं। **(हुक़्क़ा ज़ोर से गुड़गुड़ा कर)** ज्योतिषाचार्य करुणाशंकर जी कहते थे कि मेरे ग्रह ऐसे हैं कि कलयुग में जो एक सौ बीस साल की उम्र कही है, वह मैं पूरी पाऊँगा। और तांत्रिक कामरूप भट्टाचार्य कहते थे कि वे अपने तंत्र शास्त्र से मुझे उससे भी आगे बीस साल तक और जिन्दा रख सकते हैं।

प्रयागसिंह—इन सब बातों से ज्यादा और खुशी की क्या बात हो सकती है।

अयोध्यासिंह—दो चार साल जीना होता तो दूसरी बात

थी, जब जितने साल बीते हैं उससे ज्यादा बिताना है तो इस तरह निकम्मी ज़िन्दगी कैसे बिताऊँ? दीवान जी, घर वालों और बाहर वालों, सबसे, मुझे इस तरह निकम्मे बनाने का बदला लेने की तरकीब मैंने सोच ली है। ऐसा नुसखा है कि सारा घर हिल जायगा और तमाम शहर में तहलका मच जायगा। (हुक़्क़ा गुड़गुड़ाते हुए) कुमार साहब के सब गुलछर्रे खत्म हो ही जायँगे और कुमार साहब को घूमना पड़ेगा मेरे चारों तरफ़। शहर के जो लोग कुमार को स्वाहा स्वाहा करने के लिये उसके बैठकखाने में उसके दरबारी बने बैठे रहते हैं, उन्हें मेरी क़दमबोसी के लिये इस कमरे में हाज़िर रहना पड़ेगा। (धूआँ छोड़ते हुए) आपकी भी फिर वही पूछताछ शुरू होगी जो मेरे जमाने में थी।

प्रयागसिंह—(प्रसन्न होकर) इसकी कोई तरकीब है, हुज़ूर?

अयोध्यासिंह—हाँ हाँ, देखिये, मैं कल ही तो आपको बताता हूँ।

प्रयागसिंह—ऐसा?

अयोध्यासिंह—कल सवेरे ही उस नुस्खे की करामात देखना।

[खड़े होकर इधर उधर टहलता है। प्रयागसिंह उसके पीछे पीछे घूमता है।]

यवनिका-पतन

मुख्य दृश्य

स्थान—राजा अयोध्यासिंह के मकान का कमरा

समय—प्रातःकाल

[दृश्य वैसा ही है जैसा उपक्रम में था। फ़र्क़ इतना ही है कि कमरे के दाहनी तरफ़ एक पलंग बिछा है जिसपर गले तक एक सफ़ेद चादर ओढ़े अयोध्यासिंह लेटा है। स्वच्छ वस्त्रों में एक नौकर अयोध्यासिंह के पैर दाब रहा है। दो कुर्सियों पर काशीसिंह और प्रयागसिंह बैठे हैं। काशीसिंह की उम्र क़रीब ४० साल की है। वह ऊँचा पूरा, सुडौल शरीर का व्यक्ति है। रंग गेहुआँ है, छोटी छोटी मूंछें हैं। कपड़े अंग्रेजी ढंग के शिकारी हैं। सिर खुला हुआ है।]

काशीसिंह—मैं तो इधर एक हफ़्ते से उनको देख न सका था, पर कल शाम तक तिबयत बिलकुल ठीक थी ?

प्रयागसिंह—जी हाँ, बिलकुल ठीक। मैं ठीक तबियत छोड़कर घर गया था।

काशीसिंह—और आज इतनी खराब हो गई ?

प्रयागसिंह—क्या कहा जाय।

अयोध्यासिंह—**(कराहते हुए)** बेटा, डाक्टर साहब आये ?

काशीसिंह—**(उठकर पलंग के नज़दीक जाकर)** आते ही होंगे, पिता जी, मोटर भेजे काफ़ी देर हो गई।

अयोध्यासिंह—(कराहते हुए) जल्दी. . . .जल्दी बुला, बेटा। कहीं ऐसा न हो कि जान निकलने पर डाक्टर आवें।

काशीसिंह—(घबड़ाकर) आप क्या कहते हैं, पिता जी, पर खैर दूसरी मोटर भेजता हूँ। (जाने लगता है।)

अयोध्यासिंह—वैद्य जी, हकीम जी, ज्योतिषी जी और तांत्रिक जी को भी बुलाया है न?

काशीसिंह—(जाते जाते रुककर) हाँ, पिता जी, सबके यहाँ सवारियाँ गई हैं। (जाता है।)

अयोध्यासिंह—(प्रयागसिंह से) देखा कुमार साहब को, सब गुलछर्रे खत्म हो गये न? सवेरे शिकार को जा रहे थे। एक साल, पूरे एक साल, इस कमरे से बाहर न निकलने दूंगा।

[काशीसिंह का डाक्टर घोष के साथ प्रवेश। डाक्टर घोष क़रीब पैंतीस साल का ठिगना मोटा और साँवला मनुष्य है। अंग्रेजी पोशाक पहने है। जल्दी जल्दी पलंग के नज़दीक जाता है। काशीसिंह और प्रयागसिंह भी उसके पीछे पीछे जाते हैं।]

घोष—(पलंग के नज़दीक जाकर) गुड मॉर्निंग, राजा साहब, आप बीमार हो गिया?

[तीनों कुर्सियों पर बैठते हैं।]

अयोध्यासिंह—(कराहते हुए) ओह! ओह!

घोष—(तेठासकोप निकालते हुए) कोई खास ठो तकलीफ़ है, राजा साहब ?

अयोध्यासिंह—कुछ पूछिये मत, डाक्टर साहब। सिर फटा जाता है। कलेजा खिचा जाता है। पेट में भाले चल रहे हैं। बदन का हर जोड़ टूटा जाता है। **(करवट बदलकर बड़ी ज़ोर से कराहता है।)**

घोष—(तेठासकोप कान में लगाते हुए) आप थोड़ा सीधा ठो हो जाइगा ?

[अयोध्यासिंह सीधा हो जाता है। नौकर पैर दाबना छोड़कर एक तरफ़ खड़ा हो जाता है। डाक्टर चादर उठा कर कुरता ऊँचा करके तेठासकोप से छाती देखता है। राजवैद्य गंगाधर राव का प्रवेश। गंगाधर राव की उम्र क़रीब ४५ वर्ष की है। वह साधारण क़द और शरीर का मनुष्य है। सफ़ेद अँगरखा और धोती पहने है। सिर पर मराठी पगड़ी लगाये है। उसे देखकर काशीसिंह उसके नज़दीक आता है। दोनों एक दूसरे को हाथ जोड़ते हैं।]

काशीसिंह—पिता जी की तबियत एकदम बहुत बिगड़ गई, महाराज।

गंगाधर राव—(हाथ हिलाते हुए) यह अस्वस्थता अवश्यमेव विलक्षण संवाद आहे। द्वय दिवस पूर्व हमारी भेंट हुई रही, उस काल के बीच स्वस्थ रहे, सर्वथा स्वस्थ।

काशीसिंह—कल रात तक तबियत ठीक थी, वैद्यराज

जी, आज सवेरे से ही बिगड़ी है, लेकिन बहुत बिगड़ गई, महाराज ।

[दोनों पलंग के नजदीक की कुर्सियों पर बैठ जाते हैं ।]

घोष—अब आप बैक ठो हमारा तरफ़ करिये ।

[अयोध्यासिंह कराहते हुए करवट लेता है । घोष तेठासकोप से पीठ देखता है । हकीम इब्राहीम का प्रवेश । यह क़रीब ५५ वर्ष का लंबा पूरा, मोटा मनुष्य है । रंग साँवला है । छोटी मूँछें और लंबी दाढ़ी है । बाल काले हैं, पर उनकी जड़ें सफ़ेद; जिससे मालूम होता है कि दाढ़ी और मूँछों पर खिज़ाब किया गया है । रेशमी छींट की शेरवानी और सफ़ेद पैजामा पहने हैं । सिर पर तुर्की टोपी है । हकीम इब्राहीम को देखकर काशीसिंह उसके नजदीक आता है । दोनों एक दूसरे को एक हाथ से बन्दगी करते हैं ।]

इब्राहीम—राजा साहब की तबियत नासाज़ हो गई, कुमार साहब ?

काशीसिंह—हाँ, हकीम साहब, और बहुत ज़्यादा ।

इब्राहीम—उनकी तो इतनी अच्छी तन्दुरुस्ती है कि उनकी अलालत एक अजीब ग़रीब खबर है ।

काशीसिंह—कल रात तक वे बिलकुल अच्छे थे ।

[तीनों पलंग के नजदीक की कुर्सियों पर बैठते हैं ।]

घोष—(तेठासकोप को कान से निकालते हुए) कोई खास ठो बात तो नेई है । (गंगाधर राव और इब्राहीम की

तरफ़ घूम कर) गुड मॉनिंग, कविराज, गुडमॉनिंग, हकीम।

[गंगाधर राव हाथ जोड़ता है और इब्राहीम एक हाथ से बन्दगी करता है।]

गंगाधर—हृद्गति चंचल आहे, डाक्टर?

घोष—कुच, कुच, पर ज़्यादा ठो नेई।

[घोष कुरसी पर बैठ कर थरमामीटर निकालता है। अयोध्यासिंह गंगाधर राव और इब्राहीम का अभिवादन करता है।]

अयोध्यासिंह—(कराहते हुए) ओह! ओह! मैं तो मर रहा हूँ, वैद्यराज जी, हकीम साहब।

[घोष थरमामीटर अयोध्यासिंह के बग़ल में लगाता है।]

गंगाधर राव—अशुभं न ब्रूयात्। राजा साहब, आप अत्यन्त द्रुत गति से पुनः स्वास्थ्य लाभ करहिंगे।

इब्राहीम—शब तक तन्दुरुस्त हो जायँगे, आज ही शब तक, राजा साहब।

[घोष थरमामीटर निकाल कर देखता है। गंगाधर राव उठकर तीनों उँगलियों से दोनों हाथ की नब्ज़ देखता है। फिर इब्राहीम सिर्फ़ एक तर्जनी उँगली को भुजा की तरफ़ सीधी लंबी रखकर दोनों हाथ की नब्ज़ देखता है। अयोध्यासिंह कराहता है।]

घोष—नो टेम्प्रेचर, राजा साहब।

अयोध्यासिंह—टेम्प्रेचर न होगा, पर मरा तो जाता हूँ।

घोष—ओ! सब ठो ठीक हो जाइगा, सब ठो ठीक।

गंगाधर राव—अवश्यमेव।

इब्राहीम—बिला शक।

अयोध्यासिंह—ओह! पेट में तो भाले चल रहे हैं, भाले।

[तीनों पेट दाबकर देखते हैं। अयोध्यासिंह कराह कराह कर पलंग पर हिलता है। घोष, गंगाधर राव और इब्राहीम पलंग के नज़दीक की कुर्सियों पर से उठकर उससे दूर की बाईं तरफ़ की कुर्सियों पर बैठते हैं। काशीसिंह और प्रयागसिंह उनके निकट की दूसरी दो कुर्सियों पर बैठते हैं। अयोध्यासिंह बार बार करवटें बदलते हुए कराहता है। नौकर फिर से उसके पैरों को दबाना शुरू करता है।]

घोष—(गंभीरता से) इट्स ए सीरियस केस!

काशीसिंह—(घबड़ाहट से) सीरियस केस!

गंगाधर राव—(सिर हिलाकर) अवश्यमेव।

प्रयागसिंह—(चिन्ताकुल) कोई डर है?

इब्राहीम—बिला शक, खौफ़ है।

काशीसिंह—क्या बीमारी है, डाक्टर साहब?

घोष—ये केना ठो अबी डिफ़ीकल्ट है, इसका लिये तो खून, पाखाना, पेशाब का जाँच कराना होगा, लेकिन पेशेन्ट का कन्डीशन ठो खराब है।

गंगाधर राव—नाड़ी वेगवती चौष्णा !

इब्राहीम—हाँ, नब्ज की हालत बिलाशक नाजुक है।

काशीसिंह—फिर क्या किया जाय ?

घोष—ट्रीटमेंट ठो शुरू करना होगा, एकदम। आपको ते करना है, ऐलोपैथिक, कविराजी, हकीमी, कौन सा ठो ट्रीटमेंट कराना है ?

काशीसिंह—(कुछ सोचते हुए) जब कन्डीशन इतना सीरियस है, तब तीनों ही दवा एकदम शुरू करना ठीक होगा। (कुछ ठहर कर) मेरी राय तो यह है कि डाक्टर साहब इन्जकशन लगायें, वैद्यराज जी पेट में खाने की दवा दें और हकीम जी मालिश वग़ैरह का इन्तज़ाम करें।

घोष—हो सकता।

गंगाधर राव—अवश्यमेव।

इब्राहीम—बिलाशक।

काशीसिंह—(घोष से) खून, पैखाना और पेशाब की जाँच आप कब करायेंगे ?

घोष—इसका लिये हम तीनों का एक्सपर्ट डाक्टर्स को अबी भेज देगा।

काशीसिंह—इलाज को छोड़कर बाकी इन्तजाम क्या क्या किये जायँ ?

घोष—बाकी इन्तजाम ?

काशीसिंह—जी हाँ, जैसे कमरे में कोई खास बात

की जाय क्या ? खाने को दिया जाय या नहीं, और दिया जाय तो क्या दिया जाय, वग़ैरह, वग़ैरह ?

घोष—(कमरे को चारों तरफ़ देखकर) कमरा ठो ठीक हे, लेकिन गरमी का मोसिम हे। खस की टट्टी से फायदा होगा। क्यों कविराज, क्यों हकीम ?

गंगाधर—अवश्यमेव। खस अत्यन्त लाभप्रद आहे।

इब्राहीम—बिलाशक फ़ायदेमन्द, बहुत फ़ायदेमन्द।

काशीसिंह—टट्टी अच्छी होगी या परदे ?

घोष—परदा वुड वी बैटर।

काशीसिंह—उनकी बुनावट घनी हो या बिरली ?

घोष—वह केसा बी हो सकता।

काशीसिंह—फिर भी इतना सीरियस केस है, जैसा आप कहेंगे, बन जायगा।

घोष—थोड़ा बिरला होने से डेंपनेस कम होगा।

काशीसिंह—एक खस की लाइन से दूसरी लाइन के बीच में कितनी जगह छोड़नी ठीक होगी ?

घोष—(कुछ सोचते हुए) थ्री-फ़ोर्थ इंच। क्यों कविराज, क्यों हकीम ?

गंगाधर राव—ठीक आहे, ठीक आहे।

इब्राहीम—बिलकुल ठीक।

काशीसिंह—और परदों को कितनी कितनी देर में सींचना चाहिये ?

घोष—**(कुछ सोचते हुए)** चार चार मिनिट में। ये ठो बोत जरूरी है। कोई टट्टो भी सूख गिया तो कमरा का टेम्प्रेचर ठो बिगड़ जावेगा।

काशीसिंह—सींचने के पानी में बरफ़ मिलाना ठीक होगा?

घोष—बोत अच्छा, बोत अच्छा। क्यों कविराज, क्यों हकीम?

गंगाधर राव—अवश्यमेव। अवश्यमेव।

इब्राहीम—बिलाशक।

काशीसिंह—पलंग परदों से कितने फ़ुट और इंच दूर रहना चाहिए?

घोष—**(गंभीरता से सोचते हुए)** पाँच फ़ुट चार इंच ठो ठीक होगा। क्यों कविराज, क्यों हकीम?

गंगाधर राव—ठीक आहे, ठीक आहे।

इब्राहीम—बिलकुल ठीक।

काशीसिंह—**(कुछ सोचते हुए)** और पंखा जोर से खींचा जाना चाहिए, या धीरे धीरे?

घोष—न बोत ठो जोर से न बोत ठो धीरे।

काशीसिंह—**(कुछ सोचते हुए)** एक मिनट में कितने रिवोल्यूशन होना चाहिए?

घोष—**(कुछ सोचकर)** कोई डेढ़ डजन ठो। क्यों कविराज, क्यों हकीम?

गंगाधर राव—ठीक आहे ।

इब्राहीम—और क्या ?

काशीसिंह—(कुछ सोचते हुए) कमरे में और कोई इन्तज़ाम ?

घोष—(विचारते हुए) यहाँ पर परफ़ेक्ट पीस ठो रेना चाइये। कोई गुल गपाड़ा नेई ।

गंगाधर राव—हो, ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ।

इब्राहीम—एकदम अमन ।

काशीसिंह—(कुछ सोचते हुए) अच्छा, खाने को दिया जाय या नहीं ?

घोष—क्यों कविराज, क्यों हकीम, हम तो समझता दे सकता ।

गंगाधर राव—अवश्यमेव ।

इब्राहीम—बिलाशक ।

काशीसिंह—क्या दिया जाय ?

घोष—(कुछ सोचते हुए) आप भात दे सकता, दाल दे सकता, रोटी वी दे सकता, परवल का वेजीटेबिल दे सकता। क्यों कविराज, क्यों हकीम ?

गंगाधर राव—अवश्यमेव ।

इब्राहीम—बिलाशक ।

काशीसिंह—कितने तोला भात, कितने माशे दाल, कितने वज़न के आटे की रोटी और कितने परवल ?

घोष—ये हकीम जी बतायगा।

इब्राहीम—(**सोचते हुए**) कोई दो तोले भात, नो माशे दाल और डेढ़ तोले आटे की रोटी। परवल दो। क्यों डाक्टर, क्यों वैद्य जी?

घोष—ठीक।

गंगाधर राव—ठीक आहे।

काशीसिंह—परवल में बीजें रहना चाहिये या निकाल दिये जायें?

इब्राहीम—रह सकते हैं।

काशीसिंह—कितने बीजें तक दिये जा सकते हैं?

इब्राहीम—(**गंभीरता से सोचकर**) एक दर्जन। क्यों डाक्टर, क्यों वैद्य जी?

घोष—ठीक।

गंगाधर राव—ठीक आहे।

काशीसिंह—और रोटी पर घी लगाया जाय या नहीं?

इब्राहीम—(**विचार पूर्वक**) मक्खन लगाइए।

काशीसिंह—उसके सामने की तरफ़ या पुश्त पर?

इब्राहीम—(**अत्यन्त गंभीरता से सोचते हुए**) पुश्त पर ठीक होगा। क्यों डाक्टर, क्यों वैद्य जी?

घोष—ठीक।

गंगाधर राव—ठीक आहे।

काशीसिंह—और पीने के लिये पानी?

इब्राहीम—यह वैद्य जी बतायेंगे।

गंगाधर राव—ग्रीष्में संचीयते वायुः अतः क्षीर नीर दीजिए।

काशीसिंह—याने ?

गंगाधर राव—विशुद्ध कूपजल एक मृत्तिका के पात्र मध्य अग्नि पर धरिए। जब अर्द्ध भस्म हो जाय तब शेष अर्द्ध को रजत पात्र में शनैः शनैः शीतल कर सुवर्ण के चम्मच से तृषा के काल बीच दीजिये। क्यों डाक्टर, क्यों हकीम जी ?

घोष—ठीक।

इब्राहीम—बिलाशक ठीक।

काशीसिंह—और दूध दिया जा सकता है या नहीं ?

गंगाधर राव—अवश्यमेव। नूतन जनित गौ के धारोष्ण पय को पारद पात्र में पिलाइए। अत्यन्त लाभजनित आहे। क्यों डाक्टर, क्यों हकीम जी ?

घोष—ठीक।

इब्राहीम—बिलाशक ठीक।

[सब लोग कुछ देर चुप रहते हैं। अयोध्यासिंह कराहता रहता है।]

घोष—अच्छा, तो हम जाकर अपना असिसटैन्ट भेजता। उसके साथ इंजक्शन का दवा ठो। आधा आधा घन्टे में इंजक्शन देना होगा।

काशीसिंह—हर आधे घन्टे में इंजक्शन ?

घोष—सर्टिनली, आप देखता नेई कन्डीशन कितना सीरियस !

काशीसिंह—और खून, पैखाना, पेशाब की जाँच करने वाले एक्सपर्ट्स को आप कब भेजेंगे ?

घोष—अबी, अबी ।

गंगाधर राव—हम औषधि प्रोषित करते हैं। प्रत्येक पन्द्रह क्षण पश्चात् एक मात्रा मधु के संग सुवर्ण पात्र बीच मिश्रित कर जिव्हा पर चटा दी जाये ।

काशीसिंह—हर पन्द्रह मिनिट पर ?

गंगाधर राव—अवश्यमेव, अवश्यमेव। रोग भीषण आहे ।

इब्राहीम—और मैं मालिश के लिये दो रोग़न भेजता हूँ। एक की मालिश दिमाग़ पर होगी और दूसरे की दिल पर। कुमार साहब, मालिश होनी चाहिए लगातार शाम तक; और इसलिये बहुत मुलायम हाथों से होनी चाहिए, जिससे कोई कल्लाहट वग़ैरह न हो।

काशीसिंह—आप मालिश करने के लिये किसी को भेज सकेंगे ?

इब्राहीम—हाँ, मेरे पास मालिश करने वाली नर्सें हैं। एक साथ दो को मालिश करनी होगी। एक को दिमाग़ पर और दूसरी को दिल पर। फिर एक एक तो शाम तक कर न सकेंगी। एक एक घन्टे में उन्हें बदलना होगा ।

काशीसिंह—अच्छी बात है, आप भेज दें।

[तीनों खड़े होते हैं। काशीसिंह और प्रयागसिंह भी खड़े होते हैं।]

प्रयागसिंह—फिर आप लोग कब तशरीफ़ लायेंगे?

घोष—शाम को।

गंगाधर राव—अवश्यमेव।

इब्राहीम—बिलाशक।

काशीसिंह—पर पहले ज़रूरत हुई तो पहले भी आना होगा।

घोष—जब आप चाहेगा फौरन आ जायगा।

गंगाधर राव—अवश्यमेव, अवश्यमेव।

इब्राहीम—बिलाशक, बिलाशक।

[तीनों का प्रस्थान। काशीसिंह और प्रयागसिंह अयोध्यासिंह के पलंग के पास आते हैं, जो अब तक उसी तरह करवट बदलता हुआ कांख रहा है।]

काशीसिंह—अब कैसी तबियत है, पिता जी?

अयोध्यासिंह—**(कराहते हुए)** ओ! मर रहा हूँ, बेटा, मर रहा हूँ! **(कुछ रुककर)** डाक्टर, वैद्य और हकीम ने क्या कहा?

काशीसिंह—कुछ नहीं, सबने कहा आप बहुत जल्दी अच्छे हो जायँगे।

अयोध्यासिंह—**(कराहते हुए)** और ज्योतिषी जी तथा

तांत्रिक जी अब तक नहीं आये ?

काशीसिंह—आते ही होंगे। मैंने उनसे कहला दिया था कि आपकी तबियत ठीक नहीं है, इसलिये आपके ग्रह देखकर, और अगर कुछ शान्ति कराना हो तो उस पर विचार करके, आवें; इसीलिए शायद देर हो गई हो; मैं अभी देखता हूँ। **(प्रस्थान।)**

अयोध्यासिंह—देखा, दीवान जी, एक ही नुस्खे में कुमार साहब कैसे ठीक हो गये।

प्रयागसिंह—लेकिन, हुज़ूर, इलाज, बड़ा सख्त शुरू होने वाला है। बिना बीमारी के इतना सख्त इलाज कैसे बर्दाश्त होगा ?

अयोध्यासिंह—इसकी तुम फ़िक्र न करो; रोज़ इलाज बदलाऊँगा, इतना ही नहीं, आब हवा बदलने जाऊँगा और मेरी दुम बनकर जायँगे कुमार साहब। मेरे जीते जी मुझसे अख्त्यारात लेकर मुझे क़ैदी बनाकर शाहंशाही करना चाहते थे, उसीका नतीजा भोगेंगे।

[काशीसिंह का करुणाशंकर और कामरूप भट्टाचार्य के साथ प्रवेश। करुणाशंकर क़रीब ६० साल का साधारण ऊँचाई का दुबला पतला, गौर वर्ण का व्यक्ति है। धोती पहने है और उपरना ओढ़े है। सिर खुला है। दाढ़ी मूछें और सिर पर बाल नहीं हैं, पर बहुत बड़ी श्वेत रंग की चोटी है, जो बँधी हुई है। मस्तक पर त्रिपुण्ड है। कामरूप लगभग

४० वर्ष का ठिंगना मोटा और काला व्यक्ति है। आँखें लाल हैं। वस्त्र करुणाशंकर के सदृश हैं। सिर, मूछें, दाढ़ी के बाल काले हैं। प्रयागसिंह खड़े होकर उन्हें प्रणाम कर उनका स्वागत करता है। नजदीक आने पर अयोध्यासिंह दोनों को हाथ जोड़कर प्रणाम करता है। वे दोनों हाथ उठाकर आशीर्वाद देते हैं।]

करुणाशंकर—आयुष्मान। आयुष्मान।

कामरूप—जुग जुग जिइए।

अयोध्यासिंह—(कराहते हुए) आप लोगों को शायद मालूम नहीं है कि मैं मर रहा हूँ, नहीं तो इस तरह का आशीर्वाद नहीं देते।

करुणाशंकर—सूं कहो छो, राजा साव ? दो चार दिवस मा ही आरोग्यता थसे।

अयोध्यासिंह—आपने ग्रह देखे ?

करुणाशंकर—हाँ, देख ने आयो छू, श्रीमान, या मारे ही तो थोड़ो विलंब थयो।

अयोध्यासिंह—(जोर से कराहते हुए) कैसे हैं ?

करुणाशंकर—भलाछे, भलाछे। कोई चिन्ता नी वात नई, थोड़ो उपाय अवश्य करावो पड़शे। अभी कुमार साव सूं सारी हकीकत कहूँ छूं।

अयोध्यासिंह—और आप भी कुछ कराइए, तांत्रिक जी।

कामरूप—हाँ, मैं भी विचार करके आया हूँ। कुमार

साहब से सब कह देता हूँ। आप कोई चिन्ता न करें।

[करुणाशंकर, कामरूप, काशीसिंह और प्रयागसिंह पलंग से दूर पर बाँईं तरफ़ की कुर्सियों पर बैठते हैं।]

काशीसिंह—कैसे ग्रह हैं, महाराज?

करुणाशंकर—अत्यन्त निकृष्ट, कुमार साहब। राजा साब ने शनि मारकेश छे। शनि नी दशा छे। शनि में शनि नो ही अन्तर छे। प्रत्यन्तर में चन्द्र छै; वो भी बुरो। वर्ष ना ग्रह भी बुरा, मास ना भी बुरा, और गोचर ना भी बुरा।

काशीसिंह—(**घबड़ाकर**) तब?

करुणाशंकर—सूँ चिन्ता छे। उपाय करनो पड़शे। उपाय सूँ सब निकल जाशे।

काशीसिंह—उपाय पर आपने विचार किया?

करुणाशंकर—हाँ, श्रीमान्, रुद्राभिशेष ने साथे सवा लक्ष महामृत्युंजय नो जाप, शतचण्डी, लोह और चाँदी नो तुलादान संग एक सौ आठ गोदान।

काशीसिंह—तो अभी से सब इन्तज़ाम किया जाय, जिससे कल ही सब हो जाय, पंडित जी।

करुणाशंकर—कल ही सब।

काशीसिंह—(**कामरूप से**) और आप क्या करेंगे?

कामरूप—मैंने भी सब सोच लिया है। एक उलूक का वध कर उसकी आँख को अश्वत्थ वृक्ष की शाखा में बाँधकर

उसका पैशाची पूजा करना होगा। फिर उसी वृक्ष के नीचे रणगिद्ध के मांस से हवन करना होगा। तब व्याधि मिटेगी।

काशीसिंह—उसका इन्तज़ाम भी कल हो जाना चाहिये।

कामरूप—अवश्य हो जायगा।

काशीसिंह—चलिए, मैं सब बातों के लिये अलग अलग आदमियों को मुक़र्रर कर दूँ, जिससे कल तक सारा इन्तज़ाम होने में आप लोगों को कोई दिक़्क़त न हो।

[तीनों का प्रस्थान। स्वच्छ वरदी में एक चपरासी का प्रवेश।]

चपरासी—हुज़ूर की तबियत पूछने के लिये म्युनिस्पैल्टी के प्रेसीडेन्ट और नगर सेठ साहब तशरीफ़ लाये हैं।

अयोध्यासिंह—**(मुस्कराकर)** देखा, दीवान जी, देखा, घर में और बाहर, दोनों ही जगह नुसखा कैसा काम कर रहा है। जाइए, दोनों को ले आइए।

[प्रयागसिंह का प्रस्थान। **अयोध्यासिंह शान्ति से लेटा रहता है। प्रयागसिंह का सर्दार निहालसिंह और सेठ गिरधारीलाल के साथ प्रवेश।** निहालसिंह को **अवस्था क़रीब ५० वर्ष को है। वह ऊँचा, पूरा, मोटा ताज़ा सिख है। रंग गोरा है। दाढ़ी मूछों के बाल आधे सफ़ेद हो गये हैं। कपड़े अंग्रेजी ढंग के हैं।** सिर पर सफ़ेद साफ़ा है।

गिरधारीलाल की उम्र लगभग ४५ वर्ष की है। वह ठिगना और मोटा आदमी है। वर्ण में साँवला है। सिर व मूछों के बाल कुछ कुछ सफ़ेद हो चले हैं। मस्तक पर मोटा रामानन्दी तिलक लगाये है। सिर पर मारवाड़ी पगड़ी है तथा शरीर पर सफ़ेद अँगरखा और धोती। गले में ज़री का दुपट्टा डाले है। इन्हें देखते ही अयोध्यासिंह फिर कराहकर करवट बदलने लगता है।]

निहालसिंह—(अयोध्यासिंह के पलंग के निकट जाकर) अरे, राजा साहब, बीमारी तो आप दे नेडे नई आय थी। बहादराँ दे नेडे बीमारी! इस तरां बीमारी तो नामर्दां . . .

. . . . . .

गिरधारीलाल—(अयोध्यासिंह के पलंग के निकट जाकर बीच ही में) यो काँई हुयो, राजा शाब? आपरी तो बेमारी कदेई शुणी कोनी। कठेशूं आ बीमारी हो गई! अबार तब्यत किशीक छै?

अयोध्यासिंह—(कराहते हुए) आह! सर्दार साहब! आह! सेठ साहब!

[निहालसिंह, गिरधारीलाल और प्रयागसिंह अयोध्यासिंह के पलंग के पास की कुर्सियों पर बैठते हैं।]

यवनिका-पतन

उपसंहार

स्थान—राजा अयोध्यासिंह के मकान का कमरा

समय—दोपहर

[दृश्य वैसा ही है जैसा उपक्रम और मुख्य दृश्य में था। फ़र्क़ इतना ही है कि पलंग उठा दिया गया है। कुर्सियों पर काशीसिंह और प्रयागसिंह बैठे हैं। दोनों सिर्फ़ कुरता और धोती पहने हुए हैं। सिर पर दोनों के सफ़ेद साफ़ा बँधा हुआ है। काशीसिंह की मूछें मुड़ी हुई हैं।]

काशीसिंह—दीवान जी, इतनी जल्दी यह पहाड़ मेरे सिर पर टूटेगा इसका मुझे सपने में भी खयाल न था।

प्रयागसिंह—क्या कहूँ, सरकार।

काशीसिंह—मैं तो इधर कुछ दिनों से मिल न सका था, पर आपने कहा न कि परसों शाम तक वे बिलकुल अच्छे थे।

प्रयागसिंह—परसों शाम तक क्या, हुज़ूर, कल सुबह इलाज शुरू होने तक वे बिलकुल अच्छे थे।

काशीसिंह—**(आश्चर्य से)** इलाज शुरू होने तक बिलकुल अच्छे थे!

प्रयागसिंह—जी हाँ, और उन्हें मारा इस इलाज ने।

काशीसिंह—इलाज ने मारा! तुम भी क्या उन्हीं के

मानिंद पागल हो गये हो। इलाज शुरू होने के थोड़ी ही देर बाद उन्होंने चिल्लाना शुरू किया था कि मैं बिलकुल अच्छा हूँ, बिलकुल अच्छा हूँ, यह इलाज बन्द करो, नहीं तो मैं मर जाऊँगा और उनके मरने के वाद तुमने वही कहना शुरू किया।

प्रयागसिंह—सरकार, वे ठीक कहते थे और मैं भी ठीक कहता हूँ। इलाज ने उन्हें मार डाला।

काशीसिंह—इतने अच्छे डाक्टर, वैद्य और हकीम के इलाज ने उन्हें मार डाला! वे तो बीमारी के सबब इलाज होते होते पागल हो गये थे, उनकी बात मानकर उनका इलाज कैसे बन्द किया जाता, पर तुम तो बिना बीमारी के ही पागल हो रहे हो।

प्रयागसिंह—**(आश्चर्य से)** मैं पागल हो रहा हूँ?

काशीसिंह—बेशक पागल हो रहे हो, नहीं तो तुम कभी ऐसी वात मुँह से निकाल सकते थे कि इलाज ने उन्हें मार डाला।

प्रयागसिंह—हुज़ूर, मैं फिर कहता हूँ, इलाज ने उन्हें मारा, इलाज ने उन्हें मारा।

काशीसिंह—**(क्रोध से)** तब तुम्हें पागलखाने जाने की तैयारी करनी चाहिये। मैं अभी डाक्टर घोष को बुलाकर तुम्हारी जाँच करा तुम्हें पागलखाने भेजने की तैयारी करता हूँ। **(प्रस्थान।)**

प्रयागसिंह—(पीछे पीछे जाते हुए चिल्लाकर) हुज़ूर...हुज़ूर...डाक्टर घोष।...डाक्टर घोष... तो......

यवनिका-पतन

समाप्त

ईद और होली

पात्र, स्थान

मुख्य पात्र

राम—एक बच्चा (**उम्र** ४ **वर्ष**)

हमीदा—एक बच्ची (**उम्र** ४ **वर्ष**)

रतना—राम की माँ (**उम्र** ४० **वर्ष**)

खुदाबख्श—हमीदा का बाप (**उम्र** ४५ **वर्ष**)

स्थान—एक नगर

ईद और होली

पहला दृश्य

स्थान—एक गली

समय—सन्ध्या

[सकरी सी गली का एक हिस्सा दिखाई देता है, जिसके दोनों तरफ़ एक मंज़ले और दो मंज़ले छोटे छोटे मकानों के बाहरी भाग दृष्टिगोचर होते हैं। गली के एक ओर सबसे नज़दीक ख़ुदाबख़्श के एक मंज़ले मकान के सामने का कुछ हिस्सा दीख पड़ता है। मकान में जाने आने का एक छोटा सा दरवाज़ा है। गली के दूसरी तरफ़ सबसे नज़दीक रतना के दो मंज़ले मकान के सामने का कुछ भाग दिखाई देता है। इस मकान में जाने आने का एक बड़ा सा दरवाज़ा है। ख़ुदाबख़्श और रतना के मकान एक दूसरे के ठीक सामने हैं और बीच में गली है। हमीदा ख़ुदाबख़्श के मकान के भीतर से निकल कर गली में आती है। हमीदा क़रीब चार वर्ष की छोटी सी बालिका है। रंग गेहुआँ है और देखने में साधारणतया सुन्दर है। छोटे छोटे फैले हुए बाल हैं। एक गुलाबी रंग का रेशमी पाजामा और हरे रंग का रेशमी कुरता पहने है।

कानों में चाँदी की बालियाँ हैं। हमीदा के हाथों में पत्ते का दोना है और उसमें मैदे की बनी हुई सिवइयाँ हैं।]

हमीदा—(रतना के मकान के नज़दीक जाकर ज़ोर से) आम! ओ आम!

[रतना के मकान से राम निकलता है। उसकी उम्र भी हमीदा के बराबर ही है, पर क़द में वह हमीदा से कुछ ऊँचा और शरीर में भी कुछ मोटा है। रंग गेहुआँ है और देखने में बुरा नहीं है। एक सफ़ेद जाँघिया पहने है और उसके ऊपर वैसा ही कुरता।]

राम—(हमीदा को देखकर) ओ, हम्मू।

हमीदा—हाँ, आम। आद ईद, ईद। (सिवइयाँ दिखाते हुए) जे।

राम—जे त्या हैं, हम्मू?

हमीदा—ईद ती छिमइयाँ।

राम—ईद ती छिमइयाँ?

हमीदा—हाँ, आम, ईद ती छिमइयाँ। मीथी, मीथी।

[दोनों रतना के मकान के नज़दीक गली के एक किनारे पर बैठ जाते हैं।]

हमीदा—हम तुम दोनों थाँय।

राम—दोनों थाँय?

हमीदा—(सिवइयाँ राम के मुंह की तरफ़ ले जाते हुए) हाँ, आम, दोनों थाँय।

[हमीदा राम को अपने हाथ से सिवइयाँ खिलाती है, फिर खुद खाती है। रतना अपने मकान के बाहर निकलती है। वह क़रीब ४० साल की गेहुएँ रंग की साधारण ऊँचाई और शरीर की स्त्री है। वेष भूषा से विधवा जान पड़ती है।]

रतना—(ज़ोर से) राम! ओ राम!

राम—(उसी तरह बैठे हुए सिवइयाँ खाते खाते) हाँ, माँ।

रतना—(राम के नज़दीक आते और राम तथा हमीदा को क्रोध से देखते हुए) फिर उस मलेच्छा के साथ खा रहा है। भिष्ट कहीं का।

राम—अले, माँ, छिमइयाँ हैं, छिमइयाँ, मीथी, मीथी। ईद ती हैं, ईद ती, माँ।

[रतना नज़दीक पहुँचकर राम का हाथ पकड़ती है। हमीदा बैठी बैठी खाती रहती है। ख़ुदाबख़्श अपने मकान के बाहर निकलता है। उसकी उम्र क़रीब ४५ वर्ष की है। रंग साँवला है। वह ऊँचा पूरा, मोटा ताज़ा व्यक्ति है। ईद के कारण धुला हुआ सफ़ेद पाजामा और चिकन का कुरता तथा उस पर हरे रंग की रेशमी सदरी पहने है। सिर पर हरे रंग का ही बड़ा-सा रेशमी साफ़ा बाँधे है।]

रतना—(ख़ुदाबख़्श को न देख हमीदा की तरफ़ क्रोध से घूरते हुए गरज कर) हरामज़ादी, सौ बार कहा मेरे लड़के के साथ न खेला कर। अपना छुआ, अपना जूठा, खिलाती है, मलेच्छा कहीं की।

[हमीदा पर रतना की घुड़की का कोई असर नहीं पड़ता और उसका खाना जारी रहता है।]

ख़ुदाबख़्श—(उसी तरफ़ नज़दीक आते हुए) बस बहुत हुआ, बहुत हुआ, खबरदार, अगर ज़बान चूकी तो।

रतना—(ख़ुदाबख़्श की तरफ़ देखते हुए) बाह्मन का धरम भिष्ट कराता है और कहता है खबरदार, जबान चूकी तो। उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे।

ख़ुदाबख़्श—(हमीदा को गोद में उठाते हुए) मैं औरत के मुंह नहीं लगना चाहता। काफ़िर कहीं की।

रतना—औरत भी तेरे मुंह नहीं लगना चाहती। **(राम को गोद में उठाते हुए)** अपनी शाहजादी को अपने बस में रख।

ख़ुदाबख़्श—क्यों तेरा लड़का भरष्ट होता है?

रतना—मेरा लड़का तेरे घर नहीं गया था। तेरी लड़की आई थी।

ख़ुदाबख़्श—(हमीदा को गोद में उठाये अपने घर की तरफ़ जाते हुए) अब कभी पेशाब करने भी न आयगी।

रतना—(राम को गोद में उठाये अपने घर के अन्दर जाते हुए) वही अच्छा है, धरम तो बचा रहेगा।

ख़ुदाबख़्श—(घर में जाते जाते घृणा से) काफ़िर और मज़हब।

रतना—(भीतर से) मलेच्छ। मलेच्छ।

[दोनों अपने अपने बच्चों के साथ अपने अपने घरों के अन्दर चले जाते हैं। नेपथ्य में 'मारो मारो' कोलाहल होता है। खुदाबख़्श बाहर आता है। गली में कुछ मुसलमान लाठियाँ लिये दौड़ते हुए आते हैं।]

खुदाबख़्श—क्या हुआ, बिरादरान।

एक आगन्तुक—झगड़ा।

खुदाबख़्श—हिन्दू मुसलमानों में ?

दूसरा आगन्तुक—हाँ, हाँ, और किसमें होगा ?

[आगन्तुक दौड़ते हुए दूसरी तरफ़ चले जाते हैं। खुदाबख़्श जल्दी से घर के अन्दर जाता है और एक लाठी लेकर आता है तथा उसी तरफ़ चला जाता है जिस तरफ़ दूसरे मुसलमान गये थे। नेपथ्य में कोलाहल बढ़ता है। हमीदा अपने घर से निकलती है और रतना के मकान के भीतर जाती है। नेपथ्य में कोलाहल होता रहता है। खुदाबख़्श एक हाथ में तेल से भींगे हुए चिथड़े और दूसरे हाथ में एक मशाल लिये हुए आता है। रतना के मकान के इधर उधर वे चिथड़े रख मकान में आग लगाने का प्रयत्न करता है।]

खुदाबख़्श—(क्रोध से दाँत पीसते हुए) मलेच्छ ! मलेच्छ ! हम मलेच्छ ! ले गालियों का नतीजा, ले। तेरा राम, तेरा मकान, तेरा सब कुछ खाक में मिला दूँ तब तो

मेरा नाम खुदाबख्श। जा, दोज़ख में जा, मय खानदान और दौलत के जा, काफ़िर कहीं की।

[नेपथ्य का कोलाहल और बढ़ता है।]

यवनिका-पतन

दूसरा दृश्य

स्थान—रतना के मकान की छत

समय—रात्रि

[लंबी छत है। पीछे की तरफ़ मकान की दीवाल है और सामने की ओर ईंट चूने की रेलिंग। रेलिंग के नीचे भी दीवाल है। दाहिनी और बाईं तरफ़ से आग की लपटें और धुंआँ उठ रहा है। बीच बीच में दाहिनी और बांई तरफ़ से आग के कुछ कण छत पर आते हैं। छत पर राम और हमीदा खड़े हुए बात कर रहे हैं। नेपथ्य में बीच बीच में कोलाहल सुनाई देता है।]

हमीदा—ईद ते वादे बदते हैं, आम।

राम—(आग की लपटों की ओर इशारा कर) औल ईद ते छाथ होली बी दल रही है, हम्मू।

हमीदा—हाँ, औल होली ता दाना वी हो लहा है, आम।

राम—ईद ते वादे वद लहे हैं, होली ता दाना हो लहा है।

हमीदा—मैंने तो तुधे ईद ती छिमइयाँ थिलाई थीं, श्राम। तू मुधे होली ती मिथाई नई थिलायदा?

राम—होली दल दाने पर मेरे घल में मिथाई वनेदी, हम्मू।

[आग की लपटें धीरे धीरे नजदीक आने लगती हैं।]

राम—अले होली तो पाछ पाछ आती जाती है।

हमीदा—कैछी अच्छी, लाल लाल, पीली पीली।

[आग के कण और नजदीक आने लगते हैं।]

हमीदा—**(कणों को पकड़ने का प्रयत्न करते हुए)** जुदनू, श्राम, जुदनू।

राम—नहीं, छोना, हम्मू, छोना।

[नेपथ्य में जोर से 'हम्मू! हम्मू!' शब्द होता है।]

हमीदा—अव्वा पुताल लहे हैं, श्राम, अव्वा।

[नेपथ्य में जोर से 'राम! राम!' शब्द होता है।]

राम—माँ बुला लही हैं, हम्मू, माँ।

[नेपथ्य में फिर जोर से 'हम्मू! हम्मू!' शब्द होता है।]

हमीदा—**(जोर से)** हाँ, अव्वा!

नेपथ्य से—अरी कहाँ है, हम्मू! कहाँ?

हमीदा—(मुस्कराकर राम से) आम, अब्बा मुधे धूंध लहे हैं।

नेपथ्य से—(ज़ोर से) राम! राम!

राम—(ज़ोर से) हाँ, माँ!

नेपथ्य से—(ज़ोर से) अरे कहाँ है, राम, कहाँ?

राम—(मुस्कराकर हमीदा से) हम्मू, माँ मुधे धूंध लही हैं।

नेपथ्य से—(ज़ोर से घबड़ाहट के स्वर से) हम्मू! हम्मू! कहाँ है, बोल तो?

हमीदा—(ताली बजाकर नाचते हुए ज़ोर से) आम ती छत पल, अब्बा, आम ती छत पल।

नेपथ्य से—राम! राम! कहाँ है, छत पर है?

राम—(हमीदा के साथ ताली बजाकर नाचते हुए) हाँ, माँ, छत पल ही तो हूँ।

नेपथ्य से—या खुदा!

नेपथ्य से—हे भगवान!

[राम और हमीदा उसी तरह ताली बजाकर नाचते रहते हैं। आग की लपटें और नज़दीक आती हैं। सामने की दीवाल पर दीवाल की कारनिस पकड़कर कठिनाई से खुदाबख्श चढ़ता हुआ दीख पड़ता है। धीरे धीरे खुदाबख्श छत पर पहुँचता है।]

हमीदा—(खुदाबख्श को देखकर हर्ष से चिल्लाकर

उसकी तरफ़ आते हुए) ओ ! अव्वा ! अव्वा !

ख़ुदाबख़्श—(क्रोध से) कमबख़्त, तू यहाँ क्यों आई ?

हमीदा—(मुस्कराते हुए) थेलने तो, अव्वा, आम ते छात थेलने तो ।

ख़ुदाबख़्श—(अपने साफ़े को उतार रेलिंग से बाँधते हुए घृणा से) मरने को, बेशऊर ।

[ख़ुदाबख़्श साफ़े को रेलिंग से बाँध हमीदा को गोद में उठाता है ।]

हमीदा—औल आम तो इछ्ती अम्मा ले दायदी?

राम—में अपने पैलों छे छीदी छे उतल आता हूँ ।

[राम छत की दाहिनी तरफ़ जाने लगता है, जिधर से आग की लपटें आ रही हैं ।]

ख़ुदाबख़्श—हाँ, जा, अपने पैरों से सीढ़ी से उतर कर आ जा ।

[राम उसी तरफ़ बढ़ता है ।]

ख़ुदाबख़्श—(उसी तरफ़ देखते हुए जोर से) ठहर ! राम ! ठहर !

[राम जो आग की लपटों के बहुत ही नजदीक पहुँच गया है, रुक जाता है । ख़ुदाबख़्श दौड़कर उस तरफ़ जाता और उसे दूसरी गोद में उठा रेलिंग में बंधे हुए अपने साफ़े के नजदीक आकर हमीदा और राम को अपनी दोनों भुजाओं से अपने दोनों तरफ़ के पसवाड़ों में दाब हाथों से साफ़े को

पकड़ नीचे उतरने का प्रयत्न करता है। दोनों तरफ़ से आग की लपटें ख़ुदाबख़्श के नज़दीक पहुँच जाती हैं।]

यवनिका-पतन

तीसरा दृश्य

स्थान—गली

समय—प्रातःकाल

[दृश्य वैसा ही है जैसा पहले दृश्य में था। अन्तर इतना ही है कि रतना के मकान का बहुत सा हिस्सा जल गया है। आग अब बुझ गई है। रतना के मकान के नज़दीक ही गली के एक किनारे पर राम और हमीदा बैठे हुए हैं। दोनों के बीच में मिठाई का एक दोना रखा है और दोनों उस दोने से मिठाई खा रहे हैं। ख़ुदाबख़्श और रतना का प्रवेश।]

ख़ुदाबख़्श—(दोनों बच्चों को मिठाई खाते देख मुस्करा कर रतना से) बहन, राम फिर भरष्ट हो रहा है।

रतना—(मुस्कराते हुए) नहीं, भाई, सच्चा धरम सीख रहा है।

ख़ुदाबख़्श—शर्त यही है कि बड़े होने पर भी इसी मज़हब को माने।

[दोनों कुछ देर चुप रहकर एकटक बच्चों की तरफ़

देखते हैं। बच्चों की पीठ उनकी तरफ़ रहने के कारण बच्चे उन्हें नहीं देख पाते। कुछ देर निस्तब्धता रहती है।]

रतना—भाई, तुमने राम की जान बचा कर जो जस मुझपर किया है उसे मैं...........

ख़ुदाबख़्श—(बीच ही में) मैंने? नहीं, बहन, मैंने तो राम की जान लेने के लिये ऐसी कोई बात नहीं जो उठा रखी हो। उस परवरदिगार ने उसकी जान बचाई। **(रतना की तरफ़ देखते हुए)** बहन, जब मैं छत पर उसे छोड़, और हमीदा को लेकर, आने का इरादा कर रहा था, बल्कि राम को आग से ख़ाक होते हुए ज़ीने से उतरकर आने की सलाह देकर हमीदा को ले उतरने का इरादा कर रहा था, उस वक़्त....उस वक़्त....बहन.... **(चुप हो जाता है।)**

रतना—(ख़ुदाबख़्श की तरफ़ देखते हुए) हाँ, उस वखत, भाई?

ख़ुदाबख़्श—उस वक़्त....उस वक़्त....मैं ऐसा ...मैं ऐसा कर ही न सका। जैसे किसी ने मुझे ऐसा न करने के लिये मजबूर कर दिया। ....बहन.... बहन....यह ख़ुदा का पैग़ाम था, ख़ुदा का पैग़ाम।

[ख़ुदाबख़्श चुप हो जाता है। रतना उसकी तरफ़ देखती रहती है। कुछ देर निस्तब्धता रहती है।]

ख़ुदाबख़्श—(कुछ ठहर कर) ख़ुदा ने राम को मेरे

हाथ से बचवा कर तुम्हारे मकान जलाने के मेरे गुनाह को मुआफ़ कर दिया।

रतना—मलेच्छ ने काफ़िर का मकान जलाया था, भाई ख़ुदाबख़्श ने बहन रतना का नहीं।

ख़ुदाबख़्श—इन बच्चों ने, बहन, इन बच्चों ने हमें मलेच्छ और काफ़िर से भाई और बहन बना दिया।

रतना—बच्चे कदाचित मैली आतमाओं को पवित्तर करने की भगवान की देन हैं।

[राम और हमीदा, जो अब मिठाई खा चुके हैं, उठते और ख़ुदाबख़्श और रतना की तरफ़ घूमते हैं।]

राम—(रतना को देख कर उसी तरफ़ दौड़ते हुए) माँ! माँ!

हमीदा—(ख़ुदाबख़्श को देखकर उसी ओर दौड़ते हुए) अब्बा! अब्बा!

[राम को ख़ुदाबख़्श और हमीदा को रतना गोद में उठाते हैं।]

रतना—क्यों बेटा, हम्मू को मिठाई खिलाई?

राम—हाँ, माँ, इछने तल मुधे ईद ती छिमइयाँ थिलाईं थीं, आद मैंने इछे होली ती मिथाई थिलाई है।

[ख़ुदाबख़्श और रतना हँस पड़ते हैं।]

यवनिका-पतन

समाप्त

मानव-मन

पात्र, स्थान

मुख्य पात्र

कृष्णवल्लभ—एक व्यापारी

पद्मा—कृष्णवल्लभ की पत्नी

भारती—पद्मा की सखी

स्थान—एक नगर

मानव-मन

उपक्रम

स्थान—कृष्णवल्लभ के मकान का बरामदा

समय—प्रात:काल

[बरामदा आधुनिक ढंग का है और उसी तरह सजा भी है। पीछे की दीवाल दिखती है और दो तरफ़ खंभों पर डाटें। दीवाल गुलाबी रंग से रंगी है। उसपर श्रीनाथ जी, यमुना जी और श्रीकृष्ण की अनेक लीलाओं के चित्र टँगे हैं। डाटों में से बगीचे का कुछ हिस्सा दिखाई देता है जो उगते हुए सूर्य के प्रकाश से रंग रहा है। बरामदे के सीलिंग से बिजली की बत्तियाँ झूल रही हैं और ज़मीन पर, जो संगमरमर से पटी है, अनेक सोफ़े, कुर्सियां और टेबिलें सजी हैं। एक कुर्सी पर पद्मा बैठी हुई है और अपने सामने की टेबिल पर रखी हुई एक खुली चिट्ठी ध्यान से पढ़ रही है। पद्मा करीब २१, २२ साल की साधारण क़द और सुडौल शरीर की सुन्दर स्त्री है। रंग गोरा है। रेशमी साड़ी, ब्लाउस और रत्नजटित आभूषण पहने है। मस्तक पर लाल टिकली है। और उसीके नीचे दोनों भवों के बीच

में श्रीनाथ जी का पीला चरणामृत लगा हुआ है। भारती का प्रवेश। उसकी अवस्था करीब ४० वर्ष की है। वह लम्बे क़द की दुबली पतली साधारण तथा सुन्दर स्त्री है। रंग गेहुआँ है। सूती साड़ी और शलूका पहने है। वेष-भूषा से विधवा जान पड़ती है।]

भारती—(पद्मा के निकट आते हुए) बड़े ध्यान से क्या पढ़ रही हो, बहन?

पद्मा—(चौंककर) ओ! भारती बहन, **(खड़े होकर)** आओ, बैठो, बहन।

[भारती और पद्मा दोनों कुर्सियों पर बैठ जाती हैं।]

भारती—क्या पढ़ रही थीं?

पद्मा—उनकी चिट्ठी आई है।

भारती—तभी इतनी ध्यानावस्थित थीं कि मेरी बोली सुनकर भी चौंक पड़ीं।

पद्मा—उनका पत्र मुझे ध्यानावस्थित करने को काफ़ी है, यह मैं मानती हूँ, पर ध्यान मग्न होने का एक और भी सबब था।

भारती—क्या?

पद्मा—उस पत्र के समाचार।

भारती—क्यों, उनके मित्र की तबीयत कैसी है?

पद्मा—वैसी ही है, क्षय ऐसी बीमारी नहीं, जो जल्दी अच्छी हो जाय, या बिगड़ जाय।

भारती—फिर वहाँ से और क्या समाचार आ सकते हैं ?

पद्मा—सुन लो, पत्र ही सुना देती हूँ। (पत्र उठाकर पढ़ते हुए) "तुम्हें यहाँ का एक हाल पढ़कर आश्चर्य हो सकता है, पर इस ज़माने में इस तरह की चीज़ें कोई ताज्जुब की बात नहीं है....

भारती—किस तरह की चीज़ें ?

पद्मा—वही तो पढ़ती हूँ, सुनो। (पत्र पढ़ते हुए) "इस दफ़ा भाभी जी का विचित्र क़िस्सा है। बृजमोहन की तबियत वैसी ही होते हुए भी, उनके पलंग पर पड़े रहने पर भी, इधर उधर हिलने डुलने की ताक़त न होने पर भी, भाभी जी का पुराना प्रोग्राम फिर लौट आया है। नित्य प्रातःकाल एक घंटा टब और शावर बाथ में लगता है। फिर बाल सँवारने, पाउडर लगाने, लिपस्टिक और नेल पेन्ट को काम में लेने में काफ़ी वक़्त लग जाता है। रोज़ नई साड़ी और ब्लाउस पहना जाता है। हर दिन शाम का समय क्लब में जाता है और अगर किसी दिन कोई गार्डन पार्टी या डिनर या डान्स का न्योता आ गया तब तो रात को भी लौटने का कोई निश्चित वक़्त नहीं रहता। बृजमोहन को सम्हालते हैं डाक्टर और जहाँ तक भाभी का संबंध है वहाँ तक एक दफ़ा बृजमोहन की तबीयत पूछ लेने

से उनके कर्तव्य की समाप्ति हो जाती है।" **(पत्र टेबिल पर रखकर भारती की तरफ़ देखते हुए)** कहो, बहन, पत्र के समाचार ध्यानावस्थित कर देने के लायक हैं या नहीं ?

भारती—**(गंभीरता से)** तुम्हें इन समाचारों से अचम्भा हुआ है ?

पद्मा—अचम्भा ! बड़े से बड़ा अचम्भा जो दुनिया में हो सकता है।

भारती—वृजमोहन जी कितने दिन से बीमार हैं ?

पद्मा—कोई दो साल हो गये होंगे।

भारती—और उनकी पत्नी का और उनका बीमारी के पहले कैसा सम्बन्ध था ?

पद्मा—अच्छे से अच्छा। दोनों कॉलेज के प्रेमी थे और शादी प्रेम के परिणाम स्वरूप हुई थी। तभी तो भाभी जी का यह व्यवहार और भी आश्चर्य पैदा करता है।

[भारती चुपचाप कुछ सोचने लगती है। पद्मा उसकी ओर देखती है। कुछ देर निस्तब्धता रहती है।]

भारती—कृष्णवल्लभ जी पहले पहल वृजमोहन जी को देखने गये हैं ?

पद्मा—नहीं, एक दफ़ा उनकी बीमारी के शुरू में गये थे।

भारती—उस समय भाभी जी का क्या हाल था ?

पद्मा—इसके ठीक विपरीत। उस वक़्त बृजमोहन जी की बीमारी उनके दिवस की चिन्ता और रात्रि का स्वप्न थी। उनकी दिनचर्या बृजमोहन जी के नज़दीक बैठे बैठे चौबीसों घंटे गुज़ारना था। डाक्टरों और नर्सों के रहते हुए वे ही उन्हें दवा देती थीं, वे ही उनका टेम्प्रेचर लेती थीं। वे ही अपने हाथों उनका सारा काम करती थीं। तभी तो......तभी तो अब भाभी जी के व्यवहार से ताज्जुब होता है,। (कुछ ठहर कर) तुम्हें इससे अचम्भा नहीं होता, बहन?

भारती—(गम्भीरता से) नहीं।

पद्मा—नहीं?

भारती—नहीं, बहन, बरदाश्त करने की भी हद्द होती है।

पद्मा—बरदाश्त की हद्द होती है?

भारती—ज़रूर। सहन-शक्ति सीमा-रहित नहीं है।

पद्मा—ऐसे मामलों में भी?

भारती—हरेक मामले में।

पद्मा—क्या कहती हो, बहन, क्या कहती हो? पति बीमार हो, खाट पर पड़ा हो, उठने बैठने, हिलने डुलने की भी ताक़त न हो और पत्नी इस तरह की वेष-भूषा करे, इस तरह के गुलछर्रे उड़ाये! कहाँ गया भाभी जी का उनके प्रति प्रेम? कहाँ गई भाभी जी की उनकी वह सेवा जो बीमारी के शुरू में थी?

भारती—तुम्हारी भाभी जी दो वर्षों तक उस तरह अपनी ज़िन्दगी नहीं बिता सकती थीं जिस तरह उन्होंने वृजमोहन जी की बीमारी के शुरू में बिताना आरम्भ किया था।

पद्मा—तब तो शायद वे यह भी चाहती होंगी कि वृज-मोहन जी का....वृजमोहन जी का जीवन ही...... जीवन ही समाप्त हो जाय ?

भारती—सम्भव है।

पद्मा—**(उत्तेजना से)** वह स्त्री नहीं, सुना बहन, सच्ची स्त्री नहीं। पति की बीमारी में, बीमार पति की सेवा में, दो वर्ष नहीं अगर सारा जीवन भी बीत जाय तो स्त्री को रो धोकर नहीं, पर शान्ति से उसे बिता देना चाहिये।

भारती—यह कहना जितना सरल है, करना उतना ही कठिन है।

पद्मा—नई रोशनी की औरतों के लिये होगा, जिन्हें न धर्म पर विश्वास है और न भगवान पर भरोसा, जिनके लिये विवाह धार्मिक संस्कार नहीं पर एक इक़रारनामा है; जिनके एक जीवन में ही एक नहीं अनेक शादियाँ हो सकती हैं, एक नहीं अनेक पति मिल सकते हैं।

भारती—मैं समझती हूँ सभी के लिये।

पद्मा—**(ताने से)** क्या अपने अनुभव से कहती हो ?

भारती—**(गम्भीरता से)** सोच सकती हो। **(कुछ**

ठहर कर) बहन, मैं नई रोशनी की नहीं हूँ। विवाह को इकरारनामा न मान कर सच्चा धार्मिक संस्कार मानती हूँ। पति को अपना सर्वस्व मानती थी। जब उन्हें लकवा हुआ तब मैं भी खाना, पीना, नींद, आराम सब कुछ छोड़कर उनकी सेवा में दत्तचित्त हुई। उनकी बीमारी ही मेरी दिवस की चिन्ता और रात्रि का स्वप्न हो गई। वह मानसिक दशा बहुत दिन तक रही भी। वे तीन वर्ष तक बीमार रहे, पर आखिर आखिर में मैं भी ऊब उठी थी।

पद्मा—और तुम आखिर आखिर में यह भी चाहने लगी थीं कि उनका जीवन....उनका जीवन समाप्त हो जाय?

भारती—**(कुछ सोचते हुए)** कह नहीं सकती, जब उनकी तकलीफ़ बहुत बढ़ी तब कई बार यह बात मन में उठती थी कि उन्हें इतनी तकलीफ़ न सहना पड़े तो ही अच्छा है, सम्भव है यह बात यथार्थ में उनके लिये न उठकर अपने ही छुटकारे के लिये उठती हो। बहन, तुम्हारी भाभी जी भी वृजमोहन जी की बीमारी के शुरू में यह कभी न चाहती होंगी कि उनका जीवन समाप्त हो जाय, उन्होंने उनके अच्छे करने में कोई बात उठा न रखी होगी, परन्तु जब उन्हें यह दीख पड़ने लगा होगा कि उनका अच्छा होना अब असम्भव है तब....तब...

पद्मा—**(क्रोध से)** बहन, बहन, वह कुलटा होगी, वह

व्यभिचारिणी होगी। किसी भी हालत में, किसी भी परिस्थिति में, कोई हिन्दू स्त्री, कोई सच्ची हिन्दू पत्नी, अपने पति, अपने आराध्यदेव के सम्बन्ध में ऐसी बात जाग्रत अवस्था में तो क्या स्वप्न में भी नहीं सोच सकती, चाहे उसका सारा जीवन नष्ट हो जाय, सारी ज़िन्दगी बर्बाद हो जाय।

भारती—बहन, तुम जो कहती हो वह आदर्श है। अपने सारे सुखों की तिलाञ्जलि देकर कोई स्त्री अगर अपने को अपने पति में इस प्रकार विलीन कर सके, कोई प्रेमी यदि अपने निजत्व को अपने प्रेमी को इस प्रकार समर्पण में दे सके तो वह मानवी नहीं देवी है, वह मनुष्य नहीं देवता है; लेकिन, बहन, यह मानव-मन. . . मानव-मन . . . मानव-मन . . . ।

[दोनों गम्भीरता से एक दूसरी की तरफ़ देखती हैं।]

यवनिका-पतन

मुख्य दृश्य

स्थान—कृष्णवल्लभ के मकान में उसके सोने का कमरा

समय—दोपहर

[कमरे के तीनों तरफ़ की दीवालें दिखती हैं जो आसमानी रंग से रंगी हुई हैं। पीछे की दीवाल में कई दरवाज़े

और खिड़कियाँ हैं, जिनमें से उसके बाहर की बालकनी का कुछ भाग और बग़ीचे के दरख़्तों का ऊपरी हिस्सा तथा आकाश दिखाई देता है, जिससे जान पड़ता है कि कमरा दुमंज़िले पर है। दाहिनी तरफ़ की दीवाल में दो दरवाज़े और एक खिड़की है। इनमें से एक दरवाज़ा खुला हुआ है। इससे स्नानागार का कुछ हिस्सा दिखाई देता है। बाईं ओर की दीवाल में भी दो दरवाज़े और एक खिड़की है। इनमें से भी एक ही दरवाज़ा खुला है, जिससे नीचे जाने के ज़ीने का कुछ भाग दिखता है। दीवाल पर श्रीनाथ जी, यमुना जी, और श्रीकृष्ण की लीलाओं के कई चित्र लगे हैं। कमरे की छत से बिजली की बत्तियाँ और एक सीलिंग फ़ैन झूल रहे हैं। ज़मीन पर क़ालीन बिछा है, जिसके बीचों बीच चाँदी के पायों का एक पलंग बिछा है। पलंग के पास ही एक टेबिल रखी है। जिस पर दवा की शीशियाँ, थरमामीटर, एक टाइमपीस घड़ी, और नोट बुक इत्यादि रखी हैं। पलंग के आसपास कुछ कुर्सियाँ और कुछ टेबिलें और रखी हैं। पलंग पर कृष्णवल्लभ रुग्ण अवस्था में लेटा है। उसकी उम्र क़रीब ३० वर्ष की है। वह साधारण ऊँचाई और गोरे रंग का व्यक्ति है, पर बीमारी के कारण अत्यन्त कृश हो गया है। मुख पर पीलापन और आँखों के चारों तरफ़ कालिमा आ गई है। सिर के बाल अंग्रेज़ी ढंग से कटे हैं और दाढ़ी मूँछ मुड़ी हुई हैं। वह गले तक एक ऊनी शाल

ओढ़े हुए है। उसीके नजदीक की एक कुर्सी पर पद्मा बैठी हुई है। पद्मा की वेष-भूषा एकदम सादी हो गई है। मस्तक की टिकली और उसके नीचे का चरणामृत उसी तरह लगा है जैसा उपक्रम में था। उसके मुख पर शोक और चिन्ता का साम्राज्य छाया हुआ है।]

कृष्णवल्लभ—(खाँसकर) दो वर्ष हो गये न, प्रिये? दो वर्ष पहले की इसी महीने की इसी तारीख को पहले पहल बुखार आया था।

पद्मा—हाँ, प्राणनाथ, दो वर्ष हो गये।

कृष्णवल्लभ—बृजमोहन दो वर्ष से कुछ ही ज्यादा तो बीमार रहा?

पद्मा—आप न जाने क्या क्या सोचा करते हैं।

कृष्णवल्लभ—(फिर खाँसते हुए) क्यों, प्यारी, यह कैसे न सोचूं? जो क्षय उसे था वही मुझे है, और वहाँ से लौटने के थोड़े दिन बाद ही हो भी गया।

पद्मा—इससे क्या होता है, क्या इस बीमारी के रोगी अच्छे नहीं होते?

कृष्णवल्लभ—बृजमोहन तो नहीं हुआ और मैं भी नहीं हो रहा हूँ।

पद्मा—आप हो जायेंगे।

कृष्णवल्लभ—अभी भी तुम्हें आशा है? प्रिये, आशा की जगह न होते हुए भी कई दफ़ा मनुष्य आशा को मन

में ठूँसने का बलात्कार करता है। इस तरह की आशा अपने आपको धोखा देने की कोशिश करना है। यह झूठी आशा है; अस्वाभाविक आशा है।

पद्मा—(**जोर से**) क्या कहते हैं, नाथ, क्या कहते हैं, मुझे आशा नहीं विश्वास, पक्का विश्वास है, कि आप अच्छे हो जायँगे।

कृष्णवल्लभ—(**पद्मा की तरफ़ करवट लेकर खाँसते हुए**) और तो अच्छे होने के कोई आसार नहीं हैं, हाँ तुम्हारी तपस्या मुझे अच्छा कर दे तो दूसरी बात है।

[पद्मा कोई उत्तर नहीं देती। उसकी आँखों में आँसू भर आते हैं।]

कृष्णवल्लभ—प्यारी, तुम मानवी नहीं देवी हो। इन दो सालों में तुमने मेरे लिये क्या नहीं किया; न पेट भर खाया, न नींद भर सोईं; पूजा, पाठ, जप, दर्शन तक छोड़ दिये। चौबीसों घंटे मेरे पलंग के पास। कहाँ कहाँ ले जाकर मेरी आब-हवा बदलवाई। दो वर्ष के इस जीवन में किसी प्रकार का भी, कोई भी, सुख किसे कहते हैं वह तुम नहीं जानतीं।

पद्मा—(**आँखों में आँसू भर कर**) आपके अच्छे होते ही मेरे सारे सुख दूने होकर लौट आयेंगे।

कृष्णवल्लभ—(**इकटक पद्मा की ओर देखते हुए**) और, प्रिये, और, प्रिये, अगर मैं अच्छा न हुआ तो?

पद्मा—यह कल्पना करने की भी बात नहीं है।

[कृष्णवल्लभ और पद्मा कुछ देर चुप रहते हैं। निस्तब्धता रहती है।]

कृष्णवल्लभ—**(अपने दुबले हाथ ऊनी चादर से बाहर निकालकर पद्मा का हाथ अपने हाथ में लेते हुए)** प्राण-प्यारी, यह जानते हुए भी कि दुनिया में सबसे निश्चित बात मरना है, कोई मरना नहीं चाहता। मैं भी मृत्यु का आह्वान नहीं कर रहा हूँ। मैं जीना चाहता हूँ। तुम्हारे साथ वे सब सुख भोगने का इच्छुक हूँ जो दो वर्ष पहले प्राप्त थे। **(खाँसने के कारण चुप हो जाता है। कुछ ठहर कर)** सावन की उठती हुई घटाएँ और उनमें चमकती हुई बिजली, उन घटाओं का गर्जन और मन्द मन्द बरसती हुई फुहार, उसमें पपीहे की पीहू और मोर का केका तथा उस वायु-मण्डल में तुम्हारे साथ झूलते हुए झूले की मुझे अब जितनी याद आती है उतनी स्वस्थ दशा में कभी नहीं आती थी। **(खाँसी के कारण फिर चुप हो जाता है। कुछ ठहर कर)** वसन्त में खिले हुए फूलों की रंग विरंगी क्यारियाँ, उनके दर्शन और उनकी सुगन्ध, मन्थर गति से चलती हुई मलयानिल और कोकिल की कुहू और उस वातावरण में हम दोनों की अठखेलियाँ, तथा गुलाल और अबीर की उड़ान का अब जितना स्मरण आता है उतना जब मैं अच्छा था तब मुझे न आता था। **(खाँसते खाँसते**

फिर रुक जाता है। कुछ ठहर कर) प्राणेश्वरी, मैं वे सारे सुख, सारे आनन्द फिर भोगना चाहता हूँ; लेकिन.... लेकिन प्रिये,.... **(चुप हो जाता है)**

पद्मा—(आँखें पोंछते हुए) लेकिन कुछ नहीं, हृदयेश्वर, आपके अच्छे होते ही हम वे सुख फिर भोगेंगे।

[कृष्णवल्लभ कोई उत्तर नहीं देता। थकावट के कारण पद्मा का हाथ छोड़कर आँखें बन्द कर लेता है।]

पद्मा—(खड़े होकर) क्यों, थकावट मालूम होती है?

कृष्णवल्लभ—यों ही थोड़ी सी।

पद्मा—मैंने कई दफ़ा कहा आप ज़्यादा न बोला करें।

कृष्णवल्लभ—तुमसे बोलकर, पुराने सुखों की याद कर, जो थोड़ा सा आनन्द मिल जाता है, उसे भी खो दूँ?

[पद्मा कोई जवाब नहीं देती। कृष्णवल्लभ भी कुछ नहीं बोलता। कुछ देर निस्तब्धता रहती है।]

कृष्णवल्लभ—प्रिये, एक बात जानती हो?

पद्मा—क्या, नाथ?

कृष्णवल्लभ—मेरे मन में जब जब यह उठता है कि मैं अच्छा न होऊँगा तब तब मेरे सामने एक चित्र खिंच जाता है।

पद्मा—आपके मन में ऐसी बात ही नहीं उठनी चाहिये।

कृष्णवल्लभ—उसे न मैं रोक सकता हूँ और न तुम। **(खाँसता है। कुछ रुककर)** मैं तुमसे एक प्रार्थना करता हूँ।

पद्मा—प्रार्थना? प्राणेश्वर, आप हमेशा आज्ञा दे सकते हैं।

कृष्णवल्लभ—पर तुम मानती कहाँ हो?

पद्मा—मैं आपकी आज्ञा नहीं मानती?

कृष्णवल्लभ—और सब बातों में मानती हो, पर एक मामले में नहीं।

पद्मा—किस में?

कृष्णवल्लभ—मेरे हृदय में जो कुछ उठता है उसे नहीं सुनतीं। हमेशा मेरी बात पूरी होने के पहले मुझे रोक देती हो। नतीजा यह निकलता है कि कह सुन कर मन की निकाल लेने से जो शान्ति मिलती है उससे भी मैं वञ्चित रह जाता हूँ।

पद्मा—तो आपकी वाहियात बातें भी सुना करूँ, उन बातों के बीच में भी आपको न रोकूँ?

कृष्णवल्लभ—प्रिये, तुम अनुमान नहीं कर सकतीं, बीमार की कल्पनाओं का; तुम अनुभव नहीं कर सकतीं उस शान्ति का जो उसे उन कल्पनाओं को अपने सबसे बड़े प्रेमी, अपने सर्वस्व के सामने व्यक्त करने में मिलती हैं।

पद्मा—**(लम्बी साँस लेकर)** अच्छी बात है हृदय पर पत्थर रखकर जो कुछ आप कहेंगे अब सब कुछ सुन लिया करूँगी।

कृष्णवल्लभ—**(कुछ ठहर कर)** मैं तुम से कह रहा था

कि जब जब मेरे मन में यह उठता है कि मैं अच्छा न होऊँगा तब तब मेरे सामने एक चित्र खिंच जाता है। जानती हो किसका ?

पद्मा—वृजमोहन जी का होगा।

कृष्णवल्लभ—नहीं।

पद्मा—तब ?

कृष्णवल्लभ—भाभी का।

पद्मा—(उत्तेजित होकर) उस कुलटा का, उस पापिनी का, जिसने उनकी बीमारी में भी अपने गुलछर्रे नहीं छोड़े, जिसने उनके मरते ही दूसरी शादी करने में देर न की ?

कृष्णवल्लभ—प्रिये, भाभी न कुलटा थी और न पापिनी।

पद्मा—उससे बड़ी कुलटा और उससे बड़ी पापिनी न मैंने देखी और न सुनी है।

कृष्णवल्लभ—पहले मैं भी ऐसा समझता था पर अब नहीं समझता।

पद्मा—तो अब आप उसे बड़ी साध्वी, बड़ी धर्मात्मा समझते हैं ?

कृष्णवल्लभ—कुलटा और पापिनी तो नहीं समझता। **(खांसता है। कुछ रुककर)** एक बात और कहूँ ?

पद्मा—सब कुछ सुनने का तो मैंने वचन दे ही दिया है।

कृष्णवल्लभ—अगर तुम वैसी होतीं तो मुझे आज अपनी बीमारी का इतना दुख न होता।

पद्मा—(आँखों में आँसू भर कर) नाथ, आप यह क्या कह रहे हैं? क्या कह रहे हैं?

[कृष्णवल्लभ कोई उत्तर न देकर खाँसने लगता है। कुछ देर निस्तब्धता रहती है।]

कृष्णवल्लभ—प्रिये, कभी कभी मुझे अपने से ज्यादा तुम्हारी चिन्ता हो जाती है। जब जब मेरे मन में उठता है कि मैं अच्छा न होऊँगा, तब तब मेरे जीने की इच्छा तो और प्रबल हो ही जाती है, तुम्हारे साथ भोगे हुए सुख भी याद आने लगते हैं, और उन्हें फिर से भोगने के लिये भी मैं अधीर हो उठता हूँ, तुम्हें छोड़कर जाना पड़ेगा शायद इसलिये जाने का मुझे इतना दुःख होता है, पर इन सब बातों के सिवा जिस चीज़ से मैं सबसे ज्यादा तलमला उठता हूँ, वह है तुम्हारी इस वक़्त की अवस्था, मेरे बाद तुम्हारा क्या होगा, इसकी कल्पना। काश तुम भी भाभी के समान हो जातीं तो मैं इस फ़िक्र से तो...

......

[कृष्णवल्लभ को खाँसी का ज़ोर से एटैक होता है। खाँसते खाँसते वह बैठ जाता है। पद्मा घबड़ाकर उसकी पीठ सुहलाती है। कुछ देर में उसकी खाँसी रुकती है और वह एकदम थककर लेट जाता है तथा आँखें बन्द कर लेता है। ज़ीने से चढ़कर स्वच्छ वस्त्रों में एक मुनीम का प्रवेश।]

मुनीम—श्रीनाथ द्वारे के समाधानी वहाँ के छप्पन भोग

का निमंत्रण और श्रीनाथ जी का बीड़ा लेकर पधारे हैं। यहीं सेवा में आना चाहते हैं।

कृष्णवल्लभ—(धीरे धीरे) मेरे बड़े भाग्य! ऐसे वक़्त श्रीनाथ जी का बीड़ा! उन्हें फ़ौरन ले आइये, मुनीम जी।

मुनीम—जैसी आज्ञा। (प्रस्थान)

कृष्णवल्लभ—(धीरे धीरे) श्रीनाथ द्वारे में छप्पन भोग है और मेरी बदक़िस्मती तो देखो, मुझे ही दर्शन न होंगे इतना ही नहीं, तुम भी न जा सकोगी।

[मुनीम के साथ समाधानी का प्रवेश। समाधानी करीब ५० वर्ष का ठिगना और मोटा आदमी है। शरीर पर लम्बी बगलबन्डी पहने है। सिर पर उदयपुरी पाग बाँधे है और गले में दुपट्टा डाले है। उसके हाथों में एक लिफ़ाफ़ा और वल्लभकुली बीड़ा है। कृष्णवल्लभ उठने का प्रयत्न करता है। पद्मा उसे सहारा देकर उठाती और पीछे तकिया लगाकर बैठाती है। वह समाधानी के हाथ जोड़ता है और खड़े होकर पद्मा भी।]

समाधानी—(नजदीक आते हुए) आयुष्मान, श्रीमान। सौभाग्य अचल होय, श्रीमती।

[नजदीक पहुँचकर समाधानी अपने हाथ का लिफ़ाफ़ा और बीड़ा कृष्णवल्लभ के हाथों में देता है। कृष्णवल्लभ उन्हें सिर व आँखों से लगाकर हृदय से लगाता है और फिर टेबिल पर रख देता है। सब लोग कुर्सियों पर बैठते हैं।]

समाधानी—श्रीमान की अस्वस्था के समाचार सूँ महाराज श्री कूँ अत्यन्त खेद भयो। मो कूँ या हेतु पठयो है कि श्रीमान कूँ आशीर्वाद सहित छप्पन भोग को निमंत्रण देऊँ और निवेदन करूँ कि श्रीनाथ जी आगे सुधि करंत हैं।

कृष्णवल्लभ—महाराज श्री के अनुग्रह के लिये कृतज्ञता के मेरे पास शब्द नहीं हैं, समाधानी जी। मुझ से तो उस घर के अनगिनती वैष्णव हैं और इतने पर भी महाराज श्री की मेरे पर यह कृपा! **(खाँसता है। कुछ रुककर)** समाधानी जी, महाराज श्री की इस अनुकम्पा से मुझे रोमांच हो रहा है।

समाधानी—आपके से अगणित वैष्णव! क्या कहें हैं, श्रीमान? आपसे तो आप ही हैं।

कृष्णवल्लभ—**(आँखों में आँसू भरकर)** कैसी मेरी बद-क़िस्मती कि जिस छप्पन भोग के दर्शन की अभिलाषा वर्षों से थी उसके मौक़े पर मेरा यह हाल है।

समाधानी—श्रीनाथ जी आपको शीघ्र स्वस्थ करिहैं। श्रीमान न पधार सकें तो श्रीमती जी।

कृष्णवल्लभ—**(पद्मा की तरफ़ देखकर)** ये....हाँ, ये ज़रूर जा सकती हैं। और अगर ये जायँ तो मुझे तो उससे जितनी ख़ुशी होगी उतनी किसी दूसरी चीज़ से हो नहीं सकती। **(कुछ खाँसकर)** छप्पन भोग का क्या कार्य-क्रम है, समाधानी जी?

समाधानी—पहले वर्ष भर के उत्सवन के मनोरथ होयँगे और अन्त में प्रभु छप्पन भोग आरोगेंगे। (पद्मा से) श्रीमती जी, आप अवश्य पधारें। महाराज श्री ने आज्ञा करी है कि श्रीमान न पधार सकें तो आपके पधारबे सूं महाराज श्री कूं परम हर्ष होयगो। आप पधारकर श्रीमान के स्वस्थ होयबे की प्रभु के सन्निधान में प्रार्थना करें। श्रीनाथ जी श्रीमान कूं शीघ्र ही स्वास्थ्य प्रदान करींहगे।

[पद्मा कोई जवाब नहीं देती। कृष्णवल्लभ पद्मा की ओर देखता है। कुछ देर निस्तब्धता रहती है।]

कृष्णवल्लभ—(मुनीम से) मुनीम जी, समाधानी जी थके माँदे आये हैं। आपको अतिथि-आलय में अच्छी तरह ठहराइए। महाराज की आज्ञा पर हम लोग विचार करेंगे। **(खाँसता है)**

मुनीम—जैसी आज्ञा।

[मुनीम और समाधानी उठते हैं।]

कृष्णवल्लभ—आज शाम को फिर दर्शन देने की कृपा कीजियेगा।

समाधानी—जैसी आज्ञा, श्रीमान।

[कृष्णवल्लभ और पद्मा हाथ जोड़ते हैं। समाधानी हाथ उठाकर आशीर्वाद देता है। मुनीम और समाधानी का प्रस्थान। कृष्णवल्लभ खाँसता है और लेटने लगता है। पद्मा उठकर टिकने के तकिये हटा उसे सहारा देकर

लेटाती और फिर कुर्सी पर बैठती है। कुछ देर निस्तब्धता रहती है।]

कृष्णवल्लभ—प्रिये !

पद्मा—प्राणनाथ !

कृष्णवल्लभ—तुम्हारी जाने की इच्छा है ?

पद्मा—आपको इस हालत में छोड़कर ?

कृष्णवल्लभ—बहुत दिन का काम तो है नहीं।

पद्मा—लेकिन मैं तो एक मिनिट के लिये भी आपको नहीं छोड़ सकती।

कृष्णवल्लभ—प्राणप्यारी, अर्धकुम्भ पर जब हम हरिद्वार न जा सके थे तब हमने कुम्भ पर जाने का निश्चय किया था। कुम्भ के मौक़े पर ही मैं बीमार पड़ा। **(खांसता है। कुछ ठहर कर)** तुम्हें बहुत समझाया तुम नहीं गईं। अब श्रीनाथ जी के छप्पन भोग का उत्सव है। हर दफ़ा ऐसे मौक़े नहीं आते।

पद्मा—लेकिन, प्राणनाथ, मैं आपको कैसे छोड़ सकती हूं ?

कृष्णवल्लभ—डाक्टर दोनों वक़्त आते हैं, तुम्हारी ग़ैरहाज़िरी में नर्स का इन्तज़ाम हो जायगा। श्रीनाथ जी का छप्पन भोग है, प्राणप्यारी, महाराज श्री ने कृपा कर समाधानी के हाथ निमन्त्रण भेजा है, श्रीनाथ जी ने सुधि ली है, महाराज श्री ने आज्ञा दी है।

[पद्मा कोई उत्तर नहीं देती। कृष्णवल्लभ खाँसता है। कुछ देर निस्तब्धता रहती है।]

कृष्णवल्लभ—पन्द्रह बीस दिन से ज्यादा नहीं लगेंगे, प्रिये।

[पद्मा फिर भी कोई उत्तर नहीं देती। कृष्णवल्लभ पद्मा की तरफ़ देखता है। कुछ देर फिर निस्तब्धता रहती है।]

कृष्णवल्लभ—प्रिये, मेरी एक प्रार्थना मानोगी ?

पद्मा—फिर वही बात, नाथ ? प्रार्थना ? आप आज्ञा दें।

कृष्णवल्लभ—(खाँसकर) तो मैं आज्ञा देता हूँ, प्राण-प्यारी, तुम जाओ; श्रीनाथ द्वारे जरूर जाओ; जरूर।

[पद्मा कोई जवाब नहीं देती। उसकी आँखों में आँसू भर आते हैं।]

कृष्णवल्लभ—प्रिये, श्रीनाथ जी के सन्निधान में मेरे स्वस्थ होने के लिये, अपने सौभाग्य के लिये, प्रार्थना.... प्रार्थना करना, प्राणप्यारी। (आँसू भर आते हैं।)

[पद्मा रो पड़ती है। कृष्णवल्लभ को फिर जोर से खांसी का एटैक होता है।]

यवनिका-पतन

उपसंहार

स्थान—कृष्णवल्लभ के मकान का बरामदा

समय—सन्ध्या

[दृश्य वैसा ही है जैसा उपक्रम में था। उदय होते हुए सूर्य के स्थान पर डूबते हुए सूर्य की किरणें बाहर के उद्यान को रंग रही हैं। एक तरफ़ पद्मा के दो सूट केस, होल्ड ऑल, टिफ़िन कैरियर, सुराही इत्यादि सामान बँधा हुआ रखा है। पद्मा अपने सामान को देख रही है। उसने फिर से रेशमी साड़ी, ब्लाउज, रत्न जटित आभूषण धारण कर लिये हैं। उसका मुख प्रसन्न तो नहीं कहा जा सकता, लेकिन उसपर उस तरह का शोक और चिन्ता का साम्राज्य नहीं है, जैसा मुख्य दृश्य में था। भविष्य के सुख की एक प्रकार की उत्कण्ठा उसके मुख पर दीख रही है। भारती का प्रवेश। वह वैसी ही दिखती है जैसे उपक्रम में थी।]

पद्मा—(भारती के आने की आहट पाकर उस तरफ़ देख तथा भारती को आते हुए देखकर उसी तरफ़ बढ़ते हुए) ओ, भारती बहन, आओ, बैठो, बहन।

[भारती और पद्मा दोनों कुर्सियों पर बैठ जाती हैं।]

भारती—श्रीनाथ द्वारे जा रही हो, बहन ?

पद्मा—(दाहिनी तरफ़ से बग़ीचे की ओर देखते हुए) हाँ, वहाँ छप्पन भोग का उत्सव है, वे मुझे भेज रहे हैं।

भारती—वे तुम्हें भेजकर बिलकुल ठीक काम कर रहे हैं और तुम जाकर भी सर्वथा उचित बात कर रही हो।

पद्मा—**(भारती की तरफ़ देखकर)** ऐसा ?

भारती—बिलकुल। छप्पन भोग के अवसर पर तो वल्लभकुल सम्प्रदाय में वर्ष भर के सभी उत्सवों के मनोरथ होते हैं न ?

पद्मा—हाँ !

भारती—तुम्हें और कृष्णवल्लभ जी को वर्षा और वसंत बहुत प्रिय थे। श्रीनाथ द्वारे में सावन का हिण्डोलोत्सव, वसन्त का फूलडोल, और भी अनेक उत्सवों के दर्शन, नित्य-प्रति होने वाले रास और गायन आदि से दृश्येन्द्रिय और श्रवणेन्द्रिय को तृप्ति मिलेगी। महाप्रसाद से जिह्वा को शान्ति प्राप्त होगी। अधिकांश इन्द्रियाँ सन्तुष्ट हो जांयगी। हर तरह से मन बहलेगा। इहलोक और परलोक दोनों सुधरेंगे।

पद्मा—**(भर्राये हुए स्वर में)** बहन....बहन....

भारती—बहन, बरदाश्त करने की भी हद होती है। सहन-शक्ति सीमा-रहित नहीं है। बीमार के साथ बिना किसी बीमारी के कोई बहुत दिन तक बीमार से भी बदतर हालत में नहीं रह सकता। मृत के साथ जीवित अपने को मृत नहीं समझ सकता। आदर्श

की बात दूसरी है। बहन, मानव....मानव-मन...
यह मानव-मन......

यवनिका-पतन

समाप्त

मैत्री

पात्र, स्थान

पात्र

निर्म्मलचन्द्र

विनयमोहन

शान्तिप्रकाश

स्थान—एक नगर

मैत्री

उपक्रम

स्थान—निर्म्मलचन्द्र के मकान का बैठकखाना

समय—प्रातःकाल

[बैठकखाने के तीन तरफ़ की दीवालें दिखती हैं, जो सफ़ेद कलई से पुती हैं। पीछे की दीवाल में तीन खिड़कियाँ हैं, जो खुली हुई हैं। इनसे बाहर के छोटे से बग़ीचे का कुछ हिस्सा दिखाई देता है, जो डूबते हुए सूर्य की सुनहरी किरणों से रंग रहा है। दोनों ओर की दीवालों के सिरे पर एक एक दरवाज़ा है। बाँई तरफ़ की दीवाल का दरवाज़ा एक दूसरे कमरे में खुला है, जिससे उसका कुछ भाग दिखाई देता है। इस कमरे में एक पलंग तथा कुछ कुर्सियाँ, कपड़े टाँगने की खूँटियों का स्टैन्ड आदि रखे हैं, जिससे यह कमरा सोने का कमरा जान पड़ता है। दाहनी तरफ़ की दीवाल का दरवाज़ा बाहर के बग़ीचे में खुला है जिससे बग़ीचे का कुछ हिस्सा दीख पड़ता है। बैठकखाना की ज़मीन पर दरी बिछी हुई है। उसके ऊपर पीछे की दीवाल से सटा हुआ एक तख़त रखा है, जिस पर गद्दा बिछा है और उस पर

तकिये लगे हैं। बीच में एक गोल टेबिल है, जो टेबिल क्लाथ से ढकी है। इस टेबिल के चारों ओर बेत से बुनी हुई कुछ कुर्सियाँ रखी हैं। बैठकखाने की सीलिंग से बिजली की दो बत्तियाँ झूल रही हैं। मकान और मकान की सजावट देखने से जान पड़ता है कि मकान किसी मध्यम श्रेणी के व्यक्ति का है। तख़त पर निर्म्मलचन्द्र और विनयमोहन बैठे हुए हैं। दोनों की अवस्था करीब २४, २५ वर्ष की है। रंग दोनों का गेहुआँ है। दोनों साधारण उँचाई और शरीर के व्यक्ति हैं। दोनों के बाल अंग्रेज़ी ढंग से कटे हैं। निर्म्मलचन्द्र के छोटी छोटी मूंछें हैं और विनयमोहन हैं क्लीनशेव्ड। दोनों सफ़ेद कुरता और धोती पहने हुए हैं।]

निर्म्मलचन्द्र—विनय !

विनयमोहन—निर्म्मल !

निर्म्मलचन्द्र—क्यों, विनय, अब तक की अपनी ज़िन्दगी के लिये तो हम दोनों अंग्रेज़ी के इस सेन्टेन्स का उपयोग कर सकते हैं न—'आवर लाइफ़ इज़ ए रैग्युलर फ़ीस्ट।'

विनयमोहन—बेशक। और, निर्म्मल, इसका सबब ?

निर्म्मलचन्द्र—हमारा साथ।

विनयमोहन—और उसमें निर्म्मल की निर्म्मलता।

निर्म्मलचन्द्र—विनय की विनय नहीं ?

विनयमोहन—निर्म्मलता विना विनय नहीं रह सकती।

निर्म्मलचन्द्र—विनय बिना निर्म्मलता नहीं।

विनयमोहन—(मुस्कराकर) निर्म्मल और विनय एक दूसरे के विना रह ही नहीं सकते।

[दोनों हँस पड़ते हैं।]

निर्म्मलचन्द्र—क्यों, विनय, ऐसी मैत्री कहीं देखी?

विनयमोहन—देखी क्या, सुनी भी नहीं।

निर्म्मलचन्द्र—सुनी क्या, कहीं के लिटरेचर तक में नहीं पढ़ी।

विनयमोहन—हम लोगों ने अपनी मैत्री की तारीफ़ कितनी दफ़ा की होगी?

निर्म्मलचन्द्र—हमें इससे जितना आनन्द मिलता है उतना किसी दूसरी बात से मिलता ही नहीं।

विनयमोहन—ग़नीमत यही है कि किसी दूसरे के सामने हम यह नहीं करते।

निर्म्मलचन्द्र—दूसरे कर देते हैं, इसलिये हमें इसकी ज़रूरत ही नहीं पड़ती।

[दोनों फिर हँस पड़ते हैं।]

विनयमोहन—तुम्हें यह चौबीसवाँ साल है न?

निर्म्मलचन्द्र—जो तुम्हें है वही मुझे।

विनयमोहन—और हमारे साथ को हो गये बीस वर्ष।

निर्म्मलचन्द्र—चौबीस हो गये यह भी कह सकते हो।

विनयमोहन—यों तो फिर सैकड़ों, हज़ारों, लाखों और करोड़ों कहने पड़ेंगे।

निर्म्मलचन्द्र—हाँ, क्योंकि अगणित जन्मों के साथ विना ऐसी मैत्री कब हो सकती है।

विनयमोहन—जो कुछ हो, जब से होश है, तभी से संग है।

निर्म्मलचन्द्र—और वह ऐसा वैसा नहीं, चौबीसों घन्टों का।

विनयमोहन—निर्म्मल, हमारी बालक्रीड़ा, हमारे स्कूल और कालेज के दिन, आज तक का सारा जीवन हमारी निधि है।

निर्म्मलचन्द्र—मैंने कहा न 'आवर लाइफ़ इज़ ए रैग्युलर फ़ीस्ट।'

विनयमोहन—और, निर्म्मल, जिन बातों की मुझमें कमी है, वे तुम में हैं और जिनकी तुम में कमी है वे मुझ में हैं।

निर्म्मलचन्द्र—सच तो यह है कि हम दोनों मिलकर एक होता है।

विनयमोहन—अब तक हमारे जीवन का सुख, हमारी सफलता सब कुछ हमारे साथ, हमारी मैत्री के कारण है।

निर्म्मलचन्द्र—और हमारा भविष्य भी इसी पर निर्भर है।

विनयमोहन—हाँ, दुनिया के संघर्ष में तो अब हमारा प्रवेश होगा।

निर्म्मलचन्द्र—उस संघर्ष में अपने और अपने देश के उत्कर्ष के लिये यही मैत्री, यही साथ, हमारा ध्रुव नक्षत्र होगा।

[दोनों कुछ देर को चुप हो जाते हैं।]

निर्म्मलचन्द्र—एक बात जानते हो, विनय ?

विनयमोहन—क्या, निर्म्मल ?

निर्म्मलचन्द्र—चीन के महापुरुष कन्फ़्यूशियस का एक उपदेश आज तक मेरे सामने रहा है और भविष्य में भी रहेगा।

विनयमोहन—कौनसा ?

निर्म्मलचन्द्र—'दिन में तीन वार अपने आपको जाँच कर देखो कि तुमने अपने सच्चे मित्र के लिये सचाई और ईमानदारी से सब कुछ किया है या नहीं।'

विनयमोहन—और जानते हो मेरे सामने क्या रहा है और रहेगा ?

निर्म्मलचन्द्र—क्या ?

विनयमोहन—किसी देश की एक प्रावर्ब।

निर्म्मलचन्द्र—कौनसी ?

विनयमोहन—'जिस प्रकार अग्नि को प्रज्वलित रखने के लिये ईंधन की जरूरत रहती है उसी तरह मैत्री रूपी अग्नि को जीवित रखने के लिये मित्र के प्रति त्याग रूपी आहुति की।'

निर्म्मलचन्द्र—(विनयमोहन की तरफ़ एक टक देखते हुए गद गद स्वर से) विनय !

विनयमोहन—(उसी प्रकार एक टक निर्म्मलचन्द्र की ओर देखते हुए) निर्म्मल !

X

यवनिका-पतन

मुख्य दृश्य

स्थान—निर्म्मलचन्द्र के मकान का बैठकखाना

समय—सन्ध्या

[दृश्य वैसा ही है जैसा उपक्रम में था। कमरे का सब सामान करीब करीब वैसा ही है। दीवालों पर कांग्रेस नेताओं के चित्र लग गये हैं। निर्म्मलचन्द्र और विनयमोहन तख़्त पर बैठे हुए हैं। अब दोनों खादी के कुरते और धोती पहने हुए हैं। दोनों की अवस्था कुछ बढ़ गई है, जो उनकी बढ़ी हुई मूंछों से मालूम होती है। दोनों के मुख पर अशान्ति दृष्टिगोचर होती है। निर्म्मलचन्द्र खिड़की से बाहर बग़ीचे की तरफ़ देख रहा है और विनयमोहन दाहनी ओर की दीवाल के दरवाज़े से बाहर की तरफ़। कुछ देर निस्तब्धता रहती है। कुछ देर बाद विनयमोहन खड़े होकर दाहनी तरफ़ के दरवाज़े की ओर जाता है। निर्म्मलचन्द्र विनयमोहन की

तरफ़ देखता है। विनयमोहन कुछ देर उस दरवाजे पर खड़े खड़े बाहर की तरफ़ देखता है फिर लौटकर अपने स्थान पर बैठ जाता है। निर्म्मलचन्द्र उसके लौटते ही उसकी तरफ़ से दृष्टि हटा कर फिर खिड़की से बाहर की ओर देखने लगता है।]

निर्म्मलचन्द्र—(बाहर की तरफ़ देखते हुए) क्यों, विनय, प्रतीक्षा का टाइम निकालने में इतनी मुश्किल पड़ रही है?

विनयमोहन—(दाहनी तरफ़ के दरवाजे की तरफ़ ही देखते हुए) नहीं, ऐसी तो कोई बात नहीं है।

[दोनों फिर चुप हो जाते हैं। कुछ देर निस्तब्धता रहती है।]

विनयमोहन—(निर्म्मलचन्द्र की ओर दृष्टि घुमाकर) हम लोगों की बातचीत तो कभी खत्म ही न होती थी, आज हो गई क्या?

निर्म्मलचन्द्र—(विनयमोहन की तरफ़ देखकर) हमारी बात कभी खत्म हो सकती है?

विनयमोहन—फिर चुप क्यों हो?

निर्म्मलचन्द्र—(फिर खिड़की से बग़ीचे की तरफ़ देखते हुए) और तुम तो बहुत बोल रहे हो?

[विनयमोहन कोई उत्तर न देकर फिर दाहनी तरफ़ की दीवाल के दरवाजे से बाहर की ओर देखने लगता है। कुछ देर फिर निस्तब्धता रहती है।]

निर्म्मलचन्द्र—विनय, एक बात पूछूं ?

विनयमोहन—(**निर्म्मलचन्द्र की तरफ़ देखते हुए**) यह पूछने की ज़रूरत है ?

निर्म्मलचन्द्र—(**विनयमोहन की ओर दृष्टि घुमा**) तुम इतने अधीर क्यों हो ?

विनयमोहन—मैं अधीर हूँ ?

निर्म्मलचन्द्र—क्या मैं तुम्हें इतने वर्षों के बाद इतना भी नहीं पहचान पाया हूँ ?

विनयमोहन—और तुम वैसे ही हो, जैसे हमेशा रहते थे?

निर्म्मलचन्द्र—नहीं, मैं भी वैसा नहीं हूँ, पर तुमसा अधीर भी नहीं।

विनयमोहन—तो हम दोनों ही जैसे थे वैसे नहीं हैं, यह तो निश्चित हो गया।

निर्म्मलचन्द्र—सच बात को मंज़ूर करना ही चाहिये।

विनयमोहन—और इसका सबब ?

निर्म्मलचन्द्र—म्युनिस्पैलटी की प्रेसीडेन्टी का चुनाव, क्यों ?

[दोनों फिर चुप हो जाते हैं। कुछ देर तक निस्तब्धता रहती है।]

निर्म्मलचन्द्र—मानते हो न ?

विनयमोहन—तुमने कहा न, सच बात को मंज़ूर करना ही चाहिए।

निर्म्मलचन्द्र—धन्यवाद।

विनयमोहन—मुझे धन्यवाद !

निर्म्मलचन्द्र—(**कुछ मुस्कराकर**) अच्छा, भाई, वापस लेता हूँ।

विनयमोहन—(**मुस्कराकर**) धन्यवाद।

निर्म्मलचन्द्र—(**मुस्कराकर**) बदला लेते हो ! (**कुछ रुक कर**) खैर। (**फिर कुछ रुककर**) क्यों, विनय, तुम यह जानते हो कि या तो मैं प्रेसीडेन्ट चुना जाऊँगा या तुम, फिर भी तुम इतने अधीर क्यों हो ?

विनयमोहन—और तुम भी यह बात जानते हो, फिर तुम भी वैसे ही क्यों नहीं हो जैसे हमेशा रहते थे ?

निर्म्मलचन्द्र—मैं ? . . . . मैं . . . . (**कुछ रुककर विचार करते हुए**) मैं शायद इसलिये वैसा नहीं हूँ कि अगर मैं चुन गया और तुम न चुने गये तो . . . . तो तुम्हें . . . . तुम्हें किसी तरह की . . . . किसी तरह की ठेस . . . . ठेस तो नहीं पहुँचेगी !

विनयमोहन—तुम्हारे चुने जाने पर मुझे ठेस पहुँचेगी ! निर्म्मल, तुम मेरे साथ अन्याय, घोर अन्याय, कर रहे हो।

निर्म्मलचन्द्र—हो सकता है। अच्छा अब तुम बताओ कि तुम इतने अधीर क्यों हो ?

विनयमोहन—मैं ? (**कुछ विचार करते हुए**) मैं भी शायद इसीलिये इतना अधीर हूँ कि कहीं मैं चुन लिया गया और

तुम न चुने गये तो तुम्हारे हृदय पर तो कोई चोट न लगेगी ?

निर्म्मलचन्द्र—तो तुम भी मेरे साथ उसी तरह का अन्याय कर रहे थे जैसा मैं तुम्हारे साथ।

विनयमोहन—तो हम दोनों ने एक दूसरे के साथ अन्याय किया ?

निर्म्मलचन्द्र—घोर अन्याय !

विनयमोहन—इस पाप का प्रायश्चित्त ?

निर्म्मलचन्द्र—प्रायश्चित्त ? **(कुछ विचारकर)** यही प्रायश्चित्त है कि जो न चुना जाय वह यह सोचे कि जो चुना गया है, वह नहीं, पर यथार्थ में जो नहीं चुना गया है, वह चुना गया है।

विनयमोहन—**(गद गद स्वर से)** निर्म्मल, तुमने सच्चा प्रायश्चित्त बताया।

निर्म्मलचन्द्र—विनय, तुम में और मुझ में अभी भी कोई अन्तर रह गया है ?

विनयमोहन—कदापि नहीं।

निर्म्मलचन्द्र—हम दोनों एक प्राण दो देह हैं।

विनयमोहन—अवश्य।

निर्म्मलचन्द्र—ऐसी मैत्री कहीं देखी ?

विनयमोहन—देखी क्या सुनी भी नहीं।

निर्म्मलचन्द्र—सुनी क्या, कहीं के लिटरेचर तक में नहीं पढ़ी।

विनयमोहन—'आवर लाइफ़ इज़ ए रेग्युलर फ़ीस्ट।'

निर्म्मलचन्द्र—आफ़ कोर्स, 'आवर लाइफ़ इज़ ए रेगु-लर फ़ीस्ट।'

विनयमोहन—(एकटक निर्म्मलचन्द्र की ओर देखते हुए गद गद स्वर से) निर्म्मल!

निर्म्मलचन्द्र—(उसी तरह विनयमोहन को तरफ़ देखते हुए) विनय!

[शान्तिप्रकाश का दाहनी तरफ़ के दरवाज़े से प्रवेश। शान्तिप्रकाश करीब ४० वर्ष का साँवले रंग का कुछ ठिंगना और मोटा आदमी है। वह खादी की काले रंग की शेरवानी और खादी का सफ़ेद चूड़ीदार पाजामा पहने है। सिर पर गान्धी टोपी और पैरों में फ़ीतेदार शू हैं। उसे देखकर निर्म्मलचन्द्र और विनयमोहन दोनों खड़े हो जाते हैं। दोनों के मुखों पर फिर से अशान्ति दिखाई देने लगती है। दोनों, दोनों हाथों से शान्तिप्रकाश का अभिवादन करते हैं। शान्तिप्रकाश भी हाथ जोड़ता है। और तीनों तख़त पर बैठते हैं।]

निर्म्मलचन्द्र—कहिये, पार्टी ने क्या निर्णय किया?

शान्तिप्रकाश—(मुस्कराते हुए) आप दोनों तो चले आये।

विनयमोहन—हाँ, हम लोगों का पर्सनल सवाल था। इसलिये हमने न ठहरना ही मुनासिव समझा।

शान्तिप्रकाश—ठीक ही था। **(कुछ रुककर)** आपको पार्टी का निर्णय सुनकर शायद ताज्जुब होगा।

निर्म्मलचन्द्र
विनयमोहन } —**(एक साथ ही अधीरता से)**—कैसा ?

शान्तिप्रकाश—**(मुस्कराकर)** पार्टी ने निश्चय किया है कि चूंकि आप दोनों की सेवायें एक सी हैं, इसलिये पार्टी आप दोनों को समान दृष्टि से देखती है, और दोनों में से प्रेसीडेन्ट कौन हो, इसका निर्णय आप दोनों पर ही छोड़ती है।

निर्म्मलचन्द्र
विनयमोहन } —**(एक साथ ही)** यह कैसे हो सकता है ?

शान्तिप्रकाश—क्यों, आप दोनों आपस में तय कर लें और एक नाम पार्टी के पास भेज दें। मैं तो समझता हूँ, बड़ी सरलता से निर्णय हो जायगा। आप दोनों को इसके निपटारा करने में क्या दिक़्क़त हो सकती है ?

[निर्म्मलचन्द्र और विनयमोहन कुछ न कहकर एक दूसरे की तरफ़ देखते हैं और शान्तिप्रकाश कभी निर्म्मलचन्द्र की ओर तथा कभी विनयमोहन की तरफ़। कुछ देर निस्तब्धता रहती है।]

शान्तिप्रकाश—कल प्रातःकाल नौ बजे फिर पार्टी की मीटिंग है, आपका निर्णय पार्टी के पास उस वक़्त तक पहुँच जाना चाहिए।

निर्म्मलचन्द्र—(कुछ विचारते हुए) लेकिन शान्तिप्रकाश जी. . . . (चुप हो जाता है।)

विनयमोहन—(कुछ विचारते हुए) हाँ, शान्तिप्रकाश जी. . . . (चुप हो जाता है।)

शान्तिप्रकाश—(खड़े होते हुए) मुझे इस वक्त इजाज़त दीजिए, जिससे आप दोनों को एकान्त में इस निर्णय करने के लिये समय मिल सके।

[निर्म्मलचन्द्र और विनयमोहन खड़े हो जाते हैं। शान्तिप्रकाश दोनों का अभिवादन कर जाने लगता है। दोनों बिना एक शब्द भी कहे उसे दरवाज़े तक पहुँचाते और अभिवादन के साथ उसे रुख़सत कर धीरे धीरे वापस आ तख़्त पर बैठते हैं। दोनों में से एक, एक खिड़की से और दूसरा दूसरी खिड़की से बग़ीचे की तरफ़ देखने लगता है। कोई कुछ नहीं बोलता, परन्तु दोनों के मुखों से जान पड़ता है कि उनके हृदयों में तूफ़ान का समुद्र लहरा रहा है। कुछ देर निस्तब्धता रहती है।]

निर्म्मलचन्द्र—विनय!

[विनयमोहन चौंकसा पड़ता है मानो उसे किसी अपरिचित व्यक्ति ने सोते से जगाया हो।]

विनयमोहन—(भर्राये हुए स्वर में) हाँ, निर्म्मल।

निर्म्मलचन्द्र—अरे तुम तो चौंक पड़े?

विनयमोहन—(उसी प्रकार के स्वर में) नहीं तो।

[दोनों फिर चुप हो जाते हैं। कुछ देर फिर निस्तब्धता रहती है।]

विनयमोहन—निर्म्मल !

[इस वार निर्म्मलचन्द्र चौंक पड़ता है, मानो उसे किसी ने डरा दिया हो।]

निर्म्मलचन्द्र—(भर्राये हुए स्वर में) हाँ, विनय।

विनयमोहन—इस वार तुम चौंक पड़े, निर्म्मल।

निर्म्मलचन्द्र—(उसी स्वर में) ऐसा ?

विनयमोहन—अवश्य।

[दोनों फिर चुप हो जाते हैं। कुछ देर निस्तब्धता रहती है।]

निर्म्मलचन्द्र—(विनयमोहन की तरफ़ देखकर) देखो।

विनयमोहन—(थोड़ासा चौंकते हुए, निर्म्मलचन्द्र की ओर देख) कहो।

निर्म्मलचन्द्र—(अत्यन्त दबे हुए स्वर से) प्रेसीडेन्ट होना तुम मंजूर करो।

विनयमोहन—मैं ? क्यों ? तुम क्यों नहीं ?

निर्म्मलचन्द्र—और मैं क्यों; तुम क्यों नहीं ?

[दोनों फिर चुप रह जाते हैं और खिड़कियों से बाहर की तरफ़ देखने लगते हैं। फिर कुछ देर निस्तब्धता रहती है।]

विनयमोहन—(निर्म्मलचन्द्र की ओर देखकर) एक बात पूछूँ, निर्म्मल ?

निर्म्मलचन्द्र—यह पूछने की आवश्यकता है ?

विनयमोहन—यह पद तुमने मुझे इतने दवे हुए स्वर से क्यों ऑफ़र किया ?

निर्म्मलचन्द्र—**(विनयमोहन की तरफ़ दृष्टि घुमाकर अपने स्वाभाविक स्वर में वोलने का प्रयत्न करते हुए)** दवे हुए स्वर से ?

विनयमोहन—क्या मैं इतनी सालों के वाद तुम्हारा स्वर भी नहीं पहचानता ?

[निर्म्मलचन्द्र कोई उत्तर नहीं देता। कुछ देर निस्तब्धता रहती है।]

विनयमोहन—निर्म्मल, तुम्हें मेरा अधैर्य खला था। जव मैंने तुमसे कहा कि तुम भी वैसे नहीं हो जैसे थे, और उसका कारण पूछा, तव तुमने कहा कि तुम शायद इसलिये वैसे नहीं हो कि अगर तुम चुन लिये गये और मैं न चुना गया तो मेरे मन पर ठेस न पहुँचे। क्या मैं पूछूं कि मुझे प्रेसीडेन्टी ऑफ़र करते हुए तुम्हें इतना दुख क्यों हो रहा है ?

निर्म्मलचन्द्र—तुम्हें प्रेसीडेन्टी ऑफ़र करते हुए मुझे दुख हो रहा है ?

विनयमोहन—**(कठोर स्वर से)** तुम इस वात से इन्कार नहीं कर सकते।

निर्मलचन्द्र—**(कुछ ठहर कर घृणा भरे स्वर से)** तो क्या मैं भी पूछूं कि पार्टी ने किसे प्रेसीडेन्ट चुना, और तुम्हें

चुना या नहीं, यह जानने के लिये तुम इतने अधीर क्यों थे ?

विनयमोहन—(दृढ़ता से) मैं क्यों अधीर था और क्यों नहीं, इसका फ़ैसला हो चुका है, लेकिन तुम्हारे प्रस्ताव में क्यों दुख था, इसका निर्णय होना बाक़ी है।

[निर्म्मलचन्द्र कोई उत्तर नहीं देता और खिड़की से बाहर की तरफ़ देखने लगता है। विनयमोहन निर्म्मलचन्द्र की ओर देखता है। कुछ देर निस्तब्धता रहती है।]

निर्म्मलचन्द्र—(विनयमोहन की तरफ़ देखते हुए) मेरे ऑफ़र में क्यों दुख था, यह जानना चाहते हो ?

विनयमोहन—अवश्य।

निर्म्मलचन्द्र—(दृढ़ता से) इसलिये कि मेरे प्रेसीडेन्ट होने से तुम्हें दुख होता, इसलिये कि तुम प्रेसीडेन्ट होने के लिये प्राण दे रहे हो।

विनयमोहन—(क्रोध से) इसलिये नहीं, इसलिये कि मैं अगर प्रेसीडेन्ट हो गया तो तुम न हो पाओगे।

निर्म्मलचन्द्र—(अत्यन्त क्रोध से) विनय !

विनयमोहन—(और भी अधिक क्रोध से) निर्म्मल !

[दोनों एक साथ लम्बी साँस लेकर खिड़कियों से बाहर देखने लगते हैं। कुछ देर फिर निस्तब्धता रहती है।]

निर्म्मलचन्द्र—(बाहर की तरफ़ ही देखते हुए) एक बात जानते हो ?

विनयमोहन—क्या ?

निर्म्मलचन्द्र—(अत्यन्त घृणा से) तुम में इतने दोष हैं कि तुमसे प्रेसीडेन्टी एक दिन न चलेगी।

विनयमोहन—(और भी अधिक घृणा से) और तुम्हारे दोषों की तो गिनती ही नहीं है। तुमसे तो वह एक क्षण नहीं चल सकती।

निर्म्मलचन्द्र—(अत्यन्त क्रोध से चिल्लाकर) बस, विनय, बहुत हुआ।

विनयमोहन—(और भी ज्यादा क्रोध से गरजकर) मैंने भी बहुत बर्दाश्त कर ली।

[दोनों फिर चुप हो जाते हैं। और लम्बी साँसें लेने लगते हैं।]

विनयमोहन—(एकाएक खड़े होकर) अपने रूफ़ के अन्डर आपने मेरा काफ़ी अपमान किया है। मैं अब आपसे इजाज़त चाहता हूँ।

[निर्म्मलचन्द्र कोई उत्तर नहीं देता और विनयमोहन जल्दी जल्दी दाहनी तरफ़ के दरवाज़े से चला जाता है।]

यवनिका-पतन

उपसंहार

स्थान—निर्म्मलचन्द्र के मकान का बैठकखाना

समय—प्रातःकाल

[दृश्य वैसा ही है जैसा मुख्य दृश्य में था। निर्म्मलचन्द्र अकेला तख़त पर बैठा हुआ ग़ौर से एक चिट्ठी पढ़ रहा है। विनयमोहन का एक चिट्ठी हाथ में लिये हुए प्रवेश।]

विनयमोहन—निर्म्मल, मैं तुमसे क्षमा माँगने आया हूँ।

निर्म्मलचन्द्र—(खड़े होकर) और मैं तुमसे माफ़ी माँगने आ रहा था, विनय।

[दोनों तख़त पर बैठ जाते हैं।]

विनयमोहन—(**अपने हाथ की चिट्ठी निर्म्मलचन्द्र को देते हुए**) इस चिट्ठी को पढ़ोगे ?

निर्म्मलचन्द्र—(**अपने हाथ की चिट्ठी विनयमोहन को देते हुए**) और तुम इस चिट्ठी को देखोगे ?

[विनयमोहन निर्म्मलचन्द्र की चिट्ठी ले लेता है और निर्म्मलचन्द्र विनयमोहन की। दोनों चिट्ठियों को पढ़ते हैं चिट्ठियों को पढ़ने के बाद एक साथ।]

निर्म्मलचन्द्र—विनय !

विनयमोहन—निर्म्मल !

निर्म्मलचन्द्र—विनय, भगवान को साक्षी देकर कहता हूँ कि मैं प्रेसीडेन्ट नहीं होना चाहता, और जैसा मैंने पार्टी को अपनी चिट्ठी में लिखा है, मैं हृदय से चाहता हूँ कि यह पद तुम्हें मिले।

विनयमोहन—और, निर्म्मल, मैं भी भगवान को साक्षी देकर कहता हूँ कि मैं भी प्रेसीडेन्ट नहीं होना चाहता, और

जैसा मैंने पार्टी को अपने पत्र में लिखा है, मैं अन्तःकरण से चाहता हूँ कि यह पद तुम सुशोभित करो।

निर्म्मलचन्द्र—ऐसा कभी नहीं हो सकता।

विनयमोहन—तो जो तुम चाहते हो वह भी कभी नहीं हो सकता।

निर्म्मलचन्द्र—मेरा कहना नहीं मानोगे?

विनयमोहन—और तुम मेरा कहना न मानोगे?

निर्म्मलचन्द्र—ज़िद्द न करो।

विनयमोहन—तुम भी हठ न करो।

निर्म्मलचन्द्र—विनय!

विनयमोहन—निर्म्मल!

[दोनों चुप होकर एक दूसरे को देखते हैं।]

निर्म्मलचन्द्र
विनयमोहन }—(एक साथ) तब?

[कुछ देर फिर दोनों चुप रहते हैं।]

निर्म्मलचन्द्र
विनयमोहन }—(एक साथ) तुम्हें मंजूर करना ही होगा।

[कुछ देर फिर दोनों चुप रहते हैं।]

निर्म्मलचन्द्र—देखो, विनय, मैं अपने सम्बन्ध को इस प्रेसीडेन्टशिप से कहीं बड़ी चीज समझता हूँ।

विनयमोहन—और मैं यह प्रेसीडेन्टशिप तो दूर रही, भारतीय साम्राज्य की प्रेसीडेन्टी, और भारतीय साम्राज्य

की प्रेसीडेन्टी भी दूर रही, अगर सारे संसार का फ़ैडरेशन बने और उसकी प्रेसीडेन्टी मिले तो, उससे भी अपनी मैत्री को बड़ी चीज़ समझता हूँ।

निर्म्मलचन्द्र—क्षणिक आवेश की बात दूसरी है, मैं इसे जानता हूँ, विनय।

विनयमोहन—जो तुमने कहा मैं उसे दुहराता हूँ, निर्म्मल।

निर्म्मलचन्द्र—इसीलिये जो कुछ कल हुआ उसे देखते हुए मैं इस पद को कभी मंजूर नहीं कर सकता।

विनयमोहन—तुमने मेरे मुख के शब्द छीन लिये। और मैं कर सकता हूँ?

[दोनों चुप रहते हैं। कुछ देर निस्तब्धता रहती है।]

निर्म्मलचन्द्र—विनय!

विनयमोहन—निर्म्मल!

[फिर दोनों चुप हो जाते हैं।]

निर्म्मलचन्द्र—विनय, एक प्राण होते हुए भी हमारी .... हमारी दो देह अवश्य हैं।

विनयमोहन—इसीलिये हम प्रेम का आनन्द भोग सकते हैं।

निर्म्मलचन्द्र—और लोलुपता का दुःख भी।

विनयमोहन—जो पद हमें लोलुपता के नज़दीक ले जा सकता है.........

निर्म्मलचन्द्र—जो हम में एक दूसरे से स्पर्द्धा, और स्पर्द्धा ही नहीं, ईर्षा की उत्पत्ति कर सकता है।

विनयमोहन—जो हमसे एक दूसरे के सामने झूठ बुलवा सकता है.........

निर्म्मलचन्द्र—जो हमें एक दूसरे के लिये क्रोध पैदा करा सकता है.........

विनयमोहन—जो हम से एक दूसरे के लिये अपशब्द बुलवा सकता है.........

निर्म्मलचन्द्र—जो हमें एक दूसरे के दोष दिखाकर एक दूसरे के लिये यह कहला सकता है कि....

विनयमोहन—कि तुमसे प्रेसीडेन्टी एक दिन न चलेगी....

निर्म्मलचन्द्र—एक क्षण न चलेगी.........

विनयमोहन—निर्म्मल, हमने एक दूसरे का उसके गुणों की अपेक्षा उसके दोषों के सबब अधिक प्यार किया है........

निर्म्मलचन्द्र—और...और वे ही दोष, जिस पर लोलुपता के कारण हमें एक दूसरे के प्रति घृणा की ओर अग्रसर कर सकते हैं, उस पद को.........

विनयमोहन } —(एक साथ) हम दोनों मंजूर नहीं कर
निर्म्मलचन्द्र } सकते।

[दोनों फिर चुप हो जाते हैं।]

विनयमोहन—लिखो पार्टी को, दूसरी चिट्ठी।

निर्म्मलचन्द्र—संयुक्त; फ़ौरन।

विनयमोहन—हम दोनों साधारण नागरिक रह कर भी अपना, समाज, देश और विश्व का उत्कर्ष कर सकते हैं।

निर्म्मलचन्द्र—और अपने प्रेम के द्वारा विश्व से प्रेम करना सीख उसकी सेवा कर सकते हैं।

विनयमोहन—(गद गद स्वर से निर्म्मलचन्द्र की ओर एक-टक देखते हुए) निर्म्मल!

निर्म्मलचन्द्र—(उसी तरह विनयमोहन को देखते हुए उसी स्वर से) विनय!

यवनिका-पतन

समाप्त
